चार्टर वक्ष्यां

हिन्दी- गुजराती की प्रगतिविद्वत्री कविता की

- कुछा वर्ण वास्तविकता निश्चयः
हिन्दी-गुजराती की प्रगतिवादी कविता की तुलना क्रम-संबंधात्मक निश्चय।

शान्त के वह पद माने जाते हैं- वस्तु पदा और विल पदा। इन्हें ही सान-पदा और क्षा पदा भी क्षा जाता है। वस्तु पदा के बन्तात शान्त के विश्वासस्वूक्‍त का समावेश होता है और विलस पदा के बन्तात शान्ता, कांशार, कष्ट, विश्वास का समावेश होता है। मान्यता कविता का आन्तरिक पदा होता है और क्षापदा उसका विहीन। दोनों दृष्टियों से ही किनी के काव्य का मूल्यांकन किया जा सकता है।

किनी की मान्यता के किनी की युग के काव्य का मूल्यांकन धीरे वस्तु पदा और विल पदा के बावजूद पर ही किया जा सकता है। ज्ञ मान्यता के काव्य की तुलना जब दूर रहे हैं की जाती है उस समय की ये दो पदा दृष्टि में रहे जा सकते हैं।

हमने हिन्दी के गुजराती के प्रगतिवादी कवियों और उनकी काव्य-प्रबुद्धियों का विवेचन कल-कल स्वरूप बच्चों में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत क्रम के विल पदा पर की विचार किया गया है। परंतु यहाँ पर दोनों मान्यताओं के प्रगतिवादी काव्य के विश्वासस्वूक्त विल पदा का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करना हमारा हेदयत है। ज्ञेय दोनों मान्यताओं के प्रगतिवादी काव्य में का शान्त-शिक्षावर्ण है। ज्ञेय व्यक्त निकोलैंक की कृपा कर और दूर रहे की अनिवार्य का प्रस्तुत करना नहीं है।

किनी की सत्ता का यह ज्ञेय होना की नहीं चाहिए। कारण इसके दोनों मान्यताओं के काव्य में किनी अंत की कृपा कर और दूर रहे की अनिवार्य का निष्कासन देना चाहिए ही है। कारण प्रश्न मान्यता के काव्य-स्वरूप का परिवर्तित, वास्तविक, शाय-मूर्ति, शेखर, वन्यपुर्ण हेदयत कल कल होती है।

हमने जिस युग ने बच्चों का विवेचन बनाया है वह युग दोनों ही मान्यताओं में मांद्रीवाद और मान्यतावाद है जिस प्रभाव मिला है। दोनों की शाहिदिक प्रबुद्धियाँ खुदी रही हैं। परिवर्तितत्व और प्रश्न प्रेमा ज्ञान खुदे रहे हैं।

ज्ञान शाहिदिक-स्वरूप का ज्ञेय में खुदते ही रहा है। हाँ बहुत हम वस्तु पदा और विल पदा की दृष्टि से दोनों मान्यताओं का यहाँ विवेचन करें।

वस्तु-पदा:

शान्त जिन मान्यताओं के काव्य प्रकट करता है वह है क्षापदा और विले प्रस्तुत (प्रकट) करता है वह है वस्तु पदा। यहाँ पर वस्तुपदा की दृष्टि से दोनों
मान्यताक अग्रिमािदश कान्य का मूलाकान्त बृहत्। इन शब्दों ने जिस विषय
वस्तु को देखा कान्य का निमान्त किया है उसी के बादाम पर व्यवस्था किया जायेगा।

स्थिति का विरोध:

प्रगतिवादी कान्य की सब के बड़ी विशेषता यह रही है कि उसके कान्य चर
या जीवन के दौरान में किसी प्रकार की परीक्षामुक्त या न्याय न का कक्षानुकरण नहीं
किया है। अतः राजनीतिक भर्ती तथा कान्य की मान्यता के प्राथमिकता की परंपरा ग्रसित
सात्त्विक में सम्बन्धित है, जो हिंदी और गुरुराधीन-डोनों के प्रगतिवादी किशोरी ने
स्वीकार नहीं किया है। इस कारण शास्त्रीय रूप से उसका श्रेष्ठ पूर्वावथ नहीं था। बल्कि उसका जीवन या समाज या शास्त्र विषय में उद्यन गत्यावरोध को नियन्त्रण कराया कराया केही
और समाज का नहीं प्रत्यक्ष डेना, गतिविधि कराया। इसलिए इस तरह का केही
विरोध किया जो समाज के निमान्त में सहायक नहीं थी और उन सबी भीजा के
स्वीकार किया जो समाज की पश्चिमीताई में सहायक थी।

शास्त्रीय के दौरान प्रगतिशास्त्र से यह मान्यता बड़ी थी रही है कि उप-
मोक्षम वर्ण या उच्च कुटुंब प्रागतों को देखा ही कान्य का निमान्त किया का
संबन्ध है। क्या, प्रभु-मार्कबर प्रकृति ही कान्य के प्रधान विषय नहीं
है। क्या किसी का युग या ुरमा की प्रथम रही वर्तन पर मान्यतारूप प्रागतों और प्रकृति की।
गुरूराधीन-परिवार युग की शक्तिता का तो युग विषय ही प्रामाण्य और प्रकृति था。
इसका जवाब शिक्षा प्रगतिवादी युग में हुआ। कान्य के नाट्य-नायिका के बी में
किसानें, फूदूरों, श्रीमानों वशु अपील मत पर अनावश्यक अभाव गया। शास्त्रीय के
स्वातन्त्र या यथार्थ न्यूनता का होना गया। इसका मान न की जिसे हिंदी के
हाया रूप के प्रकृति वर्षा निराकार में मुंग स्वीकार खत्म करता आराम कर दी। जीवन चक्रवात की दुर्गात (2)
देने वाले पंडि के नीचे रूढ़ (2) दिशा से देखा गया है। "युगान्त" का निमान्त कर
प्रकृति जीवन के वর्ण का यथार्थ करता है तो "युगान्त" का निमान्त कर रुप के
स्वीकार स्वरूप का बुद्धियत हो जीवन के

1 -2 मौं और "धो बाज़" शक्तिता
अनते हैं। निराकर की दुखित मिठूक बैर फस्तय तोड़ती हुई नारी०(१) तक पहुंच जाती है।

कृत्षिणानाथ बबाबाद दीन दु:खी बुन्ना०(२) को देखने में रन जाते हैं तो नामाजुन की दुखित मलाकार के लो-खुदी होटर०(३) को देखने में तलोन होताहों है।

फिर साथियों के सुनने ने कुदे के पबंदे के आश्चर्य से आपको को देखा जिसके पुले से रोटी कीन दिये के दिए चालू तैयार है,४) तो डा० रामचंद्रच अग्रने ने उस त्रस्ता को देखा जिसकी चात्र बोत्ल की हो दिने (वेलन) है।५)

करते ही गुरुराधी के श्रवण व दुनिया भें ‘कोयामणि नी हस्ती वाणीं बने ब्रह्म गरीबों ना गीता०' में बाजी(कोटेश्वरी) के इक गीतों में धुमक झार(पुर्ता) मानते हुए गरीब को देखा है तो श्रवण उपासना मानी पूजा जनो नी कछारीने की वात करने लगते हैं। शीघ्रायतः युवते के बस्के बनी हुई लखना०(६) को देखा हुआ को म्रुते हैं तो 'कामरी' पूटा पर चात्र के दिए मुरते हुए बालकों को देख लार श्रवणा को स्वीत करने लगते हैं०(७) यह प्रदुःख अनन्त सती प्रगतिवारी श्रवणा में विलासरैत है।

यथा के भीतर में प्रभूत जमा को हन श्रवणा ने स्वीकार कीं जिमा है। यथा वैद्य अम्बिशां के नाम पर गरीबों के होते हुए लोगों को देखना हन श्रवणा ने यथा, हीतर तह अम्बिशां के भीतर हरं हैं जिमा। इनका यथा न तो हिन्दूमध्य था न तो मुस्लिम था, न तो धिक सार वैद्य न तो हेवाह वैद्य था । इनका मन न तो मंदिर में था न तो मस्किन में बैर न तो गिरिजा धर बैर गुरुभार था। इनका के विशय मध्य था- मानतवैर बैर इनका हीतर बना मुनि । इस यथा के श्रवणा ने की श्रवणा की श्रवणा मानते हैं वैद्य और मानतवैर का पातल करना जीना यथा यथा ।

---

१  'मिठूक' और 'वह दोखती पत्तरे' जिमा।
२  युग की मंगा: पृ० ३६००
३  'सरलर भंडार मानिएः' पृ० ६६००
४  'ग्रहू बुनन: पृ० ६४००
५  'सुम तर' पृ० ६१००
६  'श्रवणा' पृ० २२५० ्यूग वनना: पृ० ६२
यही कारण है कि हन्नोने मन्दिर, मस्जिद बोर पूर्व का वाद का विरोध किया।
हन्नोने एक तरफ मनुष्य के बच्चों को एक पूंछ दुख के लिए विकस्ते हुए देखा बोर
दूसरी बोर दुख से स्नान कराई गई पत्थर की मूर्ति को देखा। यह उन्हें बड़ा विचित्र अर्था। ऐसे कर्म का हन्नोने सत्ता विरोध किया।

श्री धरणी एक ऐसे कवि है जिन्होंने बड़ा कहा, इश्वर बोर पूर्व पर करारा
स्वार्थ निर्दिष्टा पूर्व निर्दिष्टा पूर्व
"चूँकि से देव तथा तपाये ऐसे हैं विवेक बचाने भार-भर-भार
बाहरि पाने पर ही करारा स्वार्थ करती हैं। इश्वर का स्वार्थ पूर्व है वह नहीं है जो मन्दिर के पूर्वरी का नहीं, वर्तमान उस स्वार्थ को है जिसे वर्तमान परिस्थिति से बना
पद परिप्रेक्ष्य किया है। कवि बड़ी निर्दिष्टा पूर्व कहता है:

| ' को रे सुधारी | तोड़ दीवालो
| पाठ्याण कें गमन |
| न मिम दुः सिन्धु वा |
| सुधारी पाशो जा |

बेश साथ कांग के भ्योक्षा
धन्य कमर विचार ;
चित के रात न नींदर देओ ओँ
(न) भेंध तुः घरस्त ?
वरी तो वेनी दुःखा
सुधारी पाशो जा।(कोड्या: ५० ४४)

कवि ' स्त्रेस' के को तो ते देवों के देवालय हस्ताक्षर पापस्य विचार देने
क्रिया है बोर कवि उन्हें तोड़ फोड़ कर फंकें देना चाहता है।

जाए पाठी ताड़ो। तोड़ो, तोड़ो देव ना देरां-
देरा शाना ने देव शाना बे? पापस्य वाद वेसरा।(वर्ण: ५०७५)
जीवन में बेतना का बनाव कवि उमाशंकर बोसी के लिए बस्त्र हो जाता है।
जिन्दगीजी की जगह पर उसे सहीतु मुर्दाधिकी ही नजर बाती है। इस परिस्थिति से
उड़ा हुया कवि रुद्र, रित्वा कीणता को मस्तिष्क कर देना चाहता है। तब उसे मुझे की
दुर्भाग्य ही मरखने लायक है। तमी तो कहता है:-

"में मुझे नहीं दूर सवार रहूँगा।
मैं ने कूद ठीकः ठाकुरांगा भरे विशस्ताँ..."

.... ने होक सगाराल के।

क्योंकि न बात श्री माता बेतना होमाया बैठे। (वर्षात विनः ७८)
हस प्रकार जन्म गुरुराशी के राधी प्रकाशितादी कवियों ने बदूझ के प्रति विरोध प्रस्तुत
किया है।

हिंदी के भी प्रकाशितादी कवियों में जबू कवि के प्रति बहुत बड़ा बांटथोहर है।
कवि के नाम पर बाबू बड़े बड़े दयालार भी बांतानी से किये जाते हैं। मंदिर बाबूर
परिष्कार बाजार बाबू पापाचार के केन्द्र के बुझ है। परस्तु याहाँ कवियों से कवि
की मिथ्या बर्चनी में पिलते हुये मानव को देश कर निर्माण लिहिे युवने का कवि
स्वतः हो उठता है बाबू धार्मिक मूल्यों एवं मान्यताओं पर गहरा प्रकार कहता है।

"हेंस्वर हेंस्वर में बाबू पत्ता करतार
द्रुढ़म्म-द्रुढ़म्म बाबू-मद्य-बाबू-बाबू
बंटा मुनाया का घर
नी बोढ़ कवि की होल, पर उज्ज्वल सुना
पूजन-अर्तक सब व्याय, देवता पत्थर।"

(विशाख बुझुला ही गया: ५०७४)
बुझ हबी कविता का नियम-दुखता माय कवि देवरासाध बाबाद की निमाशिषित
पंक्तियों में देलेठे:

"केसरी की विशाल अवशाय में
स्वर्ण संहारन पर
रक्षी देश मंदिर में पत्थर की दुर्लक्षाएं
हुदू हो गर्वती हैं, हेंस्वर से मांगी हैं वरदान
केवल पाषाणा हो कॉज की मेहरी मी चन्तान।
(सुन की गाना: पु २२)

जहाँ पर हमारे की ने मन्दिर में किये गए वहन पुजनकर व्यक्त माना है और हैंकर को मात्र पत्थर माना है वहां पर केदार ने गम्भीर की कोश हों पत्थर की धूर्ति, ज़्यादा धूर्ति को जन्म देकर वर्ष बोर हैंकर पर करारा व्यंग्य चिता है।

मंदिरों बॉर धर्म की प्रमुखावारता को देखकर हे दिनकर का कवि हैं दुःखा कर कथावाद का उपदेश देने लगा है। कारण वह बाता है कि जीवन के भगवानों का नेता साकार नहीं कर सकता। सदा भुजा की (बेट की) घननों के साकार मना सकता।

उठ मंदिर के दाखल रहे हैं
बोर लगा सेतूं में बनाए,
नेता नहीं, ते भेला भुजा करती है,
सत्य सदा जीवन के समान। (नीम के पढ़े: दिनकर: पु २५-२६)

इस पूर्वाः यह ज्ञात होता है कि हिन्दी बॉर गुरुराती-डोनों की मात्राओं के प्रमुख-वादी कवियों ने भर्ता त्या काव्यावाद में गंगे वाली पत्थरवाद कवियों का उठकर विरोध चिता है। परन्तु इन्हें विरोध की वास्तविकता में फूल फूलियों है।

गुरुराती कवियों ने जो वर्षी बॉर धौकर का विरोध चिता है वहां पर या तो तोड़ पहेल ती की मात्रा दिलाई देती है या भुजा की बूढ़ा में हुझुर्पा मान को जन्म देने की मात्रा है। स्त्रियां में कामतारी मात्रा के दर्शन होते हैं। परन्तु हिन्दी के कवियों में हा पूर्वाः यह बात नहीं थी। इस कवियों ने विरोध तो व्यंग्य चिता है परन्तु बसे भारत मात्रौ है से। मंदिरों, पुर्वियों को तोड़ने की बात न करके बतल उसकी जगह की बॉर लेज़ा करके वायुवादक पंड़ित से अपने विरोध को प्रस्तुत चिता है। इतना की नहीं बतले। दिनकर। जैसे कवियों ने मंदिर के बार से उठकर, सेतूं में काम करके अपने सन्तों को साकार करते हुए उसके पूर्व में चिता है। परन्तु इनका दर्श्य ज्ञान एक ही है। बॉर वह है दरिंदूरारणा का खेत। मुख्य की खेत ही हैंकर की सच्ची खेत हैं क्योंकि मानवता का पालन करता है वास्तविक वर्ष का पालन है।
मानक देशाय की अभिव्यक्ति:

प्रणतिवाद जिन व्याप्तियों में बहुत हुआ है उसे गुलामी लगाते का एक माटे अथवा कालाबार्खर को ही है। कालाबार्खर ने जब निज सिद्धांत की स्थापना की उसके पूरे में सामाजिक विश्वासों को सूक्ष्म करते तो मानना ही था। उसके समान में दो प्रकार के व्याप्ति जो ढेख-बिखर और गरीब हैं। उसी की शोकाल और शोकित की संख्या बढ़ गई। शासक कठिन परिस्थिि करता है परंतु रोटी के लिए मुहताज बना है और मिल मालिक उनकी जंक की मांसित शोकित कर देखोरसाराम की जिन्दगी किता रहे हैं। जासूर क्योंकि क्या विश्वास के का परिशोध है कि एक व्याप्ति दूसरे के परिशोध पर दूसरे की जिन्दगी किते। हमी को लेकर बाबुंदे ने बांधके में क्षति की जिनके परिशोध स्वरूप जारी शारीर का बना बुख और अवस्थाओं की सरकार का निर्माण हुआ।

इस मानना का भारत में भी प्रचार और निर्माण हुआ।

प्रणतिवाद के प्रमुख इकार के साथ की यह स्थिति निवृत्त गया कि वन साहित्य का उद्देश्य क्रमता लोक में विश्वास करते नहीं बल्कि स्थार्थ बनता क्षति का चिह्न करते दूसरे समाज की विश्वास का समाप्त करता है। साहित्य दूसरे मानव समुदाय की बांध-बांधकर की प्रसुनिक गण का एक बुढ़ा मात्र नहीं है। हिन्दी-गूर्जात के दोनों की मानवता के शासक देनों की अभिव्यक्तियों ने इसे अग्रण सुदृढ़ स्वर बनाया।

केवल साधु गुप्तने बाणी की राह में धारावाहिक हुए दीन दीन हिथम १ को देखा है, भाषा की साथ उन्नत अभिनयवाद को पी बड़ी सक्षमता के साथ देखा है।

शहरी जीवन में जिली बड़ी विश्वास कि हसका ज्वलन प्रभुगण है इनकी अभिनयवाद श्रीर्म किता।

बहु अभिव्यक्तियाँ दशनीय हैं।

बाह उपलब्ध कर
उलक आ की गीती की
कार रात्रि के नागे नाचता है फना फाड़े
यसी अभिनयवाद है। (सुन की गणा: फू ३३)

१ सुन की गणा: फू ३६
कवि नागार्जुन के काव्य में संपूर्ण देश का इलाक़े-दर्शन शाकाहर हो उठा है।

विभाग जीवन की जो बच्ची अभिव्यक्ति इसके काव्य में है- उससे शात होता है कि
कवि ने त्याँ उस जीवन को भोगा है। अनंतर ने तवं गरीबों को भू-भार समकाल
है।

... कि यूं पर सीधे पड़ी है गरीबी की मार
सुविधा-साधन लोगों ने सदा समकाल भू-भार।

(सूत्रार्थ: ७३)

सेवे कि कवि ने नगद मलाहों को पानी में कौशल पुकारी सोचते हुए देखा है १
तो नवजात बच्चों को पूर्व से यथार्थ हों बिंगाट पानी हुए देखा है। २ गृहीतारी
व्यक्ता के प्रतीक व्यक्त हैं उत्पन्न परिस्थिति का यह चित्र मी दर्शनीय है:-

"मकान नहीं लाही दूसरा नहीं लाही है...
लाही है हाथ, लाही है पेट,
लाही है घाटी, लाही है पेड़।" ३

ज़रा जीवांतों,सागड़ों बीर बाणों का भी चित्र देखो:-

"जीवांत हैं,सागड़ नाम,बाण नहीं,व्यापारी हैं,
बन्दर बन्दर विक्षेत्र स्थान, बाहर लदरवारी हैं।" ४

कवि दुस्रे के मारे देने करता दूसरा शान्ति की कविता भी केसे लिखे? कारण:-

"सभी दूसरे हैं दो प्रतिक नहीं सुनी तो
केसे दिशा शान्ति पर कविता।" ५

---

१ सत्यपुरोवाठी: फू ६६
२ व्यापारी पथराघ बालें: फू ६८
३ नागार्जुन: हस्त: जनवर १५५६
४ श्री जुन ६५५:जनक २ फू ६६
५ वाष्पीक कविता में विषय बीर सेही: फू ८० दे उद्धरण
कवि निलोचन शास्त्री इस विषय की जीवन के मूलकारण फूंडवाद को ही मिट्टा देना चाहते हैं। कौन करेगा?

बिना फूंडवाद को मिट्टे किसी तरह भी यह जीवन स्वरूप नहीं हो सकता—
शान-विशाल से फिरू जो कोई क्रिया करे क्षण नहीं हो सकता (बचती: फूंक)

कविता माना सिंह का मन व्यक्ति ज्ञान को देख कर उन्हें करने लाता है। जब यहाँ मानव-मानव में समाज का व्यक्ति नहीं है (अल्लाहु अल्लाहु: फूंक)

परन्तु विशाल से समाज को नहीं बना रखा है उसे कार्य समेत करता है। समाज की संघर्ष को इन धार्मिक समाजों में देखते हैं।

किब बहुत नारीला जहां बांदी के धोये दुरुशों में
कर्म पाठना धर्म करे
ममता के दुरुश दुरुशों में

इस धोर पड़ी लाता कदेश
महान कला मानव की पाति
फुटपाटों की चटानों पर
जो काट सी बनी राते (अल्लाहु अल्लाहु: फूंक)

सुमन का कवि उच्च नीच के मेटमाव को समाप्त करना चाहता है क्यों?

पद्मासागर तुंगा दाता में
उच्छ नीच के सब बंधकार (चीन के गान: फूंक)
इस विषय की कहानी का या उच्छ-नीच के मेट माव को मिट्टा देना ही कवि का उद्देश्य नहीं है बल्कि इसे बोध है—

चाहता हूँ आज़ाद कर देना विषय की कहानी
तो हुल्ला सब को जगत में वस्त्र मोजन बन्ना पानी है।
(विंगन कोटा की गान: फूंक)
ढाँ रामनिष्ठासमूह के कायम में विभाग जीवन का चिह्न बड़ी वात्स्य्यता ते साथ हुआ है। कवि की देविनी गायन के हुस देवने के विभाग में विभेदा रही है। विस्तार में करके जोते बौद्ध को हस्ताक्षर के सम्म फलपूरिया मिली मात्र दीखा। तो उन्हें कार्य परिश्रम का राम निष्ठा उन्हें जो पिण्डोवासी जीवन से है।

ग्रामीण जनता की अथवा और कर्मचारी कर्मचारी उन्हें दुःखाना जाता रहा है। परन्तु उस क्षमाविवाहित सम्म और सुविधाशील शहरी जनता का मी सम द्वितीय है:

"संस्कृत,
हिडियाँ के राखील गाँवहरीन संस्कृत,
.... परस्त्र देश के युवक है।
कार्य है जीवन कार्य है विरोध कार्या" ।
(सम संरचना: पृ. २६)

विभाग का यथाभाषा विक्रम तो कवि रामायण की कविताओं में देखने को मिलता है। पूर्ववार्षिक सम्यक संस्कृति की आवश्यना करते हुए कवि कहता है:

"मैं वाज सम्यक के पुलिये वन दीवारों के पुलु रहा।
यह का सूहर की बना दिया
हरिजन के बच्चों को तुमने "(राह के दीर्घ: पृ. ४७)

कहना ही नहीं मानना की कहते करने वालों और कामना के जन्म देने वालों पर कवि वांछित करता है:-

"ये मानन के सुनी कैमरेतृभ
ये तुम के बांधम चरण निघ
कामना का का के महाकवि
मानना के कामना दंश"(पिपले पत्रक: पृ. ४)
वह प्रकार हिन्दी के सभी प्रमाणादि कवियों ने युगन्धर विषमता को विमल स्मृति में विस्तार किया है। इन कवियों का वाणीश वर्त्तमान पर गरीबों की हंगामों
के लेख में प्रचलित हुआ है ते कहाँ पर पूर्वीपितामह और समस्त के प्रति धीर धृता
के बाण पर। अर्थ का गूढ़काल गुजराती के लेख में होते हुए देखकर कवि राजेन्द्र राघव
प्रश्न कर बैठते हैं:-

"अर्थ का मोह गुजराती ही है
पूर्वी के बल पर धार्मिक
चल न रही ठोकर बनती है
बनी चमक ही शास्त्र में खता।" (भाषाकृति: पृ ३०१)

हठता कही नहीं कामना जीवन का पद्धकर कवि को इस देश के हितिहास पर भी
शिक्षा होते दास्ती है:-

"भीमियों पर चक्कर रह रहा
जो पूर्वी निर्यात करती है
या हितिहास बढ़ा है या फिर
यह भी जो जनता पिछड़ी है।" (भाषा कृति: पृ ३०६)

युगराती में भी गांधीजी के शिक्षायें ने गांधीजी के अर्थशास्त्र व बाणकथा के प्रमाणीत
होकर जीवन की आख्यायिक विषमता के प्रति प्रोत विश्व व्यक्त की है। फारसः
गांधी मात्र गुजराती का हिस्सा ही नहीं बल्कि पूरे देश के खास युग पूर्वांचल के जिन्होंने
"दविद नारायण" की कविता का 'लक इतनी नहीं छिया बल्कि पाणि भी फिया। उन्होंने
गरीब धेर देर नवनिर्माण की दुबारा को प्रदान और माननी दे प्रति होकर शिक्षा
की बचत में रामेहुड़ उनके जीवन को गृहानुसार का प्रस्तार फिया।

"कवि ' रेसा गांधीयुग के सभी कवियों में ये है। यहाँ ने विषम जीवन की
माफ़ी बढ़ी ही क्षत्रिय सम से प्रस्तुत की है। मूलतः फ्यासा गरीब दास परारे बला
जाता है क्योंकि ज्ञान युग को लें:-

कहें को पार हुआ मीला ही, यो,
आधार के तांत्रिक पाणिता ना।
परमु उष्ण उष्ण किष्का है:-"
कृपया कवि की त्यां सुनतो वचनों के
बोले। वचनों देख पवित्र ग्रीष्मको। (श्रेय ना काव्यो: पु. 461)

"बुधवार" ने कवि कृति "कृष्णामङ्गक नी कथवै दाचरणी अन गरिरियो न गीतो" में विषय जीवन अपनी अग्राही सहीतता और निर्विशेषता के साथ विकसित किया है।
कवि ने अपने "वाली" हार के विषय में ग्रीष्मकों में गद्दी हुए गरिरियों को देखा है । वही काव्य ही काव्य कस्मिन्तिकां के शाल में हेतियाँ के देश के परिपूर्ण जीवन ज्ञान यह अनेक हमारे के लिए हुए ग्रामीण जनता को भी देखा है। किला विषय जीवन है:-

"कस्मात्वात् न चेतर नाः माधिः,
कृत्यमात्र नौक स च भक्ती माधिः बोधो रिद्धि चतुर्वेदी,
भासु ब्रह्माण्डां माधिः माधिः,
राम नां राज मात्या पाणिक्ष ने माधिः चिक्यो हार नाः बाल्यः"

(श्यानि काव्य: पु. 77)

ग्रीष्मकों के प्रति कवि के मन में बहुत सहानुभूति है। वह उन्हें निराला, निरूपक दौर के लिए देखकर प्रविष्ट हो उठता है और उनके प्रति आशा को पहचानने के लिए कवि कहता है:-

"भी गरिरियों के द्वारा कुछ पिशाची शोभाओऽ,
उन को वो पुष्पवत घाड़ियोऽ।" (श्यानि काव्य: पु. 70)

कवि की "भक्ति" कविता में विषय जीवन बारे भी साक्षात हो उठता है। उन भक्तियों और श्यानिकों का विश्वास हम नारे मिश्रित में देखते हैं:-

"छेतातिः पहाड़े बुधवारीः रे
रंग बुधवारीः रे, ज्यारे नीमा बेहत प्राण;
मंदिर पहाड़े बुधवारीः रे,
रंग बुधवारीः रे, ज्यारे नीमा हैमा नी जान"

(श्यानि काव्य: पु. 33)

1 कव्वल कव्य: पु. 454
वही है 'कुमा पठाओ' व्रती कविता में की कवि सुन्दरन ने कस्म में वीण का लाभ विन्यास है।

उपायकर जोशी क्वाँ क्वाँ प्रसंगितारी कवि है। मार्गवार है परमाणु कवि ने बारी दौरे गरी ची के विषय वीण का बच्चा हरणार्जन सम प्रस्तुत किया है:-

'पानी हृदय ने यह के पीछे है दीन नानी,
शास्त्रीय नह फैलाया पीछे मालिता बतह।
वाहे को के क्रमिण यंगाना' (विलिस्तारितः पृ ० २०)

'हळोड़ा नू गीता' श्रीरंजन कविता में कवि ने क्या सक्षर के जोपंगट्य में बनी पूरी हरियुक्त का परिप्रेक्ष्य पिया है। यह क्या क्षर है किंतु कहना तुर्की को हमारा बनाकर रात दिन का विना विचार किये ही अने पेट के पालाट को मरने के लिये कोतर पेट का हर पूरा हावळा है। 'व' 'वहैरा पु गीता' श्रीरमण कविता में कवि ने भारत फ़सवूर का वेदहरा है जो क्षतिर्दिन परिश्व का कर्म सरिषावाद बन जाता है। वह होचने लगता है:-

'राम की?
का रोटी मां?
कोडी मांख बाटा बांवां?
(गंगोत्री: पृ ० २४)

विनोग्राम के बांट वर्ण वीण जाने के बांबू में पेट की कोटी क्षत ही परी।

'बांट बांट वर्ण ली कोटी रे ठाली
पेट नी कोटी रे मरणी रे ली (गंगोत्री: पृ ० ७२)

परन्तु इस विषय वीण के कवि निराला नहीं होता है। जै पूरी बच्चा है कि खस दिन मूले हुआं की कटारिण कास्बा जैनी। वार विषयका का वन होगा।

1 कविता वाणिज्य: पृ ० ४१
2 गंगोत्री: पृ ० ४५-५०
3 कटारिण कविता: गंगोत्री: पृ ० २०
बारिश विषमता ने जै इन्सानित का विवाद की निकाल किया है।

समस्याओं और पूर्णिमा की शोभा की बचकी में शिष्टता हुआ गरीब
शायद यह इन्सान नींद नहीं रह गया है। परन्तु उन मात्राओं में श्रीमाणी वर्ग नरीलोक की इन्सान बनाना चाहते हैं।

मूला के सी में पेना होने ने,
मांसने रोटी, पीता खाना,
लुकड़ा हाँफा छाज वारी,
बीमार बेन बीने हस्तान। (कौशिक: सौ १५६)

"स्त्रेसरियां" ने बताे बाढ़-जंग की बाढ़ मूर्ति कविता में भी श्रीराम
और गरीब वारी के आपमान वीर ना बड़ा ही व्यक्ति मित्र प्रस्तुत किया है,
जिसकी नृत्य पंक्तियों यहाँ जोड़ा है:-

श्रीराम ना बाढ़ जोड़ी, करेंदू नुं पान,
तोरों रोटियों रेताैं मुखाम तोड़के तारा चाह।

--- --- ---
पूर्ण हिंसों मूला बाढ़ ने होक छाये बाह,
पीता के बात ना गारा बेटा ने बोस्ने न करे पाठ।

--- --- ---
सुबह प्रातः हर ना माता जारी करती बाढ़ हूँ छाह,
कमांगरी ना पाता चूँके तारे दुरुस्त साद।

(बाधः सौ २७)

शोभा की बचकी में पिनिटा हुआ गरीब वर्ग, दाताने के मारे ही यह हुआ निक्षिप्त नरीलोक बनाता है। न तो वह दंग पाता है और न तो वर्ग के वार्षिक ही निक्षिप पाते हैं। किसी बड़ी ही स्थानीय नित्रें भ्रान्ति ने "युगविनय" की "कौशिक-वादी" कविता में प्रस्तुत किया है।

"च्याट बेने हसानो ना, लंबो वे सकें गईं,
न की बेने राधिया वार्षिक, राहो वे सकें गईं।" युगविनय-सौ ६५

मनुष्य लाहू केवली की ही ये पंक्तियाँ दस्तीय हैं:-

"मही कही ने मिल लो बुंदी?
कही कही ने पिन मेरे बैठें।"
बोझ बाबू पाठिया लोग लोग ना,
पासेँ तू पीट तू पूरा गरो। (वाराणसी: पूर्व)

क्षेत्र यह विषय जीवन है? अब तरफ़ अब व्यक्ति परेंट करने के लिए मुहावरे है तो दूसरी तरफ़ उन्होंने कारण की विचारी बिनाए लोग हैं। अगा ताक पुरात विषय विचार विशेषता के प्रति हन कवियों में शुष्का का मान है । वे यहे फिरोज़ नीचा की स्थायि करता बाहर है। वे संगी के लिए बनन-बस्तन के निदारण की सुविधा सुख करता बाहर है। परन्तु दुर्गम है कि कोनाहिर प्रकाश का नहीं भिक्षा पाती है। परन्तु हाल है कि हन होगा ने शाहिजी को माता के लिए माता उसमें कृप्या माता बालादाबारी धरनाओं का वार्षिक प्रभाव है।

परन्तु यह भी सत्य है कि हन कवियों में बुद्धि की घात्मा नहीं है। कारण बहुत वे प्रगतिशील विषय के हैं जो खातार में जूठ की जिन्तगी मानते हुए गये खातार में निदारण की बीत उन्मुख हुए है तथा जिन्होंने वही गरीबी देखी ही नहीं है। फिर भी शुष्का की बावजूद के दो बाँधु बाबा देना भी कम नहीं है।

जीवन बारे क्षेत्र के प्रति अन्योगितावादी दृष्टि:

शाहिजी में यह बर्म्हा विश्वासय आलोचना रहा है कि शाहिजी फिक्सिजे चित्र है? क्षेत्र की जीवन में क्या उपयोगिता है? क्षेत्र तात्त्विक नातीय रूप के लिए है या उसकी बारे में तात्त्विक क्या उपयोगिता है। इन कवियों के बारे में किसी ने ने ' क्षेत्र-क्षेत्र क्षेत्र के लिए है। यह क्षेत्रार्थ की मनोवृत्ति की भविष्यवाणी है, निदारण वर्णन नहीं।' एक फिल कुछ उचित प्रतीत नहीं बताते हैं। कारण हर बीत की जीवन में कुछ न कुछ तो उपयोगिता होती है।

क्षेत्र के समाचार में दूसरे वर्गाचार में विस्तार के वापस का शाय वाताया की गई है। यहाँ पर प्रगतिशील कवियों की क्षेत्र समता दुर्लभ का उल्लेख ही करन होगा। क्षेत्र के समाचार में अब तो नहीं है। क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र, वात्सानुभूति के लिए, क्षेत्र वान्नक के लिए, क्षेत्र विनोद के लिए तथा क्षेत्र सुनव की क्षेत्र क्षेत्र वात्सानुभूति का पूर्णता के लिए- हल्द्वारो वान्नन के नहीं हैं। परन्तु प्रगतिशील कवियों ने इसमें वे फिर छोटे करे करे करे करे। इनके क्षेत्र का जैसा वान्नन या विनोद करे रहा है। माता जीवन के प्रति हन्त अचान क्षेत्र बढ़ा है, लक्ष्यित
क्षण को हमारे माता जीवन की अपरंपिता में स्वीकार किया है।

"क्षण का अवसर में हृदय जीवन में पनापूर्ण करने के लिए अभावित रहता है। उसका पत्थर स्वतंत्र पानिक निर्मिति है, विरोध अत्यधिक है। जब सर्वनाश बीजन के लिए पुनर्जन्म से सर्वनाश निर्मिति नहीं होती है। अतः जीवन के पत्थर के लिए करने की सहज दृष्टि क्षणार्थ के मन में उदय होती है। किंतु वह जीवन के पत्थर नहीं, जीवन के सुखदुःख के दोनों पहाड़ की संयुक्ति करने की कह्रीता है। क्षणार्थ क्षण की स्वीकार से जीवन को प्राप्त बनाना है जैसे क्षण-क्षण में उसके कामों की पूर्ति होती है।" ¹

¹ प्रकटिकोश एवं चरित्रकार ने दर्दनत जनवर्ग अंगुराक्ष मात्र स्वतंत्रों की जीवन के प्रशुष्टक के कारण न साक्षर सामाजिक सामाजिक कार्यकर्ता अंगुराक्ष के नाम पर जीवन की संरचना प्रस्तुत की। उनकी जीवन की सामाजिक दायित्व का संस्करण कार्यकर्ता मात्र सामाजिक शैली का विशेष ज्ञान बढ़ाया है। ²

नरेन्द्र सभाने क्षण की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए लिखा है:

"क्षण को बीजन के लिए स्थिर, विरोधी बनाने के लिए क्षेत्र सत्य प्रचार करना होगा। जो सामाजिक व्यवस्था को बदलने में समय है। सामाजिक व्यवस्था बीजन के बनारस सामाजिक पुन: निर्माण के पथ में क्षणार्थ को बनाने वाहिका ³

मात्र का उद्देश्य सामाजिक पुनर्निर्माण ही था।" मात्र के दृष्टिकोण की यही विशेषता है कि वह अति अंगुल-जीवन को सीखने के मुक्ति, इसके संदर्भ में धर्म रुप अंगुल सामाजिक समुद्र अंगुल विशेष बनाने के लिए इसके धर्म अंगुल वार्तक-सामाजिक सम्मान, नैतिक मामलों, लोकार्पण गूढ़ों को बदलने का उद्देश्य अंगुल बनाने का संदर्भ है।" ⁴

¹ वाचविक हिंदीय कविता में धर्मविवाह: छठो धूलक स्वर्णी: १२०८८।
² वाचविक हिंदीय कविता के अवर किरान: छठो धूलक गुप्त पृथक ४५४
³ हंस, गार्व ५० यू. ५३३-३३।
⁴ साहित्यव्रूहित्य: नितापधिक वीणा: पृ ४६३।
प्राक्तिकाच्या कवियां का जीवन बारे कथा की उपयोगिता की अवधारणा कर वाणि का व्याख्याता की परिपथ के अन्तर्गत उसी विश्वास की ही वाणिज्यी पाया। कथित कामाक्षी चक्कियां की भविष्यता तार श्रीवि के वामाक्षी विश्वास की स्वर्ण वर्णना है। कथित कामाक्षी चक्कियां की भविष्यता पर विश्लेषण की गया है, बल्कि पर नहीं।

वीण का अनुष्ठान नित्य है। वही स्थान में गांव देना इम्प्रेसोर का शाम करता है। परन्तु सामान्य वाणि की निर्देश की श्रीवण की चक्की में पितृत हुए बेवाकूर्त बताया रही थी वही मुक्ति हेतु वह युग के चक्कियां का एकनिष्ठ की। वीण का उपयोगिता का उकराने सक्षम । एक मनुष्य का बर्बर है दुर्गे की एकर कराना। समाज में मान्यता की स्वर्ण बनाना होता ही इक्का देखने था। वीण की सार्थक ही बल्कि है जब उससे सत्तवांत किया जाय। विश्वास प्रारंभ के द्रुष्यभाँग बारे कथन को चेहरा जीने वाला मनुष्य नूतक के लिए क्वित्तास ही बन जाता है।

"साहित्य व्यवस्था समाज की स्वर्णता के लिए किया गया दिशारा-स्त्री अक्षर उपयोग है जो आंक्तिक का समाज में की रुपभूमि मनुष्य-समाज की सार्थकता का प्रावलक होता है।" साहित्य का यथार्थता मनुष्य के लिए विश्वास में है और मनुष्य की सार्थकता उसके मानसीपण में है।

कथा, कथा के लिए का विश्वास इन श्रीवण में विश्वास है। इसका मानना है कि कथा, जो कथा के लिए नाम तीव्रे जीवन और नाम की वास्तविकता की विनिमय है। बुधनी की की यह प्रवतिक हस श्रा प्रमाण है:–

* कथा, कथा के लिए अक्षर जीवन श्रा*(विश्वास बहुत ही श्रा)

पूरा 45

विवास का वैदित्त युग का दशाक का विवास वर्गि हो प्रत्यक्त है तब यह युगनी तार को ही कहाँ राग के अक्षर बनता है:–

* वाण युग की वाण कहाँ राग में पर

दीर्घ युगगा रहा है। विश्वास बहुत ही श्रा: पूरा 8)

----------------------------------------
1 साहित्य श्रृङ्खल: नाट-2 केंद्र, दुर्गा श्रा: पूरा 66
2 समाज और साहित्य: रामेश्वर झुक केंद्र: बाणा: पूरा 5
क्रिया की रामनी मात्र राग ही नहीं बल्कि उसकी बाहेर विषय की व्यथा को टूटोर रही है।

"क्रिया की बाहर विषय के उपर
की व्यथा टूटोर रही है।" (वही पृ. ५० ०६४)

सुप्रि की ने कसी क्रिया को खड़े समाज सापेक्षा बनाया था। समाज के दुःख दर्द की सत्यबालिका की क्रिया के जीवन का उद्देश्य ही। दुःख के दर्द की ही क्रिया सत्यता मान लेता है।

"भी दर में जो कहिए व्यथा
सत्यता तो उसकी सुन क्रिया।" (रिस्तोख पृ. ०५०२२)

प्रगटिवादी पूर्ववर्ती धार्मिक मात्र वाक्य और क्रियाओं की मात्र-मूल्य पर आधारित था। जैसे मात्र की वाक्यां मात्र-मूल्य पर भावना का काम प्रगटिवादी क्रियाओं में किया। मूल्य की वर्तमान क्रिया का इस कालांतर सब दी परिवर्तित कि क्रिया को मूल्य की क्रिया का साह्य है।

"क्रिया में सम्पूर्णता कि रूपर आ नहीं लग
सत्यता की
मूल की क्रिया का है साह्य।" १

गुजराती प्रगटिवादी क्रियाओं ने नी जीवन बीज के बृत्त क्रिया के प्रति कसी उपयोगिता की दृष्टि को ही व्यक्त त थिया है। धार्मिक शास्त्र उद्देश्य है नहीं नी सामाजिक का निर्देशण ही माना है तो जीवन का उद्देश्य तत्काल परायणता।

"श्रेष्ठ" क्रिया ने जीवन की उपयोगिता का अंगत निम्नलिखित में किया है।

"सिद्धियों वह गोप ने, तू फुक नित्र ने प्रेम ने--
मछे मिलन दीन-दीन पया, कोई क्षमा मां।" (श्रेष्ठ ना काब्रो; पृ. १०४)

---

१ मित्रसन : मूल की क्रिया वाला भुगत: पृ. २
हतना ही अबलक कवि तो यह उपदेश देने लाता है:-

"बसे के माथ्य मेटा दुः, जुझु उपर रहेह दुः, लुलेहारों रहें दुः, बाले माथ्य कजटा दुः" (अष्टाक्षाभ्योः:१६३)
कवि सुन्दरमु सत्यमु-तिब्बतमु-सुन्दरमु की कल्पना करते दिशाए देते हैं:-

सत्य स्थायी, उंदेही ने विव काल, संचार्य घारे गुरे, विदुः वे विविध लांब विचार ने सत्यं सिंधु सुन्दरमु।।
(काव्य मंगला: ३०)
कवि सुन्दरमु जीवन की उपयोगिता बौद्ध सार्थकता को सम्बन्धित है। सार्थक भोग, माया, हर्ष सोंक हत्यारिक कवि को निराश नहीं बनाते। बिल्ल जीवन की रोके विज्ञानों के साथ वह सबके वर्णों में मान्य बनने की कल्पना करते लाता है।

"हूँ मानकी मान्य धारों तो घरुः" (काव्य मंगला: ३७८)
हिन्दी के प्राचीनकाल कविंत पिल्ला मंडलसिंह 'सुन्दर' की माति गुसरातिक कवि
उमाकांकर बोसी का काव्य मानकी जीवन की आशा-निराशा का प्रेक्षा बन बाता है।
वे प्रवा के हृदय को गूढ़ते की कल्पना करते लाते हैं:-

"प्रवा प्रवा ना उर-सफ़दा भाग ताने, घूमी रहूँ उसै एक प्रेक्षा॥" (गंगोत्री: २६)
कवि के काव्य का उद्देश्य मात्र वर्णन नहीं बल्क अपनी वाणी द्वारा सत्यमु घटते हैं।
उनके समक भाषा मुख्य की नहीं है बल्क संपर्कां कारण मात्र हैं:-

"विशेष का विवार नाहीं एक मानकी पढ़ा बे, पढ़ा बे, पढ़ा बे, नलाके बे वनासपति॥" (विस्मितिकथा: २२)
सबीन में कवि ने विचार सुन्दर की सच्चाई को स्वीकार किया है:-

"पढ़ा श्रेष्ठ माधवे बे शुभे ते मन मां रशी"
पहले, पूरा युवती ने, उतारी लगां के पहले।

बलके, कवि बन्दूल सत्य को स्वीकार नहीं करता तब तक उसकी कथा का वास्तविक रूप नहीं निर्देश पाता है। वही साहित्य चित्रण भी होता है जिसमें बन्दूलित की सच्चाई होती है।

पथवान ने कितनी बड़ी बड़ी बातों के साथ यह संसार का निर्माण किया -

'हरे सज्जियों मानव ल्याेरे
केवल मोही काशाओं ने...(पनकत: फ़ू १८०)

परन्तु बाहरी इंतार, कौशा और संरचना ने मनुष्य की ही नहीं कल्पित हैरत की भी
वारी बातों को निरन्यात में परिणाम कर दिया। हरे रंग के गोले, ग्राम, ग्राम, बाया, बाया हिल्याडे के मेड-भाव को मिटाकर एकता को जन्म देने की बात
करता है।

प्राचीन कवि की कथा में और 'परे' के मेड-भाव को मिटाकर समस्ता की
कामना करती है। वे व्यक्ति व्यक्ति में राम का दर्दन करने लगते हैं। यही को
प्राचीन कवि की सब से बड़ी उपलब्धि है कि उन्होंने मनुष्य को ही हैरत बनाने की
बड़ी वाणी सी है। जहां पर 'परे' का मौलिन फिटा भरहीं फू पर
मनुष्य सबे बाहर में मनुष्य बन जाता है।

'कोणा पोता फू? कोणा पराँछ? कोणा शदु? कोणा ग्राम?
भट-भट मं के राम रेगु ल्याेर नता हे क्यों गाता?' (ब्रज: फू १४४)

इस से कवि की व्यापक दृष्टि का संकेत मिलता है। वे अपनी बातचीतित
पैरे के बाहर निरंक्त संपुर्ण जीवन को अपनी कविता का विषय बनाने को। इस
प्रृथ्वी की हृदी से हृदी बीज पर भी हनका ध्यान गया। वह इस सूचने के कवियों
की अपनी विशेषता रही। उन्होंने अपना अति सुना पाया उसी को तो कविता के
माध्यम से व्यक्त किया।

1 कवि ना शबदः सं ५६ गुस्त डलाठः फू २६० से उद्धृत
2 ब्रजः स्नेहार्पित्वः फू २३
जितना जो कहा करनी
सुंदरियों ने बनवियों ने
स्वप्न मरी बौंदियों ने
मैंने वह दिया सभी
कविता को अपनी
जितना जो मिला करी
गन्ने लाख बाज बसे
मैंने मुर्ग पायल से
मैंने वह दिया सभी
कविता को अपनी।

शिवमगांधी " सुमन " ने तो उन शिलिमाओं को खुफारा है जिन्हें हस समाज
से कठा-मुजन के उपकरण नहीं मिले। समाज में कठा-मुजन के उपकरणों की करी
नहीं। यह कवि की दुखिति पर निर्देश है। कवि कहता है:-

" शिली संगों का यह अभाव कहाँ है?
बनार बनार में मेयु-हुराब कहाँ है?"
विकारी जीवन के पुक्त स्वरों में बोझी,
तुम बतने मन की गांठ लानी तो बोझी।

(पर बाहिर नहीं मरी: पृष्ठ ६८)
कवि का संदेश तो यह है कि मुक्त मन होकर जीवन बौर बगल से बहुत खुद पाया जा
सकता है। यह कठा की उपयोगिताकी दुःखिति ही है।

इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि हन ग्रामक्षायी कवियों का उद्देश्य
जीवन में बानन्द की स्थापना करना ही था।
मंदिरों में बहुत है, कोई बानन्द है
हो बानन्द न सब का तो मानता हारत है(विनम्न: बिलोचन शास्त्री)

---------------------------------------------
1 केदारनाथ गुप्ताल: कविता की मूल: प्राणि १ पुस्तक २
सुनने की स्मरण बोर प्रस्तुति को एकत्र देना चाहिए है। यह प्रस्तुति को भी स्मरण बना देना चाहिए हैः-

बत स्मरण बोर बातों को
मिलकर हो जाना है अब। (विस्मय बुझाता ही गया: पूरा २००)

निष्पक्षतः हम भी कहते हैं कि यह सृष्टि के कवियों की दृष्टि का बोर वीजन के प्रति विशेषता जगतक थी। उन्हें वीजन के प्रति विश्वास था, बासा था बोर पंगल की कामना थी। इसीलिए हिन्दी बोर गुजराती के प्रस्तुतिकारी कवियों ने पुकारते ही जीवन बोर कथा की उपयोगिता को स्वीकार किया है। कथा की उपयोगता देखी है जब वह जीवन से नेकदृष्टि स्थापित कर सके। मात्र बाबासाहेब, प्रतिरूपि बोर कल्पना-ठोक में विषय करते वाणी कथा की हस सृष्टि के हिन्दी बोर गुजराती दोनों ही मास्तांचे के कवियों ने स्वीकार नहीं किया।

यथार्थ के प्रति क़द्रवक्तः: व्याख्या से अस्पष्ट की बोर प्रयाणः—

यथार्थ के विभवक्त प्रस्तुत की मुख्य विशेषता रही है। प्रस्तुत के विश्लेषकार्य मन का निर्माण की यथार्थ की बाधार फ़िला पर बुझा है।

हिन्दी साहित्य के प्रस्तुत-पृथ्वी काल का जब हम विश्वासविवेक करते हैं तो यह स्पष्ट बताता है कि बाबासाहेब काल काल-बातक की कायम नहीं थ।

उसमें न तो यथार्थ के प्रति विशेषता रंगी थी बोर न तो पूरी समाज की विभवक्त थ। बनी प्रणाम, प्रतिरूपित बनाय कल्पना की विभवक्त में ही बाबासाहेब कवि को रहस्यमयी कवि रही। वह मात्र के बिभवक्त में ही ये विश्लेषण रूप से जो रहे। बाबासाहेब कवियों ने जीवन को केवल यदि कहीं काल काल जीवन के सम्बन्ध स्थापित करता नहीं था, तो वहाँ पर भी प्रतिरूपित का बहारा यथार्थ है जो स्वीकार मानता की समझ की पर उसी बात है।

कल्पनाविद्वान बोर सृष्टि की मानना का बोर विरोध प्रस्तुतिकारी कवियों

ने किया। पंक्ति जी भी कि बाबासाहेब कवि ने भी साहित्य में यथार्थ की वाजशक्ति

बोर उपयोगता को स्वीकार नहीं मुक्त मात्र है यह कहा:—
ताक रहें हो गया?
मुल्क-नीतिभा गया गया?
बनिमेषा, बचित्तन, काठ-नयन?
निस्पन्न, शुम्य, निर्जन, निसवन?
देसो मू को
जीव -मू को( सुनातीः सुम्ब मृत्यु कविताः पु-16)

जीवन और जगत की यथार्थता से विचित्र न होकर साहित्य की कल्पना की बुद्ध बीजव की लगती है। साहित्य और जीवन का चोटी-दामन का सम्बन्ध है। जहां भी दोनों में विचित्रता हारी, साहित्य,शाहित्य नहीं रह जाता चाहें और बुद्ध की हो।

प्राक्तिवादी कविता का दोष अविद्यापक है। बाह्य,भार्य,मानसिक बाह्यादि केवल वृक्ष के बाह्य की भावनापूर्ण हस युग कीकर्षणा में है। सामाजिक वातावरण के समान व्य-ग्राम-जीवन,साहित्य, धर्म, नागरिक जीवन, शोभित-वर्ग, शोषित-वर्ग, पूर्णतीति एवधु पूर्णास्यों हस्ताक्षर का वर्णन मिलता है।
गरीब-देखारी सांस्कृतिकता के साथ साथ महत्त्वपूर्ण राज्यीय एवं नाटकार की घटनाओं के यथार्थ निम्न भी हस युग कीकर्षणा में मिलता है। मानसिक सन्न भी मन का समग्र चित्र- बाहर-निराहार, बाध्यता, का-परापर, पुंजा हस्ताक्षर का वर्णन बढ़ी कथाकथन के साथ हस युग की भावना में हुआ। हिंदी और गुजराती दोनों के माध्यम के कवियों ने ऐसे चित्रों को प्रेरित कर यहाँ कविता-भावना का परिया दिया है।

प्राक्तिवादी कथा की यथार्थतावादी प्रकृति की सब से बड़ी विचित्रता यह है कि हम्हीं कहीं भी कल्पना और भावादिता को स्वीकार नहीं किया। जो कुड़ भी देखा, सुना, लिखा-भोगा,वान बहु भुआ (भुआ) हो या तिष्क-उत्स को बयां कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया। पूर्व की कविता " ने उसे कहानी का विश्लेष ना दिया-उसके प्राणों को निशिंदा पर में ही समर्पित कर दिया।

1 निचिन्द्र की : पूर्व की कविता: पु-2
इसक्षिप्त सूचियाँ गान में विवरण करने वाली उपश्रेष्ठ कल्पना का पूर्वन पर ही लोगे हैं। आपको इसे बहुत पच्च चिकन करना का पूर्व से पर ही लोगे हैं।

"हरियाण में अवधारण गाया एक पंख जिसके कल्पना का पूर्व बात से हरा रही है।" १

हरियाण की उपद्रविठ के भाषण का भाव भी हरियाण के रौंग रौंग में "हरियाण में एक पंख" का दर्ज होने का एक बात की तुलना के तुलना पर अपना भी भवन प्रसंग करने लगा।

"हरियाण के रौंग रौंग में नरील चहर लुढ़कता
हरियाणा रज की वृद्ध प्रकाश बन महर विनम्र निस्संदेह,
पोछे पड़े, टूटी टहली, किसीं कक्ष-चक्षु
शुद्धा, करक्ष सव हुए मू भर धरा धारी-सुनार।" २

हरियाण के, रौंग-रौंग के अपरण के भवन में पत्ताबनाव का बागमन हुआ तब प्रगतिलयी शायरों ने यथार्थीयों को बताना कर यह बताना हुआ किया:-

"चंचुरी में मरे हैं गान
कर में मरे हैं गान
वारी में मरे हैं गान
कन कन में मरे हैं गान।" (प्रम-चंचुले प्रम-पुनर्) (पृ.०८५)

प्रगतिलयी शायरों के उच्च अनुभव यासों में यह है। पत्ता की ने "पुस्तकें" के द्वारा हरियाण के वर्तनी उपश्रेष्ठणा कारे "सुनवायाँ" में प्रगतिलय की अन-अन्तना की मुखरत करते हुए "ग्रामयाव" में गानों के जीवन की ही मुखरत करना हुआ किया।"निराक" ने हरियाण के पथ पर पल्लव लुढ़कती हुई "नारी को देखा तो मूँ से बहार होकर बाते हुए "गिनतुक" को देखा।" निराका " की
"निरुपम" कविता की तुलना जरा गुजराती कवि "सुदरम" की इन विकल्पोंके कोज्यो:-

"फ फिरे फिरे, शेरिबे शेरिबे, उठे सूरज साब, लोक परापदा भीड़ रामनी मुखे मेलार नाव बोर कोह बाढ़को बापी बाहर मने कोह बाढ़को बाप हास।" (५३३०कर्णी : ७८७८)

प्रगतिवादी कवियों के यथार्थ वर्णन ग्रामीण जीवन से संबंधित कवितायें

देखिए:-

कह से कटाह, मुखबिर आमुन, कांत में करतेरी कृती, पूरे बादु, नीम, बाड्डिया, बादु गोपी, कंठ मूर्धि पीछे गीते वस्त्रों में बन राह लाग बिझारा पहरी पक गए खुदे मूर बोर, कंठी से तरी की हाल करी।

(पंक्: ग्राम्या: धूर बैल)

यह तो पंक् जी का ग्रामीण प्रभुति रही ही जरा गांव के मुख्यों का भी हाल देखिये:-

यह तो मास्क लोक नहीं रे, यह है नरद सारिसित, यह मात्र की ग्राम-वृक्षता, जीवन दे नियासित ।

कह से कटाह के विवर, यही का जीवन -खिसी के वर ।
कह जीवन का भूमि कै त बुद्धि ग्राम मारी-नारी?
वासनस्वश चुपाता, बिवाह मरी याहा के बन में,
गुहा-मृण में है कृष्ण, केतन में कृष्ण, कृष्ण है भा में?

(पंक्: ग्राम्या: पूर २५)

पंक् जी की माति निराला की भी प्रगतिवादी विचारकार से प्रभावित बोकर गांवों के जीवन और प्रभुति की और उन्मुख हुए हैं। निराला का विचार विज्ञान का वायन करता है:-

जीवन बादु है शीरण बारी,
तुम्हें बुझाता कुछ भाईर
विस्ता के बीर ।

- बादु राग- परिपूर्ण

शोभन्त्र दिग्विजयी में भी विचारकों की विचारी को बड़ी निकटता से देखा है।

ये बड़े बड़े गगनज्ञों विद्वान, संस्कृत, रसिकार, राजमय, हीरागुण हयादिग वे हैं-
वह सब किसानों के ही परिवार की फलगुन है । किसान की ही दौड़ और तालाब पर तो यह सब होता है ।

वह तेरी दौड़ पर किसान, वह तेरी तालाब पर किसान,
वह तेरी हिंसा पर किसान, वह तेरी तालाब पर किसान ।

किसान-मेरी
केदारनाथ क्रावाल ने दीन दुःखी वुजा के निर्मला में करी यथार्थ दृष्टि का परिवर्तन दिया हैः-

दीन दुःखी यह वुजा
बांध की घर घर में कपड़ा
अपनी चौपारी में बैठा
ताप रहा है झांडा । युग की गंगा पूर्व ३६)

यह तो वस्त्रायाप की यथा त करता है परन्तु मूल से बेहाल बने कि अभिका यथार्थ चित्र उपासकर जोड़ी के क्षेत्र में देखिये:-

हाँ नौ की चौथी हर्षपदी माईं, हाँ नौ की चौथी हर्षपदी !
रात ने दाढ़ी जोया बिना, पेट ना पाताल फौड़े !
फोंका पूरी हारी हारी ने कम्प्या सब लम्बाईं,
फह भह बहुता हेमा नी माईं, मूठी राज रिशावी ,
मूर्ती यान-नी बाछा तापी । (गंगोत्री पूर्व ३५)

"सुन्दर" का भी अनेक यथार्थ चित्र देखिये:-

" कंडवाड़ ना खेर मा माईं,
शेषिया ठोक नी मंडली माईं, सो नो भि रहावे,
मारत देज गांव चा मा माईं,
राम ना राम भे माणिख के माईं, अधिक हाय ना बाहे।"

(सहस्रावणी: पूर्व ३६)

विषाद जीवन की अभिव्यक्ति में सुन्दर ने यथार्थ की अभिव्यक्ति पर विशेष बच दिया है। खेतानी बारे "मंडल" के अध्यात्म जीवन की अनेक फांसी देखिये:-
शेषाणी पहरे चुंबनी रे
रंग चुंबनी रे, ज्यारे मिले बेना प्राण,
मंगल पहरे चुंबनी रे
रंग चुंबनी रे, ज्यारे मिले तेह्रा नी जान।
(कृष्णा कथा: 23)

पूर्वीवाद और साम्राज्यवाद की बक्की में पिसते हुए गरीबों का जीवन भी दर्शनिय बन पड़ा है:-

चन्द्रनाथ मूर्ति ने ये पिंजों के दीन मानवी,
साम्राज्यों ना करा यथो पीरे माता-माता बनि।
(विश्व शान्ति: २० २०)

पूर्वीवाद और साम्राज्यवाद की दुरुस्तता का स्वर्गीय नागारुङ न की इन पंक्तियों में
देखिये:
भगवारे हैं, साहुलिय हैं, बन्धा हैं, चायणारी हैं,
वन्द्र वन्द्र विक्रम बाहु बाहर बहुरारी हैं।

साम्राज्यिक विश्वास की दुरुस्तता में इन कवियों का यथार्थ विक्रम क्यों समझीता के साथ उपर रहा है। ब्रह्मरानी का श्री ज्ञान का चित्र देखिये:-

“फ्रीडो मैनिंग के पाश ना प्रहारो
बिमल त मृदु घनता रही रहे,
निचल गंवा अभाव बानी
निकाआ माँच पूंजी पाँजों पड़े।”

इन पंक्ति तर्क की तुलना दिनकर की निम्न पंक्तियों से की जा सकती है :-

झाना को मिला पूरा माता, मृदु बच्चे कुछने ते,
मा की वहीं दे विपक्ष ठिठो जाणे की रात बिलात हैं।

क्षेत्रिय जन के गैरों पाटन को बालके के छिद बच्चे को बम्बीन पर बुझाया बही जाती है। वच्चा दीन दुखी बीर क्षन पड़ा रहता है। देखिये विश्व जी के सवा में:-

---

1 हंस: जून–१५४९ क्षेत्र-२ पूर ६५०
पापी पेट पालने में ही, सेह हरसता बही गह है
कहाँ पर पत्थर पर मां, कोर काम पर बही गह हैं।
जिसका सेह-छात्ता पत्थर पर, दीन-दुही बनाय पड़ा है।।
(वीर के गान: ८४६)
पता नहीं कितने बारे बने मां के सेहनाथ को कोई बर पुकारी की ही मां की गोय सफर लिया होगा। श्रीमती के बाझर जहाँ उठते ही दूध का पान करता है वहाँ पर गरीब के बाझरी क्या स्थिति होती हैं:—

श्रीमती ना दांव जागी, करते दूध तुम पान;
लाओ रोटों देता हुआ दम तोड़ के तरा कान।
(बच्चा: पूज ५)
वहना ही कहा, मातृत्व नारियाँ बाज करने ऊर की टुप्पिय के लिये करने शीघ्र को बेहती हुई दिखाई देती हैं। "स्नेहरसिम" के शब्दों में देखिये:—

केवल वन्दनाये विनिष्ठात बाजा कोटेक
करिर कहीं कष्ट्ये प्यणे शीघ्र तुम शीघ्राम।
(पक्ष: पूज ८४३)
"स्नेहरसिम" की हर पंक्तियाँ के मार्ग की कितनी सफल है-सुनन की की हर पंक्तियाँ
के बारे:—
"जान क्षा नारी की कल्प, धर्म क्षा का लाज,
वौराहे पर मारतयां, अतिरिक करने लाए।।"
(फल्य सुनन: पूज २)
कवि रचित्राचक ने भी यहाँ जीवन पर विशेष बल दिया है। जीवन की विभागता के इसके चित्र बल्ले हाँ दृढ़ताक बन पाये हैं। प्रात: क्षात बाते हुए बौरे पुन: संघा सम्य होते हुए फड़कूरं का खु दृष्य देखिये:—

या क्ष्णों पर चरे बेले
क्षा जा रहे हैं ये फड़कूर
वौर चढ़े ये संघा बाते
क्षे जाने कितनी दूर
बाते-बाते कुले खानन
हरे भले कहाँ नव विक्रम ना
राजम नहीं हुआ पासुर।।
- राह के दीपक- मन्दरू शीर्षक कथिता-

देश स्वतंत्र हो गया पर न्यू ब्राजिल के बाद में परिवर्तन नहीं है। उसका चचा निश्चित नागार्जुन की हन पंक्तियाँ में देखिये:-

मूल काथ बाइंद्री भि और ज्ञान
उपर भे शाहक स्वरूप की नौकरी-शाही की ज्ञान परिसर है जन-जन फिर भी क्र रचना में ठीक।
शान्ति जीती यह राष्ट्र हमारा संद-नद स्वाभिमान
-नागार्जुन-दोन-बोला युगुना गंगा बाहर हो रही

स्त्रोन जीवन का ये अधिपतिक काम करणा यह जानिएं ने पूरा है। काम करता है। पुत्रक और पुत्री की स्वतंत्र में का कारणी ही जल रहे।

सब मान के लिए ज्ञान को और मान को उठाने देखा पति-पत्नी को धन रोटी के हेतु रत्ना रूप होते देखा
मैं पूरे शिशु को पूरों मां के सन पिंजूरे देखा
मैं पूरे शिशु की पूरी मां को प्राण लोहे देखा।

- दया हो रही हैं बहे जन, हम विभागीय जन के

हिंदी और गुरुराती प्रगतिवादी कवियों के इन यथार्थ-विक्रमों के अभ्य-मन हो जाता होता है कि हिंदी के कवियों की दृष्टि कहां गार्त के विषय जीवन के यथार्थ विचार में स्वेत्ता रही है यहाँ पर गुरुराती प्रगतिवादी कवियों की दृष्टि कहां के विचार में। इसका यह कारण यह है कि गुर्दाल: ये भवि जहाँ में ही रहकर गार्त के गीत गाते रहे। अधिक गतिल है यहाँ विषय विचार; नहीं है। गुरुराती और उपासक बोधी में गरबा, लोगों का जीवन अनु सायाद हो जाता है परन्तु भला फिल्मार हम अथ सकते हैं कि हिंदी कवियों का यथार्थ-विचार विषय विचार बोधावन जितना यथार्थ और निर्‌वस्थान के पद्धति है जनना गुरुराती नहीं है। हिंदी और गुरुराती के पुत्र प्रगतिवादी कवियों के भाष्य और उनकी मुख्य प्रगतिवादी के विषय में प्रलोक कवि के यथार्थ विचार पर विचार किया गया है। यहाँ विस्तार करना ठीक नहीं।
क तक तो इससे यथायथ भिक्षा को देखा। अरभ ४५ पर भी। विचार
करी, कि यादि उस समय की वौर किन्तु क्यों में इस युग के क्रिया ने प्रयाण किया
है। 

प्रगतिवाण की सब से बड़ी विशेषता रही है व्यक्ति के समय की वौर
प्रयाण की। इस युग के क्रियाओं ने व्यक्ति को बड़ी पतितता नहीं किया है। यदि
वायु वायुक्त दुर्गा को देखा बाये सिवाने व्यक्ति की जग समाच के सह जा को
स्वीकार किया। हिंदी के हायावादी क्रिया में लाबा-निराजा-हृदा वाति प्रयत
निकाल उत्तन हुए, फलस्वरूप में बननुकूल होते गये और उनकी बननुकूल प्रति के
उन्हें व्यक्ति निष्ठ बना दिया। हायावाद के पतन के कारणों में यह भी एक कारण
बना।

प्रगतिवाणी क्रियाओं ने विशाल समाच को देखा। इसके प्रयाग मात्र किंतु
स्थल, प्रदेश या देश विशेष के नहीं बल्कि दार्शनिक दुर्गी के प्रयाग थे जिनके प्रति
हायके पत में कहर, क्राय, अटाली थी, इसके कितने दार्शनिक दुर्गी के विश्वास थे।
अंतिम, प्रयाग और किचानों की समस्याएं किंतु धर्म की समस्या नहीं थीं बल्कि
पुरे समाच की समस्याएं थीं। यही कारण है कि व्यक्ति का सुक्त-दुःख भी पूरे
समाच के सुक्त-दुःख के रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

जो सीता हो, पोहिता, किलिक,
में हूँ उनका जीवन बंधु। (युगान्तः: सर्वः पु ३४)
क्षणमें कबी तारे दीन-होता पोहिन्दौ और किलिकों की बात करता है। किंतु विशेष
की नंगी। क्यात क्षणा पूरा समुदाय की यहाँ क्षेपित है।

प्रगतिवाणी क्रियाओं ने व्यक्ति त से विभिन्न समाच को सुधी बनाने पर विशेष
व्यक्ति। ये विशाल दुर्गा को देखा बाये-ज्ञान कर रहे थे। विश्वास का बाया
इसके पता नहीं था। इसके उपर क्रियाओं का बाया नहीं बनाकर किया। वस्तुतः
उपर क्रियाओं का बाया का कुनातूल तो तत्पर होता है, जब कि किंतु आधे अर्थ के
ही धारे में बढ़ा रहे। इधरूः प्रगतिवाणी किंतु तो क्रियता ही मानते हैं जल्द इस विशेषातः
पू-भाग में करके जाने के लिए बायुर रहती है। उसके तो शब्द की मानते क्रिया के
विशद विमोचक कर उसके स्वामी में फैला देने का बावजूद करते हैं। १ हस प्रकार का उदाहरण यह दर्शनीय है।

.... का हर्षा तुम
carne ही हर्ष में बसता बन्द करो
हर्षा तुम दीवारें नहीं
carne फैलनों का हल्द करो।
फैलावो हर्षा
carne निकालन फैलाता है बीजों को। २

यहाँ पर क्रिया वन्य के बीज की माति फैलने की बात करता है। क्रिया उपाधिकर
जोड़ी की देखिये जो प्रजा के दूध को ही कहीं मारिया के से पून से बेचता करते हैं।

उन्होंने प्रजा प्रजा ना अंद सड़क-लागी
गूढ़ी रहू जर्निंठ वेष्ट प्रेण।।(संस्कृ: पू०२६)

भारत वास्तव हो गया। परन्तु या तो वह वास्तवीकरण के पृथक तक
रह गई या तो चन्द्र घराय तक रह गई। वह खरा तन भुजा नहीं हुई। इसी चित्र
उपाधिकर जोड़ी का समाकर्षाद, समस्ती की ओर प्रवाण करने का वाता हुआ। त्रन है
कहता:

"हजार हजार शह, हुध का बुढ़ाडी नहीं,
मुनि निरक्त हु, मुक्ति तणीरिकार लाही नहीं।"
(वल्लर वर्ण: १०४)

क्रिया वार्ता वन्य वालों को हस्तांतर कर वन्य के ख्यातनाथ को कहाने
की बात करता है।

वनस्पति ना सनु बाकी नहीं
बाकी के वन्य का ता।(विष्णु हानित: पू०२३)

१ प्राक्तिक हिंदी क्रिया: हाल हुग्रधार स्वामी र पू०१०१
२ प्राक्तिक प्राबळ फिसु: मूक्ष: गिरका शौर (पू०६०) पू०१४
हतना ही नहीं वह तो क्षण के क्षण मिलाने की मी बात करता है:

ने सबके सबके से मिलाकर
गज़रीकै तो आ उसरे उम्मीद (विषय शास्त्र: पू.२३)

इस प्रकार हिंदी और गुरुराती-दोनों की मात्राओं के क्षणों ने विषय
बन्धुत्व, विशेष दुर्लभता की बात की है। समाज समाज ही उसका वर्ण-विषय रहा
है। साक्षरता जीवन की प्राणिता और उसकी अभिलक्षण की सबूत और उसका काव्य-
साहित्य का गुण है ॥१

नारीं और प्रौम भरा प्रति स्वयं दृष्टि:

नारी के प्रति युग और प्रति प्रभाव के काय्य का विषय रही है।
परन्तु प्रति युग के क्रियाओं ने जो भूमि भूमि दृष्टि है देखता है। प्रारम्भिक काल
में नारी और पुरुष दोनों की प्रजनन ध्रुव में समाज रूप है मानने वाले थे। इसी
लिए वह नारी के प्रति प्रतिकूल रूप ही निष्ठाना भी थी। हतना ही नहीं बल्कि नारी
की मात्र शास्त्र युग की परिकल्पना भी विद्वानों द्वारा की गई है, जिसमें नारी
पुरुष वै भी बौद्धीक प्रशिक्षा रखने वाली थी। अवतारित जीवन में यह पुरुष पर
शासन की बात की थी। वैदिक युग की भी नारी समाज की मूल्यपत्र पर ही प्रति-
निष्ठा होती। पति की समाज में भी उसका प्रसार प्राप्त ॥२

काशान्तर में सामाजिक रूप वार्तिक यवस्त के परिवर्तन ने नारी की
स्थिति में पी परिवर्तन का युग। सामाजिक रूप की नारी पुरुष की स्थायी बन
गई। पुरुष की खींच-बन्दूक बन गई। यवस्त-वास्तना के वति जो क्रोध पूरक
नहीं था। वह क्रिया-विषय का वस्तु बन गया। भूमिज्ञता की हर परिकृत में नारी की
इस स्थिति का संबंध मिलता है। समाज की नारी द्वारा खुल-विद्वान पति की
क्षेत्र या विधान दिया गया है:

निरालाळ सामाजिक व गुरुराती परिवर्तित:
उपन्यासः स्त्रिया सामाज्य सत्तैं देवतव कौमः

पुन:भूमिज्ञता-५-३५४

१ हस्य: दिसम्बर १६५४ पू. २०.३
२ हा० राधाकृष्णा मूल(वर्ण-वाच) (किसी तब) का समाज "हिंदू समाज-
मं नारी- पू.१६५
हिंदी के वीरगायकाल तथा रीतिकाल में नारी के पोषण भम की ही प्रधानता मिली है। पुरातत्त्व में से इस मान्यता गाया जो सांस्कृतिक मार्ग में बाक्क थी। इन आयुष्मान नारी शामिलित दृष्टि के अस्वस्थ थी तथा सामुदायिक दृष्टि से अपवित्र थी। वह पुरुष की हस्ताक्षर बन कर रहा गया था।

वास्तुकिय युग में नारी का बिकृत भम की परिवर्तन रहा गया। उसके भम में अर्थातः नारीप्रत्यय परिवर्तित हुआ। कालिकोन में नारी का बहरा परिवर्तित भम में रहा। परन्तु शियदी बुध में नारी के रीतिकालीन पुष्टि के निर्देश विद्वान की वैज्ञानिकता की गई। वैज्ञानिक मनोनुसार गुप्त ने "उपवीत", उपवीत, "उपवीत" के रूप में नारी का प्रत्यय को नामांकन बनाकर करने का कार्य कर दिया। यद्यपि नारी का प्रभुत्व बना रहा था, यद्यपि नारी का प्रभुत्व बना रहा था, नमस्त शामिलीन नारी का मान्यता बाक्क वही, बाक्क माना। नारी पुरुष के माण की बालक नहीं, बालक है। सांस्कृतिक भम प्रमुख वातावरण में बहरा प्रत्यय को सांस्कृतिक के साथ व्यावस्थित हुआ।

"प्रारंभ बीवर, बन-हित की, गेह वाहे न बाहे।"

गुप्त की नारी के अपसरा करने वालों को फलां हो और यह बताया कि जहाँ नारी का बादर होता वहीं पर ब्रह्म-सिद्धियों होंगी।

कैद अपसरा नारियों की एक क्षण हम कर रहे,

अत्याधुनिक अनुसरण उनके श्रीमत पर है घर, रहे।

गर्म न कर घर होकर मिटा फिर दूर सारी बिद्विरियों

पाती फिर बादर घर रहती वहीं शब्द किंवा।

यही प्रशासन सम्बन्ध उक्तक त्तिक नारी, नारी की विनिमय का समाप्त बनाने वाली "अन्तर" के भम में विनिमय किया।

नारी कुल बेटा ब्रह्म हो, विनिमय नव अंत पर तत् वह में,

विनिमय-अन्तर की अंतर बनी, ब्रह्म के सुन्दर संपत्ति मह।"


1. हरिद्वार: "प्रिय प्रवास : सोश सर: पृ २५३
2. गुप्त: मारत मारती: वर्मानक क्रं: पृ १५९
3. "शामिली": प्रवास: लज्जाल: पृ १५९
4. "अन्तरो उन्म: ...",
जिस दिन काँडीन माफित्त में नारी के प्रति सहायते काम चक्क की
गाई तथा उसके सुबह की उस्मण्डिता भी की गई परन्तु उसके आनन्दकारी स्मृ
को नहीं स्वास्ति किया गया। हायावाण की नारी क्रिकेटेलायी देवी बन गई।
क्षिप्त पर जो अवश्या रा रंग दे दिया तो क्षिप्त परे हायावाण भी ही जो विति
कर दिया। हायावाण की नारी क्रिकेटेलायी की देवी का काम गई परन्तु पारिवारिकी जीवन के पाराबोक के रूप में उसकी प्रतिष्ठा समय नहीं हो पाई。

जसका रंग पाद द्वारा वर्णित अवश्या के समान हायावाण ही बना रखा:

निशित क्रिकेटेलायी बाथी, वापसी, विविध विस्मान्तक
अक्ष का दिवालिक, दर, कपिल, मारी की बाथार।

gृह, निर्मल, का नव, वसूल, तेल्री की दुःखा
मोहिनी, अनुमतिर, दृष्टि-विष भाष्य, वितं-विचार भार।

इस तरह दिवाली युग की कंठ नारी को गतिशील बनाया तौ सुझारी तरफ हायावाण की दुर्लभ नारी का क्ष भगी वाकार भी प्रदान किया।
नारी की "योनि" माथ के पूर्वी से ऊपर उटाकर उसके पाराबोक के रंग की प्रश्नणा की:-

"योनि की हैं रे नारी, वह भी मात्री प्रतिष्ठित (प्राणा पंक्त: ५०५५)
नये वर्ण नारी की क्रिकेटेलायी का प्रस्तुत ओरि हुई बढ़ते हैं:-

'तुम कह हरे जोग की बतू जुक को, बल्लु टुबा
मेला पूरा की आर्ताता मत भी नहीं बची ज्या जुबू के नाराज के सीताना हुईं कहेहा दुःखारी, दुर्लभ नारी
कहे 'विनियन दुःखारी मौन अव बिन के टुके।' २

हायावाण का नारी काटी नहीं, विनी जीवन संपन्न त्रू हुए के कंघा
से क्रमा भिखारे चेहे वारी "सहवरो" बन गई है। उसका नया रंग भी हनुमान में
देखिये:

---

१ अपार: पालविनी: पृ० १३०
२ नरेन्द्र वर्मा: क्र नारी के प्रति: मिस्ट्री और फूल: पृ० ५४४
तुम करों गोर भुरुणा की
बर बालिका भीष्म को
तुम की बालस-बिविना देविका
मस्तपाक-रिहा देविका
घुथाक हरुक-रीता
करों को तुम बहों दुयं दुयं पुराणी
चेर की जूठी भिंडी की
आदि के खुश मतोवन-वयरू की वसल केवल।

तुम रहों हूं हूं
तुमारा प्रमु नरी हूं
हां, रहो हूं

और तुमी विक्रम करों
घर के नुल्नार कम्बन में
हेली मां रहो भारत हूं।

अनुवादकी शिक्षाओं की नारी विषयक दुनिया यह रहों कि चर्चा पर
उनकों विभिन्नीति, पूर्णतियों के शोभित विवाह तोर किसी को देवाय भरकों
पर नारी की ती पुरुणा की श्रीमान की विक्रम में चितो देता। यह उनकी दुनिया
की कीता थी। "पुरुण-नारी" दोनों के तुलनात्मक का की देखिये:

का जो उकाल कृतित, तो जो ज्ञात नहीं पिँडा
पूर्ण मरी माता में देश रहो माता का श्रीमत
पुलित ने नींद का यह, भिन्नतार मरी निर शोभित नारी
पति के किस्म प्राप्ति के नकल गतिकार है जोड़ी
पति के अश्व-दुर्दिन की नारी वही वना विक्रम वसल

स्वाज वना निरामण विक्रम पीत, निर, पिर शोभम प्रविषे।

1 लगातार क्रमांक: अंग नारी: बुधज्ञा दुयं: पूः १०७०-७१
2 प्रकाश: रामस्वर हूं: एक्वेंट पू: २०१२।
ग्रामलिखिती श्रिवर्मिन्द्र ने नारी के यह स्त्रीलिखित सम रूप बताकर दिखाई दी थी कि नारी की ग़ुरी मधुर की है। वंदिनी-नारी की पृष्ठ का स्त्रीलिखित नाम

गुरू बताकर नारी को माना। चिर बंदिनी नारी को गुरू-गुरू की ध्वनि करता है, जननि, चली, चली न्यायी को दिखाई देता है उस सब त्वचन पाते है जो शरीर का बनता है। ये बाल्यगण की मान सबसे बन्धी बीमार है।

नारी के यह सम रूप के बताइंकह अत्यन्त सम्मिलित भी ग्रामलिखिती श्रिवर्मिन्द्र के बड़ा वर्ण बन चला है। वह वारस-सिर, वारस-स्वर, वारस-स्वर वर्ण सम्मल भी न्यायी-नारी का प्रभाव सुनाया है। गुरू-गुरू के भरत हुमा की दिखाई नारी का वर्ण है।

तुष्य गुरू गुरू के कहत हुमा की दिखाई नारी की वर्ण,
हो गुरू पहुँच जाना, जा तो है गुरू गुरू के भरत हुमा ।

हिन्दी रूप ग्रामलिखिती श्रिवर्मिन्द्र के अंत दृष्टिक दिखाया था वह भी रही है कि उसमें ग्रामलिखिती नारी के रूप का किया जा है। वह गुरू-गुरू के रूप

"गुरू गुरू हँस, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू खण्ड, गुरू गुरू

8-2 नीम: नीम के साथ: मिलिश्व: पूरा 75-76
9 ग्राम गुरू: गुरू की: पूरा 25
9-1 गुरूगर्माणी: सेल: 169-18
माह-पूर्ण में सूर सूर कली
जब ठंकी ब्यार यह वहली
जिसकर गह झुक बोर निकारह
गालों पर हाल हे बाहर
बोर मोर पाए वो वो वो
फूलों वे हे बंक कयोंगे
केवल जल में सहसा उठ कर
वही सुन मह सुन दुनार।

इसमें कवि ने नारी के यथार्थ सोन्दर्य का रूप हतनी सख्तता के साथ विभिन्न क्रिया है कि यह स्वामासिक सोन्दर्य वाक्यांश का एक कारण बन गया है। यह यथार्थ की प्रति प्रकृति मायिक की तरीक विशेषता है।

गुरुराती प्रकृति मायिकता कवियों ने भी नारी के रूप की स्वस्थ मनोवृत्ति का वरिष्ठ प्रयोग किया है। नर्तक-दलहत गुण में जिस नारी के उत्थान और उसकी मंजुर कथा पर विशेष विशेष विशेष गति से एक विकार बहु स्वस्थ देखा गया कही नारी रंगी गुण में बारक रहस्यमय बन गई। नर्तक-दलहत गुण की नारी उत्थान की मानना पंखित गुण में दुधु प्रयोग करने वाले जिस गुण का प्रकृति मायिक में ह्वाला। नारी का मायिक सोन्दर्य हमने रात-श्रीरा को उदीयत करने का कारण नहीं बना। वह मनोवृत्ति करते हआता है कि समुदाय मायिक रूप का दीनत्र यह प्रयोग है।

वे मनु हे स्वस्थ दुधु स्वर सी वहु
विद्वान गरे, पत्थरी, वर्ष, उर देखे का ना चढ़े है (काव्यमाला:दुन्दस )
(सू १२४)

वास्ते में देखा तो सात होगा विहिन्दी के प्राकृतिक कवियों की प्रांति गुरुराती कवियों ने नारी के गुरुराती कक्ष का स्वस्थ विशेष नहीं किया है और न तो उसके रात्रिक स्वस्थ को भी प्रस्तुत किया है। परन्तु हलना जहर है कि उन्होंने नारी के प्रति स्वस्थ स्वस्थ दुर्गम रूप है। कहीं ही नारी को मात्र मार्ग या कमजोर-श्रीरा नहीं माना है। वत्क नारी के स्वस्थ परिस्थितियों स्वस्थ मानने रूप का बहु स्वस्थ परिष्करण करने की क्रिया है। इन कवियों की नारी प्रति की पुरी है, पान्नतह।
की माता है, देवों की दुलारी है, मुझे बघवा की हुलिता है तथा पुरुष की मांकारिनी-प्रेमना-प्रोत है:

प्रकृति नी पुत्री सम, माता भे मानवता नी,
देवों नी दुलारी, पीठी हुलिता भे बघवा नी
सहवरी साप्तकारिन तणी बेंगे भे अनन्य
प्रेमना परन्या तणी मांकारिनी।।(वातिल्यः उमाशंकर बोसी)

फू. जी. 30

नारी का हससे भी बड़ा कर स्वस्थ वौर वादो धुम वौर क्या हो सकता है?

इस वार पंक्तियों में ही कवि ने पुत्री, माता, हुलिता, तथा जीवन-सहवरी का हप प्रस्तुत कर उसे मांकारिनी कहाया है। इसी वाले हुंडर सौंद्र्य चिद गुरुरारी के फ्रांकिकाई कवियों ने लिंगें हैं। परन्तु इसी विषय में केवल हिन्दी कवियों की माति विषय नारी का हप दिलाई नहीं देता।

प्रेम के प्रति ही इन कवियों की वपनी दुखित रही है। हमने यद्य पुत्र के कवियों की ब्रूपिा प्रेम को विशेष स्वभाव स्वामाविक तथा स्वस्थ मूर्तिपर ग्रहण किया है। इन कवियों ने व नी ज्ञ्ञान कवियों की माति काम-मात्रन को वेघ माना है वौर न हो भावावादो कवियों की माति काम-मात्रन को बजारी, वातिल्य तथा प्रतीकात्मक हप देना का प्रयास किया है। पन्न जी ने तो दुखा, दुखा, तृण-बागरण की माति काम को भी एक नेरिंकिक वस्तु माना है:

क्या दुखा-दुस्कर वौर स्वप्न बागरण का हुंडर
हे नहीं काम भी नेरिंकिक,जीवन-भोजनक हुंडर।(वातिल्यः, पृ. 26)

नर नारी का वाकङ्गण को स्वामाविक है। हस्तरुपक कवि पंत की गुप्त प्रेम के थिकाते हुब कहते हैं:-

क्या दृष्टि पुत्र तुम स्वप्न, स्वस्थ, निरंतर सुभुंज
अंकित कर लोट्ट नहीं संझा के बाधाओं पर रहा?
-
-
-
-

क्या गुप्त, पुत्र ही बना रोशना, हुलिता।
नर नारी का स्वामाविक स्वरिक बाकङ्गण ?(पन्न जी ग्राम्या:६८)
गुरुराती कवि स्वेच्छ राशिम ने यह देखा है कि 'धरती की नारी' के कुंद में बहुत प्रेम-वह मरा है, परन्तु उसमें कोई जल मरने वाला नहीं दिखा। तभी जो धरती बँधा कहली है:

मांयू तरस्या को श्या नी फारी,
हुं धरती नी नारी। (पक्ष्यः पृ ४६)

कवि नारी-पुरुषा के प्रेम-देश्य की सुफिस्त करना नहीं चाहता। इसलिए वह कहता है:-

बजवालं वेलनं जनक पाया बालसे,
मारे तो वे मर्ती एक यथा काहे (पक्ष्यः पृ ४६)
कवि उदासकर बोलता तो नारी-प्रेम के समान छूटने टेक देते हैं। वे नारी से हामा याकर करते दिखाई देते हैं:-

सच्चे पृथ्य जिनं यथा,
जय पाया पुन्यायुः प्रारं,
कवि हुं, जीवतां मुयो दृषे
परस्य मांकी ज्ञा सुखास्वरी। (निशीथः ४४)
इस स्वस्थ-प्रेम के वातावरण कहाँ-कहाँ पर हन कवियों ने ऐसे निश्चित भी प्रस्तुत रुप किया है जो "काम" के प्रत्यक्ष रूप को प्रस्तुत करते हैं, फिर महीने प्रेम के उद्देश्य, लघुलल देवता, बक्सली देवता का विरोधी ही चित्रित है। कहाँ- कहाँ पर ऐसे निश्चित व्यक्ति मिलते हैं जो कृत्यशील के उद्देश्य स्वनुभाव स्वरूप चित्रित करते हैं। १ स्नेहारस्मे भी कोष रासिक नहीं है। प्रणाय-भीवन का साकार रूप हस्तकाय में दर्शनीय बन पड़ा है। कवि की रसिकता सवेरे एंडाढिशा देखिएः

व्रजेन चक्कावानी, नेपाल तक्कावानी,
वाजु ना गृह बीर्यायं हेये संहाती,
कहाँ को है हेताय स्याय, तारी सन्तरी (पनखा: ६७१)

इसके वातावरण संयोग प्रेम के भी विशेष हस्तकाय हास्य चित्रित हैं परंतु कहाँ- कहाँ स्वनुभाव नहीं बनाए पायी है। कवि वर्षित है देखिएः

वेकल पाम्यां उर विस्तु पुराण,
त्रिकृष्ण ना क्या य रामो ज प्रेम नो (पनखा: ५०६)

हस्ताक्षरी बोग उपारतिका महोदय कवियों के प्रेम में मात्र हरता ही बन्ता हैं कि हस्ताक्षरी कवि को नारी का प्रेम उसे "कोशलस्ते की अवस्था" से पत्तावटे का प्रेमदास्ता है वहाँ पर प्रणाय-भीवन कवि के नारी का प्रेमसे रत्न-भीवन का प्रेमी बनता है, उसके दुःखसे को हरकर कार्य-क्रम में बांग बढ़ते के लिए नया उत्साह बोर बल प्रज्ञान करता है।

पुर्णे जगतान्वीन का प्रेमी बना रहा है यायार तुष्कारा
मेंरी स्वनुभाव को हरकर, नह हक्तसा सावर्ष मरकर
तुमा फिर उत्साह विद्राया, कम्य क्रोध में बदलनमकर
लक्षसे में वाति बढ़ता हूँ, बल देता है यायार तुष्कारा।

1 त्रिकृष्ण-नेलाता: हर्षेः न बनाए दूरी: कच्चा: ५६४
2 बसाये: त्रिकृष्ण: ५०१
प्राकृतिकी रचना प्यार को भी अपने स्वार्थ की अंकीय परिभाषा से उठाना चाहता है। वह ऐसे प्यार का बागिक रूप से जिसे मारी दुनिया के हृद-दर्द की तहत हो। हसीलिए कहता है:-

वास्तव में जीवन का दुनिया प्यार ऐसा जो कि दुनिया के लिए बादूं बढ़ता है।

इस प्रकार इस विषय से यह स्पष्ट होता है कि इन दोनों की मामलाओं-हिन्दी-गुजराती जैसे प्राकृतिकी कविताओं ने सद्य नारी और प्रेम के प्रकृति का स्वरूप दर्शाया है। इनके प्रारंभ प्रेम के जिसने न तो कहीं मदद का संकुचन दिखाया देता है वो अपने लोगों में ज्ञान का उपयोग करता है। विश्वास है कि इन की बहुत बड़ी देवता यह है कि परम्परा नारी के जिन्दगी को जो रहस्यमयी गुप्त बना हुआ था, उसे पह ये उसकी समस्याओं समुदाय में बड़ी स्वस्थता, समस्याओं और जिन्दगी की साथ व्यक्त कर रही है। इनके नारी बौद्ध व्याप है अर्थात् मृत्यु है।

प्रकृति की विचार में यथार्थता दृष्टि:

प्रकृति जीवन के रागात्मक मानस को वादिक देख से ही प्रभाव करती रहती है। हसील हम वह सदैव ही बेष्ट तथा सुन्दर कविता के लिए एक आवार विषय तथा उपकरण रहती है।

प्राचीन काल में प्रकृति के सौन्दर्य का बहुत रूप चित्रण हो सकता है। यदि व्यक्ति भी है तो कवियों ने परवरिष्ट रूप को ही अपनाया है। उनकवियों के लिए प्रकृति मात्र उदीपक थी बौद्ध वह उदीपन भी केवल धुंध की। इसावानी काव्य तो प्रकृति निकल के लिए प्रथम ही है। इसावानी की संपत्त: मूल मेला की प्रकृति परम रूप है। प्रकृति के विभिन्न रूपों का चित्रण करता है आपके कल्पना और रहस्यात्मकता बागराज है। ऐसे ही गुजराती के पश्चिम सुम भी है। पश्चिम

1  रागेव राघव: परिसा: प्रकाश-५०१२३
2  प्राकृतिकी हिन्दी कविता: डा. शुभाष साहित्य: फ० २१४
का तो मुख्य विषय ही प्रृति,प्राप्ति और प्रमु-परिक्षा रहा है। परन्तु हमें भी किसी रहस्यात्मक सवा का ही अर्थ होता है। इस दृष्टि के प्रृति की विषयता रही है-मानवीयरा के रूप में प्रस्तुत करता ।

शायावादी या पंछिल दृढ़ के कवियों ने प्रृति को या तो कोशिश के जीवन से दूर शान्त सिरदर्श विवाह-प्रृति के रूप में देखा तो प्राप्ति के हैं। इन कवियों ने पाठ की प्रृति को अपने सुबद्ध-पिशाच द्वारा स्वाभाविक रूप से आपलोगूण बनाया हो परन्तु प्रृति की विश्वसनीयता का वर्णन इस एक के कार्य में नहीं मिलता। शायावाद या पंछिल दृढ़ के कवियों ने मात्र अपनी अन्तर्रात्मा का ही उस पर अरोपण किया। प्रृति के बीच कवि ने अपनी ही सीमा का विस्तार देखा बौद्ध उसका अनुच्छेद किया। अपनी ही हृदय बाकी छोड़ तथा वास-शिक्षा का चित्र देखा। परन्तु प्रृतिकार्य कवियों की प्रृति हल्ले बुद्धिमत मिल नहीं है। खेल प्रृति को अपनी वेदांत भूंता, दुरुदर्पद का व्यक्त करने मात्र के लिए नहीं बनने वाला उसके कार्य पूरे जीवन को ही व्यक्त करता बाहर ।

मुख्ता: प्रृतिकार्य कवियों ने प्रृति के रहस्यात्मक रूप को नहीं बनाया है। प्रृति का व्याख्यान ही उनके ग्रामाण रहा है। प्रृति में ही हमें जीवन को देखा। यदि कार्य है कि जीवन संग्रहण से परागृह प्रृति बना हिंदा कवि का मन यह कहने के लिए बाहर भी उठा है:

" सुन्दर है विश्व,दुरुदर, 
मात्र तुम सब से दुरुदरभास 
निर्मित सब की निर्मित दुरुदर की 
तुम दुरुदर दृष्टि में निर्म निर्माण।"(मुख्ता:मानव-शीर्षक कविता)

मुख्ता के हसदुरुदर रूप के देवसंग्राम कवि ग्रामीण-जीवन की विषयता रैला को भी अपनी वांछन से वोट-पत्रहीन होने देता है:-

माँ तक की मूर्खि से उठ नाम के नीचे नाम की छुआरी, 
मंद फवन में तिरती नीची रेत की की हकी जाहीरी

-----------------------------------------------------------------------------------------------------

1 बाहुल्यक काव्यभारा का सांस्कृतिक दृष्टि: डा० केशरीनारायण शूक्ल: ६२४
तद्विन्यासं क्रिया अभिधारण के अनुसार सही प्रकृति के शारीरिक चिकित्साप्रसंग क्षेत्र में कार्यकर्ता को मनोविकारण प्रश्नों का उत्तर देने की जरूरत होती है।

हेतु: क्रिया अभिधारण के अनुसार सही प्रकृति के शारीरिक चिकित्साप्रसंग क्षेत्र में कार्यकर्ता को मनोविकारण प्रश्नों का उत्तर देने की जरूरत होती है।

1 पंत: ग्राम्य: धूमकेतु 64-65
2 रूप तलेय: रामविलास शर्मा: पं 7
3 शुभ की गंगा: केदरनाथ गुप्त शर्मा: 96
कवि केदार की हस पंख में पथराती सुख प्रसन्नति सुन्दरी के साथ मनसुखाल माँवरी की हस सन्देश प्रसन्नति-सुन्दरी की तुलना कीजिए:

क्रांति माँ प्रसरतो, रचलो, स्मलतो ।
बारत्न को बनाये बननी मरतो ।
भुखमो मक्खी, तरलमान कपल्लगो मां,
लेकि नापे वहाँ महारी प्रसन्नति के नवोज्ञा ।

दाह रामविलास शर्मा ने बहां पर संभ्वाकालीन दृश्ये तथा झूठ में जागरुकता के सूर्य की कल्याण की है वहां पर स्नेहरूप के हस उष्मावर वर्णन की देखिये:

बने पूर्वाकाश कुप्रथा उत्साह सिन्धु विज्ञी—
वहां जो की आती कब्जे वर्णी मोक्षीक प्रमाण
हरे व्यापे मारे वहीं राती श्रवा-स्वप्न सरसें।

सुनन की की यथार्थ प्रसन्नति का चित्र भी बातीय है:

दिन तपता है, जबके रात उसे ।
शीतल करने को साथ सबाती ।
सग क्लास के साथ साथ,
संध्या रोसी, उष्मा मुसकाती।

सुनन की की प्रसन्नति का वास्तविक रूप तो तब दिखाए देवा है जब वे कहते हैं:

कहीं से धार की बाती
बड़ी झुप चाप झुलाती थी।

यहां पर कवि ने प्रसन्नति को सुनहर बना दिया है।

---

1 क्रांति: मनसुखाल माँवरी: 29 ।
2 वर्णी: स्नेहरूप: 166 ।
3 विपक्ष झुलाता ही गया: सुनन 16 ।
4 वही वही 62 ।
निलोचन ने तो प्रकृति को प्राण-चालक के रूप में देखा है। बालकों की यह निसानों के प्राणों में नया रंग लगाने को बाया छुआ कहता है।

वास्मान फर गया देख तो
हर देख तो उचाई देख तो
नाज रहे हें उमड़-पुछ कर
काली बालक तनिक देख तो
तेरे प्राणों में चरने को कहे रंग तैयर है (पत्री: १७३)

नागाजून के प्रकृतिविश्वास में यथार्थ के विशेष्य-दर्शन होते हैं। जब कहीं विषयों के बाद
कवि अपने गाव की मोक्ष प्रकृति का दर्शन करता है।

कृति दिनों के बाद
बब की में ची मर देखी
पकी-सुनहरी फलकाँ ची गुस्ताना
- कृति दिनों के बाद (सतरों संयों बांटी : २३)

पूस्त की त्रुण सुहावन
चावल नहीं सिक्का सकती है
रोटी नहीं लेक सकती है
पापी नहीं पका सकती है (नागाजून: पूस्त की त्रुण)

प्रकृतिवादी कवियों ने सांस्कृतिक-उत्पत्तियों तथा झूठों को दिखाने का क्रिया वक्ता का सही दिया है। वे प्रकृति के चित्रण में गावों के विशेष त्रुंग रखते हैं
जिसमें जीवन के और प्रकृति होने की सज्जाह है।

शुरुआती प्रकृतिवादी कवियों ने प्रकृति के यथार्थ रूप तो व्यक्ति प्रस्तुत किये हैं
परन्तु जब वोज यहाँ सत्य स्वीकार किया है। हिन्दी कवियों की माता छः भी प्रकृति प्रस्तुत कराने-पालनी है जिसमें चित्रितियों का वैक्य भी जीवन बताना के रूप में देखा है।
इनका एक ग्रामीण यथार्थ रूप को देखिये। वसंत के बाने पर:

कौन्हिल ना हा कुं हंगाता,
प्रकृत: रूपा बाँधना मोर,
केंद्रूँ ना केष तीखाना,
श्रींबाबुशो नो फोरे कोर
कुल खंसी वपरिमारा
वन-वन वसंत ना कलार। ॥(कोशया-श्रीमान: फ० २३४)

प्रकृति के पायलकार, उद्दीपन, वाक्यार बादि रूपों की योजना इन कवियों
ने की है। इन सभी रूपों में इन कवियों को प्रकृति का यथार्थ रूप की विशेषता,
वाणिज्यता कर सकता है। वास्तव में प्रकृत: अवलोकन की मूल माता ही यथार्थता
का प्रतिक है। ध्यानाद, परिकृत: का विरोध कर यह प्रकृति: माता की अवस्था
जिन्हें समाज, प्रकृति बादि सभी का यथार्थ की माता-मूर्ति पर बेलायता। इससे यह
स्पष्ट होता है कि इन कवियों का यथार्थताओं कहीं भी झूठ नहीं है। साथ
की समाज-बंध की माता ही संदेह नहीं रही है। इनकी प्रकृति सदैव समाज
सार्वजनिक रही है।

कवियों,मदुरू: की साहित्य में स्थापना:-

प्रकृति: अवलोकन की सब से बड़ी विशेषता यह है कि वहाँ पर साहित्य में उपयोगिता
वर्त को स्थान दिया गया था वहां पर इस सुर के कवियों ने कवियों जो वह मदुरू: को
स्थान प्रदानकिया । कविया जो मदुरू की ऐसे समाज के व्यक्ति है जो अपने
परिप्रेक्ष्य के बाद पर इस समाज को जीवन न बनाये सुर हैं। परन्तु सुर-सुर के इनकी उपेक्षा
बाद शोधणा होता रहा है। इसका घोर विरोध इस सुर के कवियों ने किया ।
उमाशकर जोशी के मबदूर को देखिएः - जिसने बप्पी हर्षद्र को की हयोद्धा नायक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की होने पर उन्होंने कहा था कि हयोद्धा हूँ गीते कविता की सृजना परिवर्तन की बीमारी है।

"हाँ ना कीया हयोद्धा, माझे हायती कीया हयोद्धा, रात ने भावे जोया निना पेट ना पाताल फोड़ो। फोफदां पूर्वी हाँकी हाँकी ने धमण बुझ धमण।" (गयोरीक: ४५)

पूर्णीप्रतियाँ की शोभणा की चक्की में पिसते हुए एक अभिमान की कहानी दशा का किशान सेवास्मृति के शब्दों में देखिये:

आ पूर्वुँ बहु बैं- बनी यह साधे
रे| मंत्र जेवा बुझा प्राणपुर्ण
सपाई जाता मबदूर तरी व्यथा,
ने सुशीवाद- अभिमानीयों तरारः। (बच्चा:२०)

किशान बहुनिष्ठ कठिन परिस्थिति करके भी एक दूरी बनने के लिए तत्काल रहता है। देखिये:

बराही ने पड़े पड़े पड़े
पूरी बान बिना नामां बाल परे। (रामचुर्या: ५२)

किव तो दूरी पता से यह उद्योगोत्सव करता है कि पूर्णी पर किशा का राज्य है:

पूर्णी पर राज कोलां, साँखा भम बीजीवी नाँ,
बेहां, साक्षां, उशमंतर नां।। (रामचुर्या: ५८६)

हिन्दी के प्रागतिशील कवियों ने दूरी रूप से अपने काव्य का निर्माण किया तथा केवल प्रागतिवाद का दूरी संदेश की उपेक्षातों वेद दूरियों के गले लगाना था। हका निवास बड़ा ही वास्तविक एवं दृष्टव्य बन पड़ा है।

हाँ। रामचुर्यास शर्म के उन किशानों का किस्म देखिये जो बनन प्रयास करके भी पूर्णी रहते हैं।
एसे ही हज़के एक अभिकथा भी चित्र दशकीय हैः


राक्ष श राष्ट्र के मज़दूरों का ही एक चित्र देखियेः


हस प्रकाश इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि हिंदी व गृहराती के पुराततवी नेव न मज़दूरों व गृहराती की जीवन को उकर काव्य का निर्माण किया है जिसमें उनकी दीन हीन दशा ही विशेष उम्र के हाथ है। दोनों में बन्तर यह दिलाशक देता है कि वहाँ पर गृहराती कवि मज़दूरों, अभिकथा के निर्माण में विशेष रूप से वहाँ पर हिंदी के पुराततवी कवि किताबों के बिच्छे मेंः। परन्तु दोनों ही कवियों में हज़के प्रक्ति सहानुभूति और अघोर हैः।
पौड़ेर वर्ग की प्रायः सभी प्रागतिवादी कवियों ने विशेष बादर का स्थान प्रदान किया है। उसकी यह मान्यता है कि यह बादर श्रमिकों के बच पर ही टिकी छुएँ हैं:-

हन श्रमिकों के बच पर ही
टिकी छुएँ हे बादरी
हन श्रमिकों के बच पर ही
मीला करती है
बोने बादरी की बादरीं हैं।

इसी के हन कवियों ने स्किसान वर्ग का भी श्रमिक वर्ग की ही मान्यता बढ़ाने का काम किया है। यह कवियों के वास्तविक स्वभाव तो ये हैं:-

यह बादरी है उस स्किसान की
जो बैठों के कथनों पर,
बसत घाम में
कुछ मायाब रूप देता है
बून बादरी छुएँ वालु में।

श्री प्रमाकर माके ने मी यही माना है:

साहित्य में पौड़ेर बौर विशेष नवं नवा कवियों की महत्व को
स्वीकार किया है।

1. हन महेन्द्र मेननाथ : श्रमिक निर्मितिवाद : पु. ६४।
2. केदारनाथ भुजावाल : बादरी : भू की संग्रह : पु. ५४।
3. मां बादरी : स्किसणा के खर : प्रमाकर माके : पु. २।
बास्था लक्ष्म दुःखा के वोजस्वी करः

प्राक्तिकाद की उक्त समस्त प्रृथ्वियां में बास्था, बोर दुःखा की चेतना कुछ में पराग की माति विश्वास है। इन में बास्था बोर दुःखा छोटी ही रख है कि उन्हें समाज की शक्ति पर पूर्ण विश्वास है वह सम्पूर्ण समाज की क्रान्तिकारी शक्तियों को देख बागे बड़ता है। कभी कभी अपने वेयक्तक दर्शन है वह निराल भी होता है-परन्तु यह सोचकर फेरे से दाल-दल व्यक्त है- वह पून: वास्तवण बन जाता है। वह यह पी बागता है कि जनता शान्ति बोर कल्याण बाह्यती के बोर उस कल्याण कामना के पीछे-संभवन जनता की दूसरी की विश्वास है। यही कारण है कि इनके काव्य में बास्था बोर विश्वास के खर विद्यमान है नें।

शोषकों ने गरीबों का किल्ला शोषण किया है। रूप-रूप से शोषित जनता का पूर्ण-प्रताप जब सूर चुका है। फिर भी कवि निराल नहीं हैं। उसे विश्वास है कि 'युग' की गंगा' जब वायरिगी तब युग-युग से पूरी-पूरी घरी बन करने के:-

"पूरी प्यारी

पूरी-प्यारी दुख हिर धरती को हस्ताक्षरियों की

रूप की गंगा

अवरोधों को देनें ना।" (रूप की गंगा,संदर्भः फु ७५)

हत्ता की नहीं कवि को पूछता विश्वास है कि निश्चय की एक दिनक:-

पत्नी मूल किया कोहरा राग में

प्यारी धरती को क्षारीण किया। (वदी फु ३३)

नागाश्री व महारानी-की अत्य व प्रति बढ़ी बाहर है, मांगामाहा है।

विश्वास स्थिति व पी कवि नाग के प्रति वश वास्तवण है। उनी तो कहता है:-

""गार बा रहा कोट बाटो पूरी पुनर्के लिए

विराट सिलासभाओँ--- (रूपाला-नागाश्री,फु ७५)

समाज में कविमत्ता की ध्वनि लगी है जिसे पाठना बरसात है। युगों ने वह अक्षमाता की कहानी चठी बारी है बोर बूढी रही। परसुप उसकी ध्वनि उसे पाटकर समाज की स्थापना करता चाहता है। पूर्ण है कि बन तक शोषकों का
वन्द नहीं श्रंगा तब तक समानता की कल्पना के लिए संदेश ही सकती है। यह असम्भव नहीं तो कठिन तो क्षय है परन्तु फिर भी कवि बड़े विश्वास पूरक कहता है कि:

"कृपा भारी भी चरी पर
शुष्क समता के पुरुष हिलोगे
गही-गही आमा उठानी
स्नेह मरे-श्रीप झुलोगे।" (विश्वास बढ़ता ही गया: सून: पृ॰ ३४)
कवि का विश्वास तो वहां वर्तङ्ग वर्षा है वहां वह विषयक की कहानी को समाप्त करके सब के लिए वर्षा, मौजून, वन, पानी सूखा करना चाहता है:

बाहर हूँ खंस कर देना विषयक की कहानी
तो सूखा सब को काल में, वर्षा, मौजून वन में पानी।।
(विश्वास बढ़ता ही गया: पृ॰ ४)
यह तो सून की तारीख बाहर विश्वास रहा। बब हाँ रामविलास सर्सरा का भी क्षमा
विश्वास हूँ जन पंक्तियों में देखें:-

"नहीं फसल देखी फिर, चरी लपरों से पुलावायी
सात बनो मुख बौर हत्या के लिए विश्वासारी।" (रूप तरंग) पृ॰ ६८)
रामेश राघव में यह सब बौर भी सूक्ष्मता भुक्ता है। कवि सारे विषय को
प्रकाशमान बनाना चाहता है। उसे जन-जनक पर पुरातत्त्व विश्वास है। वह, सन्यस्त जानता है कि जतना पिछः दिन जनें विकृत रूप धारण करने उल्लेख विषयाओं का दर्प
पूरा हो जाएगा। समाज में श्रोणियों के प्रति श्रद्धांजलि उत्सनो नहीं करने के लिए कवि खयं नेता
बनने की बात करता है:-

"तो खुद-खुद का अंकर संगीत
बदलें विनियम का माध्यम
रूप हैं नववृत के बगौड़
श्रोणि का करने दर्प-पूरा।" (रूप) पृ॰ ३)
इस प्रकार की बास्तवित लिखित के सभी प्राचीन कवियों में पाई जाती है।
उन कवियों के काव्य संवेदन के प्रकार में उने विस्तार पूरक इसका विषय प्रस्तुत किया है।
युजराती के प्रसिद्ध कवियों में भी हिंदी के कवियों की माता बाल्या योर विश्वास का स्वर दिलाई देता है। इन कवियों की कविता सुनृचामाव से मरी पढ़ी हैं। जिसमें पौराणिक की ज्वाला योर बोल है। कवि श्रीधरप्रसाद कवियों के मयूरक्षेत्र द्वारा वास्तव करने के लिए उपभोगत करते हैं।

कवि योर बोलता है।

स्नेह कहाँ बाल्य महनी योर।

कवियों के विश्वास है कि क्षान्ति के ब्रह्म की शान्ति की स्थापना हो सकती है।

स्वीकार यह वद्य क्षान्ति की बात करता है:

"बहु वीर वीर बो। विधि ना चढो शान्ति न कर।
बही-फली उठी करो वद्य नाद गो क्षान्ति न बो।"

(कौमिन्त: २३५)
करके करके तुम पुकार हृदय मां, कठा, उठ तुं उच्चे व्योम :
बम मस्तक पर रहे फतहवो,ज्या लगी नम यां दुख गोम ॥
(पलक: स्त्रेह राम: पु ६२)
फेरीमंद देवानी कीन-छंदों को बगाकर,क्रांति उत्पन्न कर बपनी वास्तव को पुकार करते हैं:-
बागो, जाना दूरवाही: बागो दुख-बश्कत
हन्साफ की तल पर कराह जागो,(श्रवण-जन: पु ८५)

इस विवेचना से हतास बहर स्वर्ग होता है कि जिस पुकार की स्तुति वास्तव वोर विश्वास की भवना हिन्दी के कवियों में दिलाई देती है उस पुकार की गुजराती कवियों में नहीं पाई जाती है। गुजराती के कवि भी क्रांति के द्वारा समाध का पलिनीत करता व्यक्ति बाहे हैं परन्तु वास्तव, विश्वास वोर फेर जो उना सशक्त वर्णन नहीं मिलता जितना हिंदी के कवियों से भन पड़ता है। उद्योगनाल्पक,शृंखला के लर्न व्यक्ति ही सुप्रित हूँ।

दासता से मुक्त की वास्तवा स्वप्न वन्दा रुपी दुःख:

यह देखा जाय तो भारत की ज्ञ-म्य सभी माणवावोंका ६८ की शताब्दी के पश्चात का साहित्य स्वतंत्र ता की प्रेरणा से व्यक्ति प्रभावित रहा है। हिंदी साहित्य के बालक काल का प्राचीनकालीन ६८ की शताब्दी के माना जाता है। मारतेन्द्र जी के बागमन से हिंदी साहित्य में एक गृहान्तकारी परिलक्षित होता है। वेश मुक्तों की दासता के पश्चात कवियों का दास बना परन्तु युगीन कवियों के कामों पर जुः तक नहीं पड़ी। हिंदी में मारतेन्द्र जी के बागमन ने तथा गुजराती में नरम बोर दलमा के बागमन ने साहित्य को नहीं दिखाया तथा साथ की दुःख की वाक्या भी व्यक्त की।

मारतेन्द्र जी ने किस रक्ष-रूप से प्रेरित होकर दुःख की कामना की थी वह दिलेली युग तक तो गतिमान रही परन्तु भावावाद में बाकर वह दुःख प्राप्त हो गई। भावावाद के कवि प्रादूर्ग,प्राण वोर इस्वार की रहस्यमयी शक्ति के गुफ्ताप में ढो रहे। उनकी दुःखा वहां तक गई ही नहीं। वन कवियों का युग-रूढ इतिहास हो दुखा था।
भमाज से पराणन्द होकर काव्य-सुन्दर में को हुए थे। यथार्थ- खुश-चोथ से भी वे प्रभावित नहीं हुए। यही खुश हाल गुजराती साहित्य में थी था। पंछिय खुश के कवि प्रकृति, प्रथु पश्चिम बोर प्रणय के चित्रण में ही कपना पारंपरिक प्रदर्शण करते हैं। खुश-चोथ तथा समाज-बोर से उदंत हनके झुंझ हें मुक्ति की बाणांगा थी की नहीं। इसका विरोध कालान्तर में खुश।

हिन्दी में, यह गुलामी से मुक्ति पाने के लिए कविता का आदर की जाती कर रहे हैं परन्तु उसमें उदंतान या दशक में नहीं थी। दासता से मुक्ति पाने की मांगा तो बन्ता हें दुर्दृष्टि की परंतु उसमें गतिशीलता नहीं या पाये थी। उसे गतिशील बनाना का गुरुत्व काव्य प्रगतिशील कवियाँ ने किया।

गुजराती में यह मानना का जन्म लागू 1530 से होता है जब महात्मागांधी बघीरका से एवं हूसब वर्ड कर आये। महात्मा गांधी के नेतृत्व में जब जनता ने बपनी मुक्ति के प्रवर्तक का बौद्धिक मत किया तब कवियों का अपना उप तपाई गया। फिर तो गुलामी से मुक्ति पाने के लिए कवियों की बातना बढ़ता उठी।

प्रगतिशील कवियाँ ने दो प्रकार की दासता को देखा:- एक तो बपने ही घों कोशिण के द्वारा गरिवों को दस्त बनाये हुए थे तथा दूसरा पूरा देश कमों बारा गुलाम बनाया गया था। हस्ते मुक्ति पाने के लिए कवियों ने बनता में कपनी कविता द्वारा प्रत्यक्षिका की ज्ञाता पाने का प्रयास किया है। राष्ट्र-बोर, तथा समाज-बोर हें नहीं बल्क बन्तराष्ट्रिय-बोर से प्रगतिशील कविता का विचार बना। इनका मानना था कि समाज का उद्दार तनांक में जब वह स्वतंत्र हो वो समाज की स्वतंत्रता तो राष्ट्र की स्वतंत्रता पर ही निर्भर है। हीलिख हन कवियों ने राष्ट्र की स्वतंत्रता के प्रचार कपनी राष्ट्रीय व्यक्ति की है।

हिन्दी के कवि के दासता से छोटा बपनी कवियों के जीवन में जीवनों को संघर्षित करते हुए बाणांगा को निम्ति उनके का बात करते हैं:-

बाणांगा की हर पत्तन को
भारम्पूर जिल्हाये बा
अपनी कुटिया की जिम्बाब्वे से
सब में बाण जाये बा। (डॉक्टर बालिख: 163)
गुजराती कवि सुदर्शन की सुरक्षित की वाक्रंद्रा को इन स्त्रियों में देखने:-

बल सकल पाले उतर जो
क्याता फंसे वे, दुख न की पाल कल्पो,
फण खन ना मंड कर जो,
दुख ने मार सकुं झाराने य घरौँ । (काव्य मंगल: पृष्ठ ९१)

कवि म्यांका सुपुर्ण में दासता से सुरक्षित की भावना बोर की पुष्प हो उठी है। सुनों से पड़ी फुल दासता की बैलिमाओं को लोढ़ फूलने के लिए कवि बाहुल्य करता हैः-

बारी उड़ो चलो जल्दी
समरांगण में खुराम समाने
पीकर किसका दूष खड़े हैं
उस माता की छात्र बचाने। (जीवन के गानः पृष्ठ ३०)

मनुष्य के कवि पालता से सुरक्षित पाने के लिए विद्रोह करने की सखार देता हैः
हां पलक्षता के जीवन से
विद्रोह करो, विद्रोह करो( जीवन के गानः पृष्ठ ५२)

कवि उमासंकर बोशी मनुष्य की गुलामीको देख कर हिन्ना हो उठते हैं।
मुख्त-बाग की असूरतिनिशि मनुष्य को ही गुलाम बनाया गया हैः

है गुलाम !
मुख्त बाग तुँ बसूल कूड़ मानकी गुलाम।

- - - -
स्वतंत्र प्रेमतित तमाम
कै मानकी ज का गुलाम ? (गंगोत्री: उमासंकर बोशीः पृष्ठ ३)

जब सारी प्रेमति शुक्ल है तो क्या कारण है कि मनुष्य जो सब से केवल है वही गुलाम बनाया गया है। परन्तु इस गुलामी से सुरक्षित पाने के लिए कविता कहता हैः

ज्वाला बुढ़ि हिंदुर पालिके के,
काने महा गान स्वतंत्रता तुँः (गंगोत्रीः पृष्ठ ६४)
परन्तु जोडी की क्रियात्मकता वैश्विक नहीं है या मात्र मार्ग की नहीं है बल्कि पूरी 
मानव जाति की है। सारे मेड-माव को मूल कर कवि विश्व-मनुष्य की कामना करता 
है :-

वे तो गृहीत शून्य-युक्त पर एक अंधकार,

गमारा स्वायत्तः प्राण बने बेहुल-मानता। (विश्व शास्त्र : १६)

हसमे कवि की बल्लाधुरीय मानना की व्यक्ता छुए है। बाहर भी देखिये :

पुजा-प्राण ना उर-स्वरस्य-ताने।

gृंजी रहे उभित बेहुल प्रेरणा। (गंगोत्री : २६)

प्राणिकाः कवियों ने स्वाधीनता प्राप्ति के लिए महात्मा गांधी के अर्थकाः 
के सिद्धात को नहीं अपनाया है। उसका उनके लिए कोई महत्व नहीं। वह स्वाधीनता 
के लिए यात्रा करना उचित नहीं समझता। वह स्वतंत्रता व्यर्थण करने वालों के 
विरुद्ध बार करने के लिए समृद्ध तत्पर है।

स्वातत्त्विक माद्री धूम का बिराट प्यार 

यात्रा प्राणी, संपाल बाजा दार। १

प्राणिकाः कवियों में बल्लाधुरी की मानना है :-

' वे समाज या से बेड़े, वैदिक पर कठिन प्रथा-बाग 

ब्राह्मण का रहे, बल कितना बड़ा, गाँव त्यांने विश्व रागों

देखिये उसकी हस बल-मानना के मूल में बलिदानक बुद्धि नहीं है। वह विश्व बल 

राग गाकर विद्रोह की बाग से दासता की बुद्धियों को बुरा बदवार कर देना चाहता है।

श्री ज्ञानाधि पुजार शिवंदु से भी अपनी व्यस्त क्रांति का गीते शीर्षक 

कविता में सन १९४२ हि की जनता की स्वतंत्रता प्राप्ति की दृष्टि हेतु बाहर बल्लाधुरी

1 रागीय रासाय: अगु. मार्च १९४२ : पुस्त. ४११
2 हीरा: बंग्लाह : पु. ५
3 संस्कृत विश्व राग: मन्नतन्त्र: पु. ६-६
मानना को व्यक्त किया है:-

जब तब वास्तव महाराणी सरस्वति श्रीवत्त के वास्तव-कवि रण में वह एक रक्त वात्स्यम करने का हो बाकी उसके भाषण तब में तब तक उसके स्वर में खंडाद रहे राज्य का प्यारा है स्वतंत्र सब माता-पिता, मातापिता स्वतंत्र हमारा।

गुरुराती कवि श्रीवत्तनी ने भी यही प्रकार के खर को जल्दिह किया है:

कावो गुजारो, बाबो पीखियो,
तेलहिस प्रियो मनो संतान।
सब दिशा माता कान विदाहरी
गायको माता, ई गुजित गान (कोटिया: ३० ५४५)

राष्ट्रीय शाखा बजाबन्द ने गुजित की बहुत बड़ी महत्ता है। वह स्वतंत्रता की बीढी सुखा को पीने के लिये लगातार तिने हैं:

तारा नाम मान, बो स्वतंत्रा, मती का श्री वस्त्राण नहीं, पुरुषां मराणों बी बागला- केंद्री श्री लाल सुधा मरी।

( शुक्लनीति: ३० ६३)

यह प्रकार सभी हिन्दी बोर गुरुराती के प्रगतिवादी कवियों में राष्ट्र-विभेद से सम्बन्धित कविताएँ मिली हैं। परन्तु हर कवियों की मानना राष्ट्र-विभेद के ही निर्मित होकर जुड़कर नहीं हैं। उनमें वन्नराष्ट्रीयता की मानना पी विलास देखी है ।

राष्ट्र-विभेद से सम्बन्धित प्रगतिवादी कवि वन्नराष्ट्रीयता के विरोधी नहीं हैं। उनकी दुर्ज्ञात वन्नराष्ट्रीयता के विरोध में नहीं फंसी है। बलि उसें उपर उठ कर विश्व मंगल की कामना करते लगे हैं। हरकें मजबूर बोर विश्व के कामना बोर मजबूर है। बिस तरह हरकें उपर समाज, गाज, देश की फंट गाज कामना कहे उसी प्रकार पूरे विश्व मंगल-कामना करते रहे हैं। सबका ही हर प्रकार में

['बलि विश्व के गीत: ३० ६५']
हस मांसन का साकार सुप स्पष्ट होता है:-

मुफ्ति अमरका का खिलती सेंद्रू हतना ही प्यारा है,
जितना तातको का ठाल तरारा
बौर मेरे दिल में पेशिंग का स्थानिय मज़ह
मक्का-मदिरा से कम पश्चि नहीं
में कारी में उन बायरों का शरणाद सुनता हूँ
जो बोला से बाएँ
पुरी देशी में तुरायाद की तपस्याओं की नामांकों की बोधित पर
शुद्ध के हिरण्य कुष्ठ को बीर रही हैं। १

प्रातिमाके कवि क्षतिया का ही जुबारी नहीं वह शान्ति का नीचुबारी है
जिसमें विकल्य व्यापकता की भूमन है। कवि बदेश देता है:-

" बूरी थी भीजाबी ने पुकालो सत्ता केबी थी
शान्ति नो बये ने माटे मार्ग ने के बीजो न थी।" २

कवि की बन्दरबंधी मायनों की यह निम्नांकित पंक्तियाँ उपभाष मूर्त्त हैं:-

अबुररा ना खुश कालो मधी
काबाबी के अन्तर एक तारा
- - - -
ने सच्चे सच्चे सपे मिलकी
गजाबी बेहो सो जग उबरे उभी। (विश्व शान्ति: ५० २४)

इस विशेषते यह स्पष्ट थाट होता है कि हिन्दी बौर जुबारी दोनों की
मायनों के पुरातिमाके कवियों ने राजपूतों बौर बन्दरबंधी-दोनों पुकाल की
मायनों को पुधुत करते छूड़े सवजन छुड़े दातावरण का निरीक्षण करता वालमह है।
पुकाल की बांकार,गारे गाय की दुःख की बांकारा हमें है। हस कीसुकि, हनुका
ढूम,माना की विशाल "मूर्त्त" पर वास्तवित है। कहीं भी संकीर्ण मनोदुःथि का वाला
मास नहीं हैँ।

-----------------------------------------------
१ शरसे: बसन की राती: शुद्ध बौर कविताएँ: ५० ३५
२ विश्व शान्ति: उपासक बाबाओ: ५० ३५
खु-पूरा गांधी के प्रति वहसावाज़:

महात्मा गांधी खु-पूरा गांधी थे। वे व्यक्ति थे परन्तु व्यक्तिशकर भी वे एक पूरा समाज थे, देश के और विदेश भी। वर्तान्तु वे किसी व्यक्तिमात्र या समाज के लिए नहीं थे बलिक पूरे मान्य-समृद्धाय के लिए थे। वे देश के पुराणी तो थे ही, युद्धार्थ एवं विशिष्ट की बाबाधाता तो उनके पर न ही पहले सत्य और वास्तव के बल पर ही वे स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे। देख संयोग से हुआ भी रहा ही। ऐसे बापू के कर्म और वीण से लघुमा सभी युद्धी वाक्य प्रभावित रहे हैं। यह शीघ्र नहीं बलिक गुरुधारी साहित्य तो हत्तनामाखानित है कि उनके नाम पर ही एक खु- पूरा नामकरणाभी हुआ-गांधीय।

गांधी के प्रति हीही और गुरुधारी के लघुमा सभी प्रभावितारी कवियों के खु- पूरा का प्रश्न या प्रश्नी प्रयोग में कभी श्रद्धा के प्रसन स्वर्द रहे हैं। उनके सत्य-वास्तव के श्रद्धा की प्रश्ना करते हुए श्री धराराजी कहते हैं:-

खु ने वे प्रेम करी ने,
हच्छी ने बने दुः भिंत
सत्य करे ढाय विलानो...।
कसत्य नां विगलिखा प्राणा
वदरुपुर के बापू नृ- वाातः (कोईया: पृ ७७)

बापू का पारिधि शहीद हस संसार में नहीं रहा। परन्तु ज्ञान वे सदा-स्वाद के लिए मिट गए। नहीं- बमर हो गए। वे फिटरा की बमर हुए हो गए:

'बोहि' यथा के बापू के बांटा ही जीवं मात्र वर्णी (कोईया: ४५)
बापू ने पूरे मात्रवर्णी के लिए वपने को शब्दक की मेली पर होम कर दिया।

श्री धराराजी ने उन्हें मात्र मात्र वर्णी तक ही देखा है। उनसे पूरी श्रद्धा का ही प्रतीक माता है। वे शुकराट की प्राणी ऋषापती पीकर भी श्रद्धा की मात्रात्ता को विशाल रहे हैं। कवि के उद्वार देखिये:-
पी गये स्थाय जिससे ज्ञात
सदियों तक बमुल फिया करे,
दे गये बायु बाली जिससे
माँगता सुन सून फिया करे।। समन: बापू के प्रति-प्रियता)

श्रीधरणी बोर सुमन जी की हन पंक्तियों में कितनी माय सब्जता है।
ऐसे ही युक्ताती भाषा के राजमहोब हामर केयर वन्द मेयाणी की भी पंक्तियों
देखिये किसमें गोलंदा फ्रस्थान े के क्रास पर कवि जहाँ का बत्ति प्यारा भीपी
जाने के लिए जिसवत करता है:

हैलो कॉटरो फॉर नी बां: पी जब के बापू;
सहर पीनारा न कोटि का ढोलो बापू: (समवर्तन: ५१)

वह जुटान के प्यारा को पी कर बापू शंकर कीमांटी जीवन देवी बमुत का दान
करते रहे:

मुख्य नां नाम थी फोटी ने मरी, बभी बंधा बंधा नी उलेखतो,
सबू ना फॉर नी फूटी फिया, बभी बधी संक्त विश्व रेत तो।।
(कोटिया: ५० ९५६)

नागालू ने बापू के निकल को भिट्ट रूप में देखा है दिखीये:-

बनाय बी हो गई भारत माता
बब बला होगा
बन्धुरान ही बन्भारार है
हाय, हाय हम रहे कहीं के नहीं
छट गये... १६

पिंगल नआ बापू ने बापू को सेवक बमर ज्योति जगाने वाले, घर-घर बहल जगाने
वाले, दूसरों की पीर को पसने वाले, सत्य-जुल के प्रेमी वोर दीन-हीनों के माहिक
रूप में देखा है। उनकेरका बहर कवि ने बप्पू बेदना को हन शब्दों में व्यक्त किया है।

----------------------------------------

१ सं: पानच: ६५५३ कोक -६ फू ५३०
जन से के लिए इस नवने बमर जोत जहाँ गरी बलस करता फिरा, मूँ मसाह दिन रात पश्चिम रहा, जो पीर पराय वाक बनायों का दीन-सीन का पाहें वह सम-प्रेम-दोम मिलारी चढ़ा गया वह चढ़ा गया ।।
- पर बाकी नहीं मरीं:: वह चढ़ा गया : फू १९२-१९३

पुस्तक राजस्थानिका पिता बापू के प्रति बोल सभी अर्थ में सु-पूरक थे, सभी प्राचीन (हिंदी और गुरूराती) कवियों ने आपना भाषमाल व्यक्त बिखा है ।

इस वस्तु पदा के व्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इन दोनों की माथाबाएं हिंदी और गुरूराती के प्राचीन कवियों में बहुत विभिन्न समान है। वह हम शिलप की दृष्टि से भी हमारा व्ययन करते ।

शिल्प पदा:

सौन्दर्य-दुर्बल हिंदी कवियों में, प्राचीन हिंदी कवियों ने, जिस प्रकार सुन-बेलना के बुखार कीन माता-बाप की प्रतिष्ठा की, उसी प्रकार शीन्य भोग बाप शिल्प सेना के प्रेम में नी उसने कपली कीन खागाजुङ दुर्बल का परिचय दिया है। ज्ञाति कविता पर एक बारहे ज्ञाता जाता है कि उसनों काव्यम सौन्दर्य मूल्यों की उपेक्षा कर शिल्पकार कर्मचारी के बारे विषयों व्यान नहीं दिया है दिसकर ने जिखा है ज्ञाति कविता का भाष बाप कवियों के सामान्यिक विवरण पर था। उसे इस वात की प्रति: कोई चिनता नहीं थी कि ये बि-चार खुद कविता की देखी में व्यक्त हो रहे हैं या गह क्या रित ते ।।

1 प्राचीन हिंदी कविता: फू २४४
2 काव्य की मुम्किन: फू ६४
कविता में विचारों को प्राप्त युग्म बनाने के लिए कल्याणक हलका उपकरणों के
प्रति हम कवियों में उपेक्षा माफ तो कस्म सा है। प्रागैतिहासिक कवि श्री केदारनाथ
बगवान ने भी इसे स्वीकार किया है :¬ "बहुं हिन्दी की कविता न असे की
प्यासी है, न बल्किरन की हंसने है, बोर न संगीत की तुकान्त प्रकरणी की मूही
है। मनवान बहु उस के लिए व्यर्थ है।... बहु वह वाक्षी है- यथार्थ की वाणी, नभूत की वाणी, बोर जन जन की वाणी।"।

प्रागैतिहासिक कवियों ने काव्य जीवन के प्रारम्भ काल में मले ही प्रागौरात्मकता
के मोह में बाकर काव्य-सौन्दर्य का उपचार की हो परन्तु बाद में उनकी दुर्लभ परिधि‌
कृपा है। कविता को कल्याणक सौन्दर्य-क्षे इत लाता है संपूर्ण बनाने की आवश्यकता
को उन्होंने बाद में स्वीकार किये हैं। यद्यपि के निःस्वार्थ भी प्रामाणपूर्वक संगीतों में,
इनके माहों में हो सकता है, जब कलाकार की वह क्यूंदियता बोर गम्भीरता उसे प्रदान की
जाये।।

"यथार्थवाद कलाहीन, भवान आदुकृतियों से दून नीस साहित्य की रचना
नहीं है, न राजनीतिक इतिहासवादी का नाम यथार्थवाद है।।"

"प्रागतिशील कवि की सौन्दर्य दुर्लभ की सब से कड़ी विशेषता यह है कि
उसने सोन्दर्य का गत्र काल्पनिक या स्वाभाविक बने की जोड़ा उसे जीवन बोर
यादी के टोप वर्तक पर स्थापित किया। प्रागैतिहासिक कवि की जीवन-सौन्दर्य
में ही "सुन बोर सोन्दर्य का दर्शन होने लगा। पन्त जीवी "सुन दुर्लभ शीर्षक
कविता में हस स्त्री सोन्दर्य दुर्लभ की ही व्यंगना हृद है:-

कु त गये न्द्र के बन्ध
प्राण के रक्त-पाश
बसी तुका,
बोर, दुन-न्दाप बहुस व्यक्त।।

1 प्राकृत: सुन की गान: पुस्त 8 ग।
2 बल्की बाल: लोक की बालक: केदारनाथ बगवान: पु प 6।
3 साहित्य की समारोह: तिहादासिंह जोहान: पु प 6।
4 प्रागैतिहासिक हिन्दी कविता: राम द्वारकप्रसाद काटा: पु प 2।
कवि के भावमय मान
ज्ञात के रूप-नाम
जीवन-संवरण देता सुहः
ज्ञाता जमाम ।
सुन्दर, वित, लक्ष
कहा के कहित माप-मान
बन गए स्चुक,
कह-कीवन शे हो एक ग्राणा ।१

शिल्प-विधान:

प्राणसिद्धि कविता का शिल्प-विधान उपस्रवत होन्व्यथे से ही प्रमाधिक श्रेष्ठ
प्रेरित रहा है। शिल्प-विधान का बहुभावन निम्न शीर्षकों के वर्णण वरिष्या फूलक
शिखा जा सकता है।

१ काव्य-रूप
२ विभ्य-धोपना या रूप-विधान
३ अखंड योजना
४ प्रतीक्योजना
५ बृहद विधान बोर ते माणा तेही

काव्य-रूप:

हिन्दी और गुजराती के प्राणसिद्धि काव्य के बहुभावन से यह ज्ञात होता है
कि इस ग्रंथ के कवियों ने मुख्य रूप से (क) वास्तवान रूप (ल) गीति काव्य (ग) खयाल
रुक्त स्वरूप काव्य की रचना की है।

सूक्ष्मावली : पंक्त ४४
(क) वास्तवात्मक काव्यः

प्राचीनकालीन कवियों द्वारा रचित प्राचीन काव्यों को महाकाव्य या लघु काव्यकी सास्त्रीय परिभाषा के बनस्त शैली में नहीं लिखा जा सकता कारण उन्होंने महाकाव्य या लघु काव्य के शास्त्रीय तद्भव नहीं को ध्यान में स्मरण बनाया की बनाया की निर्माण का स्मरण नहीं किया है। इसलिए इन कवियों का महाकाव्य या लघु काव्य की वह विनय देने की क्रियापूर्वक वास्तवात्मक काव्य सत्ता देना वास्तविक प्रभुत्व होता।

पूर्व हिन्दी के प्राचीनकालीन कवियों ने केवल रागमुखार रामचरितमिहर 'दिका' ही ऐसे कवि हैं जिन्होंने वास्तवात्मक काव्य की रचना की है। दिकाकुर के वास्तवात्मक काव्य हैं 'हुरदेश' और 'राक्षस रथीं'। इन्होंने एक व्यस्तरागुच्छ, वास्तवात्मक काव्य के रूप में प्रस्तुत की है किंतु उसे प्राचीनकालीन रचना नहीं कह सकते। यह है 'उर्ध्वि'। 'हुरदेश' में 'सुलद' एक समस्यापूर्वक काव्य के जिनमें वास्तविक युग की एक व्यक्ति समस्या उद्देश्य के समाध्य में कवि ने कुछ सागर विचार व्यक्त किया है। राक्षसरथी में कवि ने कुछ के उदाहरण चित्र का बंकन किया है और उसे दृष्टियों और पीड़ितों के नेता के रूप में उपस्थित करता चाहा है। वर्ताला यह काव्य के दृष्टियों जीवन की समस्याओं से ही उल्लिखित है।

उद्देश्य प्राचीनकालीन कवि के रूपात्र रामचरित काव्य की तीन वास्तवात्मक कुटियाँ हैं, 'ब्रजेश्वर', 'मेघालाई' और 'पारंचली'। 'ब्रजेश्वर' में कवि ने 'स्ताविक' के उद्देश्य का माध्यम वर्णित एक समाजकालीन देश के प्रति बनाते विचार प्रेम और व्याख्यातारात्मक विचार विषय का प्रतिक दिया है। 'मेघालाई' में कवि का जीवन का व्याख्यात व्याख्यात व्याख्यात व्याख्यात गुरु किया गया है। उसमें कवि के दृष्टि में वर्ण, वृहत्, विशाल, काव्य, समाज-शास्त्रीय बाद देखता बना का समीक्षण बुद्धि है। इस 'मेघालाई' में महामार्ग के एक साधारण जीव के वापस वापस बाद नीन युग की नारी, समाज, राज्य, प्रेम, कैलाश बाद का हृदय गया है।

1. धार आनंदाधिकारी काव्य ने मैं 'उर्ध्वि' को प्राचीनकालीन रचना नहीं माना है।
2. मेघालाई - प्राकाश

---

613
हर कृतियों में रचना शिल्प की दृष्टि से किसी विशेष मोटिकता का दर्शन
तो नहीं होता परन्तु सस्त्री में बाह्यिक युग का बौद्धिक बोर वेतानिक वालावरण
कस्य मुखित हुआ है।

शुरुआती के प्राणिवादी कथायें में कोई उपाधिक बौद्धिक क्रिया है जिन्होंने
बालानिक कथायें की रचना की है। उनकी तीन कृतियाँ ऐसी भिक्षुः हो जो हरायी
क्रिये में रही जा शकती है। "विश्व शास्त्र" "प्राणिनां" बोर "महाप्रस्थान।

"विश्वशास्त्र" 6 लघु क्षण में गांधी की गो गलाणा वालेकूलक कृमीें
की मायाका से बनानाताक होकर लिखा गया बालानिक कथाया है। इसमें गांधी की
बाला बौद्धिक बोर शास्त्र की स्थापना के लिए दिये गये प्राणियों का वर्णन करता
है। इसके लघु क्षण में गामीयाँ, भूमिका समूह कल्पनामयता है। प्रशान,मार्ग, भिस्टाङार
या स्थानिकता स्थान परिमात या है।

"भूमि प्राणिनां" सात कपड़ों का संग्रह है। कथा वस्त्र प्राणिना हे फिर भी
न की जीवन कृपा का संकेत इसमें कपड़े ने लिखा है। यह शुरूआती शास्त्र की
कार्यकृत कृपा है। दात का डाटा ने इसकी व्युहता का संकेत करता है। वर्क की
"सिस्तर" की रचना की है। "कपड़" की प्राणिनां का कपड़ा भी
पूरा पात्र समाज के मेंस के लिए युद्ध करने का उद्देश्य है।

वहं रागरो हर समाज " (प्राणिनां: पू ६६)

"महाप्रस्थान" प्राणिनां की मान्यता फ़र्रक है इसमें पाठकों के नाम पर
सात कपड़े हैं। "सथ्राप्रस्थान, रूपिविष्ट, कपड़े, उद्धार, कपड़े, तथा निम्नश्रेणी।
यह कृपा की जीवनात्मकता मायाका की एक नवीन दिशा का संकेत करती है।

गीतिक कथाय

इस युग के प्राण: प्राणेक कपड़े ने वापिवक्त के लिए गीति के माध्यम को
विकास करता है। इस दृष्टि से हिंदी प्राणिवादीकथायें में दात "सिस्तर" लिखे हुम्वे।

1 बाह्यिक कपड़ा प्राणिनां: दात का डाटा पाठक: पू ६६।
केदारनाथ ब्रजवाला, गिरिजाकुमार माधुर, रामी रामचंद्र बाबादे को विषेष उल्लेख सकता निही है। इसके गीतों के प्रमुख विषेषताओं का विषय, तथा निरंतर बदला का वायु। केदारनाथ ब्रजवाला का निम्न गीत उक्त दोनों विषेषताओं को प्रस्तुत करता है।

बीसर उठाओं मेरी पाकी
मैं हूँ सुहागिन गोपाल की
केला है कृत्रियां के मान की
कृत्रियां के मान की
बीसर उठाओं मेरी पाकी।
बीसर उठाओं मेरी पाकी,
मैं हूँ सुरूविया गोपाल की
केला के गीतों के तात की
गीतों के तात की
बीसर उठाओं मेरी पाकी।(हीर बोर बालोकः फु.४५२)

जन गीतों की लेनी की प्रकृति से 'सुपर' जी की मास्कों का भी दूर है' तथा नरेन्द्र शर्मा लाल निसाने विषेष रूप से उल्लेखनीय है। निराजा ने 'कक्ष' का प्रयोग कर जन झेल का परिप्रेक्ष्य दिया है। यह पंक्तिया दस्तीनी है:-

* काढ़ काढ़ बादल बाये न बाये बीर कालशाल
केशे भी नाव भंडारिये, न बाये बीर कालशाल।
बिजी जनक मन की खोली, कर्म सरी सोपी बाँधी,
सर पर सर घर करते बाये, न बाये बीर कालशाल। वेळा:४४

गुजराती के प्रमुखतापी कवियों में भी गीति काव्य की तलाश की है। इस
प्रकृति से उमावंतर बोशी, सन्तरासिंह, श्रीराम्परी तथा महेश्वरी नवायिणी के नाम
विषेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बोशी की जा 'मिली' को काव्य मनोहर गीतों का संकलन
है। इसमें विशेष बोर रूप का विविधता, सौंदर्य एवं गायनीयता के साथ उत्कृष्ट बोर
भी प्रवेश करता गया है। फ़ियास्ते यज्ञना करते युत कवि का यह दुस्स्कर देखिएः—
सब केंद्र बिन्दु गहि:
क्य पाया प्रणामान्तो दुरां
कबि हुं, जीतता मुझो छूँ
करो माँहि ज्या भुलाति हि। (निष्ठि: १० ५४)

स्नेह राष्ट्र में विशेष स्मृति से गीतों की ही रचना की है। जिसमें ये सिद्धस्त
भी हैं। संगीत माहूं "स्नेह राष्ट्र" नां गीतों तुं बनाए बलाने हैं।

हनके गीत बढ़े ही सरल सीखे बोर कर्ण मुझे होते हैं। यह पंक्तियाँ उद्वित हैं:-

पूरे के हैं बाबे जो बड़े
सिनघ तारी क्रया,
बंदीगाने मुझ तारे,
नामे बापारी क्रया।

tविश्व दुख राहि तारे,
कोह ए से तो बांगना माहे
केम करि हुं पूरू उतारि---
अया
जब तारी बनरी ? (पनक्ति: ५० ६५)

फहरें चन्द मेघाणी गुरुरातिसाराहित्य के राष्ट्रीय शायर माने जाते हैं।
उनके गीत जन गीतों की श्रेणी में है जिनमें बोध है, जीवन के बोर साधन है। ये
प्रणामान भाषा के गायक हैं। वहां पर स्वतंत्रता से सम्बन्धित लोक गीतों में पोषण
की ज्वाला है वहां पर त्राण गीतों में माहूं श्रेणी की बटा भी है।

पावां रात हुं केव्र विद्वानी
बागीश तारे केव्रे रे;
हुं पलम कवळ प्रापते
नीर्मित बदन हस्ति कबे रे ( सुन वननां: ५० ७६)

१ साहित्य विवेकः वनन्तराय रावः ५० २२१
यह प्रकार दोनों की मात्राओं के शैली हिरी कवियों में यह गीति-वाचना पाई जाती है।

सुक्तक काव्य:

सुक्तक काव्य की रचना प्राकृतिक अवशेषों की प्रयुक्त स्थापना की है। इसकी चित्रण विशेषता से सुक्तक कव्य की प्रकृि जति है। इन्होंने परम्परागत एवं विशेष निर्देश दिने के प्राकृित कव्य का विनिमय किया है। परन्तु संबंध उसका विशेष निर्देश नहीं किया है। प्राकृित परम्परागत कव्य को बहुत कर काव्य रचना तो किसी भी परन्तु हनका वासुरूण रहा है सुक्तक कव्य का प्रयोग। प्रकृित के साथ यह ही इन्होंने कविता कामिनी को भी सुक्त कवाना बाहर है। इसका विस्तृत विवेचन "भूत विवाह" के बनारस किया जाता है।

बिम्ब-योजना या रूप-विवाह:

बिम्ब निर्माण की प्रकृित का काव्य में रूप-विवाह कशाती है। वस्तुतः काव्य का बिम्ब से हलता घनिष्त सम्बन्ध है कि उससे रचित, प्राकृितकाव्य की बनपना ही नहीं ही बना सकता। बिम्ब का सामान्यतः: उस जित्र के रूप में ग्रहण किया जाता है। जिस प्रत्येक काव्य-रूप के लिए उसका श्रद्धा चित्र मात्र होना पारंपरिक नहीं माना जाता। ऐसे काव्य-रूप का रूप-संस्कृित काव्य गुणों के बिम्बार्थ संस्कृि होना चारे बारे उसके पत्रों को उद्धृत तथा उद्देशित करने की शक्ति भी होनी चाहिए। इन गुणों के बावजूद में हम जित्र, वुन्ड चित्र मात्रको काव्यात्मक बिम्ब भी संबंध नहीं है।

काव्य में बिम्ब का नहस्तपूर्ण स्थान है। काव्य का उद्देश्य बनाएँ बर्ध-मुग्धा करना मात्र नहीं होता है, बल्कि उसका बाहर उद्देश्य तो सुक्त-गुण करना शक्ति होता है। काव्य में बर्धमुग्धा मात्र से काव्य नहीं बनता, बिम्ब गुण बदलता होता है।

1. नवा हिंदी काव्य: छोटे सितम्बर सिंधु। पृ 338
2. सौन्दर्यलेखिक: पार्वतिक हंसेन: पृ १८
3. अक्षरीय सितम्बर कविता: छोटे दुर्गाप्राण काव्या। पृ 274
4. वाचार्य भुवन: कविता क्या है? भिन्नभाषा, मान-२ पृ 144
कवि अपने समुदाय को काव्य के माध्यम से पाठ्य तक पहुँचानाचार्य है तथा
रासिकता में करता चाहता है। इस उद्देश्य की पूर्ति में विभिन्न सृष्टि विशेषता रूप से
सहायक होती है।  । वस्तुतः विभिन्न की निर्मितिया भी क्लप्पना से बोर क्लप्पना वह
मानसिक शक्ति है जिसकी भाविक कविता में निःस्वार्थ बात होती है । । वस्तुतः
वह स्वतः सिद्ध है कि जिस कवि की क्लप्पना जितनी ज्यादा बोर समुद्र होती उसके
हारा निम्नता कविता भी उलटी ही प्राणवान बोर बास्तव्य होगे । । यही कारण
है कि रोमांटिक कविताओं की कविता में जो विभिन्न बोर दिलाएँ देता है वह बन्ध
कवियों के काव्यमें नहीं है। हिंदी की ब्राह्मात्मक कविता बोर युज्युक्त
सूक्ष्म निर्मितिया में क्लप्पना के बावजूद के कारण विभिन्न कविताओं की मसारे ।

 prayingvādī कवियों ने भी विभिन्न विश्वास की सृष्टि को काव्य में स्वीकार
किया है। यथाप्रयोग उसकी बहुत कविताओं में प्रान्त विश्वास कुलक्का की सृष्टि प्रायः
पुरातन है। लेकिन वर्तमान कविताओं विभिन्न सृष्टियों के प्राचीन उदाहरण प्रत्युक्त करती
है । चित्रमयता की कविता को विश्वास से लीग करती है । दार्शनिक बौद्ध
हतिहास-कवि अर्थ शान की चुन्ना स्थिर रूप चित्रों के अन्दावत्व करते हैं, कवि उसी
शान को चित्र बनाकर होनों की बांसों के वाणी तरारे देता है । बौद्ध शान रूप में
परिवर्तित नहीं किया जा सकता है वह कविता के रूप बोध कर बाता है। इसलिए
चित्र कविता में जिले बाक् चित्र उत्तेज हैं, उसकी सृजनता भी उलटी सहजता बढ़कर
बाती है । ।

 प्रायावादी कविता में बोर विभिन्न रूप विश्वास मिलते हैं। उन्हें हम बार बारों
में विनिज कर सकते हैं: । वस्तुत विभिन्न रूप विश्वास भी वापस या क्लप्पनात्मक विभिन्न । मानसिक
विभिन्न बोर । अग्नि माननायों या विचारों से समुद्र विभिन्न।

 वस्तुत विभिन्न

 प्रायावादी कविताओं की विभिन्न सृष्टि वस्तुत विभिन्न से विशेष प्रायावादी रहती है।

----------------------------------------------------------
1 नवा हिंदी काव्य: - हाथ किस्मतार निर्म : - ३३६
2 प्रायावादी हिंदी कविता: हाथ हाथ भाषाओं निर्म : ३३६ ५५
3 काव्य की पूरिता: - दिनरा : - ३३४
कव्यावादी बोर पाठित सुर की कविता कल्पना प्रशान्त रही है, बत: उसमें वादरी निदर्शन कवियों के दशन होते हैं। परन्तु इसके कविता में वात्सपकंता होने के कारण यथार्थ वीवन बोर प्रकृति के व्यापक धोर से इन कवियों ने विद्वान को तीव्र करने नहीं किया है। यथार्थ विद्वान की अद्भुत भव्य सिद्धांत की इन्होंने विशेष रूप से गृहण किया है।

प्राणितारी कवियों ने अपनी सामाजिक व्यापक समाजवादी दृष्टि से कारण एक तौर पर वीवन बोर प्रकृति व्यापक धरोहर को अपनी दृष्टि परिपूर्ण संस्था है तो दुःखी बोर स्वातंत्र्य को तत्कालीन नियंत्रण तत्कालीन रूप में न गृहण कर जीवन के एक बांग के रूप में मान जिया है। यही कारण है कि इन्होंने वीवन बोर प्रकृति के वास्तू गत स्वातंत्र्य का ही अनुभव उद्घाटन किया है। वस्तुतः प्राणितारी कविता में वस्तु विद्वान की पुष्टि विद्वानलक वास्तू है।

वस्तु विद्वान के प्राणिता में इस कविता ने यथार्थ गृहण की ही बैतिकार किया है वत: इसमें यथार्थ वीवन की विशेष अनुभव है। इत्यादि कविताकार ज्ञान का एक विचार देखिएः-

"पूरी छुटः करार वर तत्काल एंस, पीपल के नींव ते राफत वृक्षी छुटः दाँतों मरी वनी बादों वाले बेड़े पूछः पर पूछः के लो बरमा भू, विषयी विषयी हीत पढः बब सेट में बोटे बोटे जुंग जुंग ही रह गये, (रूप तरंगः पृ२८)"

इसमें कवि ने प्रकृति के यथार्थ रूप को प्रस्तुत किया है। गुरुरायी प्राणितारी कविता में इसे ग्रामीण प्रकृति के बिज्ज के माल की पत्तियों में परन्तु छठ प्रकृति का यथार्थ रूप कल्पित है। श्रीदरारिती की निमंत्रित पंक्तिया छठ प्रकृति के रूप को ही प्रस्तुत करती हैं।

"तोकता ना ला खोट गवाता
प्रकृति बांधना मोर,
केशरों ना केशर हिलार,
ढीलीढी नो फोरे कोर, "
हूँस संगठित वर्षापूर्ण, वन वन वसंत ना कऽतार। (कौशिक: नू २३४)

ऐसे चित्र काव्य की दृष्टि से यथाप्रति उच्च कोटि के नहीं कहे जा सकते, परन्तु पूर्व स्मृति की वस्तु पर मानवकुल वास्तव में परिलक्षित ठाकर ऐसे चित्रों के अवश्य ही साहित्य को ऐतिहासिकता की दृष्टि से नीतिवादी की है।

इसके वातावरिक वस्तु विषयों की दृष्टि में कवियों ने कहीं कहीं उपमा बाद बलकारों का उपयोग कर उन्हें विभिन्न स्पष्ट शिक्षा दी गई है। परन्तु हतास व्यक्ति वातावर्ण है कि इन्हें वस्तु विषयों में बलकारों का प्रयोग वस्तु चित्र को विभिन्न व्यक्ति व्यक्ति प्रमाणशास्त्री बलात के लिए ही किया है। शून्य स्तर रूप चित्र की दृष्टि करने के लिए नहीं। उपमानदेश बलकारों से युक्त वस्तु विषयों के रूप दृष्टि हैः-

"न सनाती सांखु सुदी वायु का कऽता लक्ष्या
मनुष्यों की संकड़ी पर फांड़-फांड़ तळकता
शुचिक झरों-रोम नंबले हे फांड-फांडे
शुन है सागर वन के कान अजे पात बोड़े।" १

उपमान बलकार से ही समद्विनिर्माण गुजराती प्रागरितादी कवि का वस्तु चित्र भी प्रस्तुत है।

'ढीं स्वारे डिलोड़े विचित्र,
को पुण्य कोरो जहां ने हरी रहे,
तेरु पीने उगे मधु पाला
पुष्पे ज रे शान्त के पकड़ रहे,
लें क्वाले बोढ़ महंज़ उम्बरते।' २

इन कवियों ने वस्तु विषयों को पूर्व कर लेने साफ़, गन्ध, नाद, तरंग, वाद खो भी बिष्टिक चित्र है। उपमानदेश उद्धरण में 'मनुष्यों की संकड़ी पर फांड़-फांड
शुचिक संकड़ा में फांड़-फांडा वारणी नाद चित्र की सुंदर व्यंगना हुई है।

---

१ गिरिकायाम गाथा: दृष्टि के वाताः पू ६४।
२ शेषा: शेषा ना कवियो: पृ ३३।
सेबी है गाया कोरे में गन्ध चित्र है। पुष्प पत्त में की गन्ध चित्र की की सत्यता हुई है। बब एक रसूल चित्र बोर वर्णं चित्र भी देखिये:-

स्पर्श-चित्र

फैंटिया वेलौ में दूर तङा
महल की कोज़ह हरियाली है

हमें कवि ने महल की कोज़ह हरियाली की कल्पना की है। बब ऐसे गुरुराजी में देखिये:— जिसमें वन्याराग की गाड़ू बोरिली के रूप में कल्पना की गई है :-

रात राणी / तारा फाक फमाला हुई
मारे नीश काँद काम
गाड़ू वन्याराग -पंढ़ा
बोरिली देउ जापनी बेला।

ऐसे दोनों माणिक्यों की कविता में वर्णं चित्र की दस्ती है:—

वर्णं चित्र:

सन्माहयां
जो गंगा के गोद में गौती की तरह खिसराती रहती है
विश्वास की बाँधी बोरी पर बांदी के उन्मुक्त नाचते
पारं में फिलेठियारी रहती है।

हमें 'कौती की तरह' तथा बांदी के उन्मुक्त नाचते पर — पदों में वर्णं चित्र दस्ती है। बब गुरुराजी में देखें;—

जी कौती रात्रि विठितब उपरे पश्चिम मांहिं
की गूज़ी काफिले बनपम उपारा साभार विकही —
वहा | कौती मीठी कनक वर्षीं मोक्षित-पुरा।

1 पन्न: ग्राम्या पु ३५ | २ मेघानी : सुलतना: पु ६६५
3 समस्त: वनन का राग : बुझ वन्य कविताएं: पु ६८
4 स्नेह रसिम : बजरण : पु ६६५
हसने कवि ने कहा वर्णरंभित प्रमाण वहाँ पर वर्णालाप को ही सप्तमता के साथ प्रस्तुत किया है।

वस्त्रु विचारों के प्रस्तुति करण में प्रवातिकादी कवियों ने मात्र रिस्थर हर्ष के प्रति ही बौद्धकित नहीं दिखाई है बल्कि निर्माणित चित्रों की भी सुन्दर व्यजना छू रही है। प्रवातिकादी कवि निपृथक्कों और बुढ़े रूप चित्रों की अपेक्षा कम्प्लेक्स, गलिमान, चित्रों को विशेषण महत्त्व दिया है बाबूक़िये कविता केवल वस्तुओं के ही रूप रंग के सौंदर्य की बटी नहीं दिखाई, प्रत्यत कर्म और मनोवृत्ति के सौंदर्य की ही बल्लाच्छ भाष्कर दृष्टि सामने रखती हैं।

प्रवातिकादी कवियों ने कविता अंकों में कर्म के गतिशील सौंदर्य की खोज कर वही व्यापक दृष्टि का परिचय दिया है। कर्मकेतु एक विषाण का चित्र देखिये:

अगर रहा संकार दु:धु
कर रहा वह वार कह-हें
गाय में स्वेदन के
स्वेद - कर्म पहले क्षी िेि
कौन सा ठाँच ? घरा की
हूँक बारी फाड़े ठाऊँ
बल रही उसकी भुजाँ

यह तो कर्म रत किसान का चित्र रहा। ऐसे क्षेत्रमयि पर यह मिटने वाले एक नवधरक को देखिये जो सबथान बढ़ते में विश्वास रखता है;

बागे कदम, बागे कदम, बागे कदम
यारी फानना पन्थ पर बागे कदम
बागे कदम, पाहा क्या रखतो नहीं
...... रोता नहीं - गाता गुजारी तासी
बागे कदम, बागे कदम, बागे कदम।

(1) लाखेज दु:धु मिस्ऩामणि नग-1 फु: 1666
(2) अनुमान : प्र्यक्ष अनुमान : 1137 वेस्टर : 1341 वानिा : 1323
बलूबत या कल्पना विषयः

इसके निर्माण में कवि वास्तविक रूप पर भी कपनी कल्पना का रंग चढ़ाकर वशकास्तिक बलूबत रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के विषयों की प्रस्तुतीकरण विशेष रूप से रूपक बोध माननीयता का सहारा देना पड़ता है। इसका भी उदाहरण दर्शनीय है:—

एक बीते के बराबर
यह हरा निघाना बना
बांध झुँड़ा शीश पर
झोटे गुलाबी फूल का
कब कर सड़ा है।

वन गुरुराती में नी देखिये:—
कवियों ना ठाकूरा मल्लिकानिल मंद मंद
रखे चंदन नीं सोने बूटी
तरी नीं फर्म दुर्दूह वनमाओं वाज, धोर
विस्कृत ना धोणा, फुलको,
बोतलादा बातरा उठो।

पावसालक विषयः

इस मानें-मालों से बनुप्राणित होता है। जब कवि को दुख- रूपों में बपने मालों की भाव के रूप होते हैं तब इस प्रकार के विषयों की वास्तविकता का करते हैं। मालावासी वोर पंखित युग के कवियों ने बपने वात्मनिष्ठ मालों की की भाव दुख रूपों में लिखी है, जब कि प्रकृतिवादी कवियों ने सामाजिक मालों से दुख रूपों को बनिक बनुप्राणित किया है।

---

1 बंदार: बनला ने लोटी केर: युग की गंगा: पृ ८।
2 मेघानी: सुखचन्द: पृ ५५।
ये कुट रही झालिया, लिपियों की जुट रही-अन-फारा है
क्यों हो फि सत्य से कुट रही झालिया की ज्योतिभारा है
बबर रहे किशोर के तार तुलिया हे अंबर की गड़ी गड़ी
बायकर खिलोरे लेता है, खतिमांगा बांध धारा निकली। १

परस की सामाजिक मायाओं से कुप्रगणित गुइरांती में भी मानविका विष्य का एक
उदाहरण देखिए:-

इसके उत्तर में क्षालो, मध्य, ललितो,
बाना ती अनुप ए अवनि मरांतो,
तामों मरां ह तल कगार का पल्लाबो मां,
पेशी नाचे तबि महा प्रूति ए ठोठा । २

भूरी मायाओं या विचारों के विष्य:

भूरी मायाओं या विचारों के विष्यों और मानविका विष्यों में एक सूक्ष्म बनार
होता है। जहाँ पर भूत सिक्का विष्य में क्षिति वस्तु विष्य को अपने मायाओं से अनुसार-
णित कर प्रस्तुत करता है वहां भूरी मायाओं या विचारों के विष्यों में स्वयं भूरी-
मायाओं या विचारों को ही मूल विष्य के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के
उदाहरण उदाहरण झूठा की की कामाधिकी काया में मिलते हैं:- जिनमें ज्ञान,
झूठा,मध्य,चिन्ता बादि भूरी विष्यों को मूल विष्य प्रदान किया है। प्राणिकादी
काय में भी इस प्रकार के विष्यों को अवश्य स्पष्ट किया है। परन्तु वक्तव्य।
रामन रामण 'भेदायते काव्य में 'कृतावती' 'कांतिसिंहवाल' बादि की भूरी
विचारारों को मानवी कत रूप दिया गया है। 'कांतिसिंहवाल' का मूल रूप
देखिए:-

1 निकन : नीम के पके : - ० ६३
2 मनसुल छाठ मनवरी : कृष्ण्रोध : २० २०
लो दीसे जीवन को, विवेक
बानन्त गया वेमा बिश्वरा
वह उठा राज्य जुलक्ष्या गिरा । (मेवाली: ५० २५५)

हसी प्रकार जुलारी कवि उमाशंकर बोशी सवलत्र को मूर्ति रूप प्रदान करते हुए

१४ अगस्त १६५५ ॥ शीर्षक कविता में भरते हैं ॥

ऋ विवा नी कमे रास जोता हता ते तुं हे ॥ बाव ।
ऋ वी उभा नो पाला दूसर मुह श्रीवाण कांगा
पवित्र रक्त गी ध्यो रोंई,ते तुं हे ॥ बाव ।

( वसन्त वर्षी : ५० ९०४)

वास्तव में प्रागांवती कविता में मायाक और विचारों के मूर्ति विषय का
चित्रण बहुत रूप प्रदर्शित है । यही दृष्टि वसेर यथार्थ की बोध बिचक रही है ।
बीहार काव्य है कि माया और विचारों के मूर्ति रूपों के मूल्यांकन में ये विचारण:
विद्वेषत नहीं दिखाई देते ।

बलकार-योजना

उत्तरायण काव्य शास्त्र में बलकारों का विशेष महत्व रहा है । महाकवि दण्डकी
ने हर्षिका की शीर्षा करने वाले डर के रूप में श्लोकों में कविता लिखा है । २ लो काव्य
वामन ने इसे सोन्यक्त का पहला मान लिखा है । १ हिंदी के रूपसाली कवियों का
तो बारें ही था ।

" जय जय सुभाषि सुचिक्षणी सुरच सदृश
मूर्तिः विनु न विराजिये, कविता विद्वान मिशे ॥३

इस कविता को साथ कवि मान लिखा गया है ।

------------

१ काव्योमाकराण कवि : काव्यालंकार २१४
२ सोन्यक्तलकार: - वामन : काव्यालंकार सूच बुधि (१-६-७)
३ कविप्रमः : केलास (५१५)
बालाकीक काल में बलकारों को काय्य के लिए साध्य न मानकर साधन के रूप में ही स्वीकार किया गया है। वास्तव रामचन्द्र ज्ञात ने लिखा है: "ये साधन है साध्य नहीं। साध्य को पूरकर हन्दी को साध्य मान लेने से कविता का रूप करी करी हतना किया हो बात है कि वह कविता की नसी हर बात। २० प्रति की ने मी ने पल्ले की मूर्तिका "पुजिमा" में दिखा है: "बलकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के लिए विशेष बार हैं, बलक की पुष्प के लिए, राग की परिपूर्णता के लिए, बान्धक उपस्थित हैं।... वे वाणी के प्रास, भून, रस्म, पुलक हावामाल हैं। १२

प्रगतिवादी कवियों ने मनुष्य रूप से बलकारों के प्रति उपेक्षामाल ही प्रकट किया है। बलकारों को बावजूद स्वयं विवादों का बानी प्रावशाली बनाने के लिए ही बन्द करने अपनाया है। प्रगतिवाद के प्रथम पुरस्तर कवि पंत की कविता के बलकारों के प्रति उपेक्षा मात्र है उन परिस्थितियों में व्यक्त है:-

थान वलन कर लाने जन-मन में शरी विचार
वाणी मेरी वाणि अँगेल क्या बलकार । ३

नरेन्द्र स्मिता ने बलकारों को "अँग सीमाने और "मोह के बन्द" का धोक मानकर हन्दें बोल देने की बात की है:

अपना न कवि कवि की अँग सीमाओं को दू, दे बोल दें
ये बलकार बहुत मोह के बन्द हैं, दे तोड़ दें। ४

इस प्रकार का उपेक्षामाल होते हुए भी इस सुग के भी कवियों ने बलकारों
को कथ्य बनाया है। बालकार मनुष्य की वान्यवाचक प्रौद्योग कैसा है। बलकारों
के प्रयोग में इस प्रगतिवादी कवियों ने अपनी नीति प्रातिवादी वर्णों का तो परिवर्तन
विद्या ही है साहि की साध मुद्दता काय्य-वाजाओं की बलकार मानना को भी अपनाया।

1 कविता का है प्रविष्टमिता भाग-२ पृ. ७०१
2 वनल्ला की मूर्तिका: पृ. ६६
3 गुप्ता: पंत की पृ. ९२
4 मेम्प्र स्वर: संसाधन: पृ. ५३
हे। अप्रसूत विद्याम, मानकीकरण विशेषणा-विस्तृत, बन्योक्ति,क्रिया, वद्याम, वादि बलकार ही हस युग की कविता में विशेष रूप से छुप है। बन्य बलकारों का नी प्रयोग कविता मिलता है परन्तु प्रवास नहीं बलकारों की रही हैं। वह कह नके उदाहरण भी देखिये।

मानकीकरण:

प्रागतिवादी कवियों ने बनने पूर्व सुनीत कवियों की मातृता प्रभूति में चेतनता का आरोपण किया है तो कहीं कहीं अधूरे रूप को बी मूर्ति रूप प्रदान कर मानकीकरण बलकार की योजना की हैः

बैर ससौरी न पूर्णोऽ
हो गई सब से स्वाभी
हाथ पीठे कर रहिये हैं
व्याह मंथ भें चारी। (युग की गाना: केदा: ३४२)

गूंगराती प्रागतिवादी कवि का मानकीकरण बलकार देखिये जिसमें कवि ने "उन्माद" को एक सुव्यस्त बुद्धि का रूप प्रदान किया हैः

"वह सारित काल नी, युग वनं बलवाया गया,
उन्माद। पण कही रक्षा की का देखी ताजगी
सरी न रख कोमली का दुमाश्च कोमाय नीः।
(गंगोत्री: उमासिंह जोशी: ३० (३)

बन्योक्ति:

प्रसूत का बोध कराने के लिए जब उसके लिए वृद्ध कृल्लु का ही वर्णि
विधाय बताना है वहाँ पर बन्योक्ति बलकार होता है। प्रागतिवादी कविता में हसका
विशेष प्रयोग छूट है। कह उदाहरण यहाँ उद्देश्य हैः-

यह उठे हैं तन वदन हैः
क्रोध में निधि के नर्म से

..
हा गये निश्चि का बंधा,
हो गया बुनी सवेरा।
का उदः बुरे दे विचारे
बन गये बीवूनत कंगारे।
रो रो जे मुख ठोपये,
बाज़ बुनी रंग लाये। सुन की गाना: केवार( फू ४५)

गुजराती में:
गाया विश्व सो उठी | किरण पांक सकी ने
उठते राधि पंकी उतरण पान प्रसाद वस्ताके |
उठी बीकावेग थि उयम पांक अभ्यासणा-
वेड़े, गान गुटेरे निज नीड़े दिन भी पती |
( गंगोजी: उमास्वर बोजी: फू ५४)

इसी प्रकार बन्य कंकारों का भी प्रयोग हिन्दी का गुजराती दोनों की माध्यमों के प्रातिसादी कवियों ने किया है। इतना व्यस्थ है कि कंकारों का प्रयोग मात्र बविष्यकंत दी सभी भव्य प्रमाणशाखिता के लिए ही हुआ है, कंकारण च के मोह में बाकर नहीं।

प्रतीक-विधान:

प्रतीक, मात्र विष्यकंत की सभी भव्यना के सभी माध्यम है। मात्रिसादी शास्त्र में इसे बंकाल-प्रतीक के बनाते उपमान के रूप में ही जपाना गया है परन्तु उपमान बादा, प्रतीक में बनार है। दोनों दो मिला बाह्य पर रिह्या है। उपमान में साधुय या साध्य होता है जब कि प्रतीक का बाह्य भव्य या साध्य नहीं, बल्कि माध्यमा बाहुल करने की निश्चि शक्ति हैं।

प्रतीक पूल: 'बिंबे' हे भी मिशर होते हैं। दोनों के बन्तर को स्पष्ट करते हुए का राम कथा विजयरे दे किया है।- "बिंबे का स्वरूप बाहर प्रमाण प्राप्तजन:
सातसकलों द्वारा ग्राह है। यथापि स्पष्ट तथा भाषा हे भी मन में किन कहते हैं तथापि

1 बाह्य शुक्ल : सिन्तामनि माग-० फू १२४
बक्कांश चिम्म दृष्टि से सम्बन्धित होते हैं। चिन्हों का स्पष्ट बोन्न बोर पूर्व रूप में उत्पन्न होना बत्तम व्यवस्थक है। प्रतीक में इस प्रकार चिन्हाँन केलें नहीं है।
उसका कार्य मन को एक बन्द पुकार से गुप्तवाद करता है। प्रतीक यही माना का किस्सा नहीं हंसियत, सुन जाते हारा उसकी विशिष्टता व्यक्ता उसके प्रमाण हंसियत करता है।

हाँ रूपा राजीनामा का मानना है। विद्वान बक्कांशा स्वयंभू बोर नामा वार्ता-व्यक्त होते हैं। वर्ता के प्रकार बोर अनुकूल रूप में संयत व्यक्त होते है। प्रतीक व्याख्या बक्क पर्यंतर बोर समाज-सत्ता के प्रविष्ट सामाजिक होते हैं।

प्रागातार्थी कवियों के प्रतीक हिंदी के आवासाशी के स्वातांत्र्य के अतिक्षण के प्रतीकों से चिन्तन विद्वान हैं। दृश्य के कवियों ने जाना पर नाम मुखक प्रतीकों को विशेष रूप से अपना है जहाँ पर प्रागातार्थी कवियों ने सामाजिक जातियों हीन से प्रतीकों का उल्लास किया है। हस्तिया, घोंड़ा, शह, जद्दाडी, फसल, खुदसाव, कौशो, कोहरा, जरानढ़ा, अत्स, धांडी, जेद्दा, कारार, कुंटो नु गीता, तथा एक सुखड़े गोट्टा हस्तिया यथार्थी जीवन से सम्बन्धित प्रतीक हैं। वे सारे प्रतीक व्यक्त की सामाजिक जीवन की विभाजित के लिए ही अपनाए गए हैं।

हाँ दिनमानल सिंह चुनन ने हस्तिया बोर घोंड़ा को समाजादी व्यक्ता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

हस्तिया बोर घोंड़ा बब तक
हबा नहीं पाना शान
पाया पानी से नहीं
चुन से हिस्सा फांड़ा लात। प्रामा-प्रमाण: पृष्ठ 60)

इसी प्रकार 'गाय' बोर 'सिंह' के प्रतीक द्वारा रूपाशी व्यक्त के नामांक रूप से भारतीय होती है। लीला के प्रतीक द्वारा विशेषता शासन की प्रागाति की व्यवस्था पर विशेषता का सौंप किया है।

1 काव्य में प्रतीक विज्ञान: बालोजाना: 23 : खुँटाह 1647 पृष्ठ 25-26
2 प्रागातार्थी हिंदी कविता: हाँ दिनमानल नामा: पृष्ठ 274 से उठाता
बैल गाड़ी राज्य की
चल नहीं सकती प्रति से बोली।
एक ही तो बैल है।
झुंझुंझूं सवा मी जंग देखू है।
हाँ ने वाला बड़ा हरात है।

हसी पुकार निराकर बी ने 'खुदारुपाह' को सवार हारवर्ग और 'मुदाह' को उच्चारण (पूर्वीपति कंग्रे) का प्रतीक माना है। तथा शन्त्र ने 'मसाई' को ग्राहुत का प्रतीक माना है। समन ने राम-सीता बीर रावण को फ्लत प्रति के रूप में अनन्नित है। इनके राम जन तेरी के प्रति है, रावण-श्रीपाल साधक का प्रतीक है तो सीता-श्रीराम के प्रति के रूप में गुरुका की गाई है।

प्रतिकादी कवियों ने जिन प्रतीकों को अपनाया है उनमें समाज के प्रति उनकी बढ़त बढ़त साधारण की व्यक्त हुई है। सिद्धांत पुकार समाज में देख हुई श्रोणार्ग-विषयमत बाद को मिटा देना ही इसका उद्देश्य है। गुरुका के कुल और राष्ट्र की स्वतंत्रता के प्रति ते प्रश्न करके बाजार रहे हैं। परम्परातू हजार साल तक यादृच्छिक रूप से महसुल के विषय में शोकित नहीं रह गई है वर्तमान उसका प्रतिकाद अन्नराष्ट्रीय उद्धेश्य का दोनों निम्नलिखित पंक्तियों में होता है:

की अतुल अबरिपुरा, लिटूट सेटी है
अलता मालको का ठार तारा
और नीचे दिखें नेपाल का स्वतन्त्र महब
मुका-मदिना तक का पवित्र नहीं।

हसी पुकार 'ठार तारा', 'ठार निराकर बादी प्रतीकों बारा हन कवियों
ने कपनी बन्दराष्ट्रीय दृष्टि को व्यक्त किया है।

1 क्षेत्रस्थान: नं: नं: नं 1874 पु 40
2 क्षेत्र का राजा: खुद बीर कविता: शन्त्र: पु 40
यूराली प्रागतिवादी कविता में इस प्रकार के प्रतीकों का बयाज है। यथापूर्व इन
कवियों ने भी सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रेसा के अनुप्रस्तुत होकर पुक्त का गान
किया है तो उस राष्ट्रीयता के साथ साथ अन्तरराष्ट्रीयता का भी परिचय दिया है। यह-
तर ये प्रतीकों का प्रयोग है जिसमें प्राचीन की मानना है। उपास्कर का कवि कहता है:

राजो, राजो बंभर लंबी मंदिरों,
उल्लास जंगलों पंख,जंगलों सिनारा।
पुरा स्टाइल, लूकाबो पुम्परो,
लो उठाओ बला कुवारा।
...

इधरू केवल दो तीन सिनारो का प्रस्तुत
किया है जो बार बार जन्म लेकर मातृभूमि को वापस लेने की कल्पना करता है।

स्तवहरिज ने "मन्दिरोऽ" को "यंत्रोऽ" के रूप में देखा है जो निरंतर पिघले
रहते हैं:

जापु वह वेद-वनी यंत्र साथे
रे ! यंत्र केंद्र चढ़, प्राणवाद्य,
पत्ताँ जाता मन्दिरो लंगी व्यथा,
ने मूळपीती-अक्षरीयो त्वराना।
युद्धो नी कहाँ-वह हैं बाणपुरः (वर्णः: फ० २०)

कवि उपास्कर जोशी पूरे विश्व में शांति की स्थापना का स्वन्ध देखते हैं
अपनी विशाल मानवतावादी मानना का परिचय देते हैं:

किश्या की भींजाओ ने प्रकाशो सल्य तेज थी,
शांति नो झाने माटे मार्ग बैठे बीजो न थीं।
(विश्वशांति: फ० २०)
इस पुकार हम देखते हैं कि प्रणवतारी कवियों ने मुख्यतः सामाजिक, राजनीतिक, विषयों को ही वन्माया है, अद्वैतीय अस्पष्ट संस्कृति नहीं है। यद्यपि कविता के इनके प्रतीक वरिष्ठ अद्वैत अस्पष्ट बन पड़े हैं। कहीं कहीं पर कविता की दर्शकारिता ने प्रतीत की संरचनात्मकता को ही नष्ट कर दिया है।

1. पृष्ठ: पंकज पृष्ठ २१
2. मारती काव्य शास्त्र की परम्परा: पृष्ठ ५८२
मी विशिष्टवा प्रकाश में नहीं बाधी है। बल्कि कहीं कहीं नियम का रेखांकन मी दिखाई देता है।

युक्त इतनों के उपयोग में प्रागतिओं कवियों ने ब्रम्ह्य देन की है। इसके उपयोग के क्रियानुसार उत्साह रहा है। प्रागतिओं कवि यथापि सामान्यक मुद्दातों का समय है, लेकिन साथ ही वह सामान्य मूल्यों का विरोध भी रहा है। इतनों का व्यापक नियम-निद्रा होना सामान्य मूल्यों का ही प्रतिपादक तत्त्व है। पूर्णियारी युग के प्रारम्भ होते ही वह सामान्य मूल्य का भी विषय होने लगा और हिंदी साहित्य में ब्राह्मणियारी युग के ही सामान्य मूल्यों के प्रति विश्राम मानना को जीवन के एक स्वस्थ तत्त्व के रूप में ग्रहण किया गया।

प्रागतिओं कवियों ने युक्त इतनों के उपयोग में भरत मुगल ब्राह्मण प्रकाश का ध्यान रखा है। यही कारण है कि वे इतनयूक्त होते हैं वह भी सच्च जीवनवृत्ति में सफल रहे हैं । कुछ उदाहरण हृदय में हैं:-

हिंदी:

तुम का प्रकाश,
बिस्फोटत स्वरूप खोले
बाह्यस्त भवन जीवन-प्रकाश
तेजस बाहर करे
रहित गुरु, पाया न समका
मनु के बेटे का कर्मभार
बालक बन तुम मृण उठे
मृण माहन
उन्मल कुन करा
कब रहे देखते लूटे लूटे।

गुरुवारी:

निमन्न नाचने
शुष्क फर्न सही पूर्वां

1 प्रागतिओं हिंदी कविता: दास द्वारकाचार्य, पृ १५२
2 मुगल ब्राह्मण: विश्राम मानना ही गया: पृ १५
पुष्करी नाची,
भोग वासना लगाई,
व्यवस्था बनाई,
इस दृष्टि में योगार्थ है।
दो वर्ष भर उसे देखता रहे हैं।

इन उदाहरणों में यह स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक कवि इन योजना के प्रति प्राप्ति सक्षम रहे हैं।

इन योजना में प्राकृतिक कवियों (हिंदी और गुरुराती दोनों) के सामने के प्रारंभ पर वह दर्शाता है कि ये पहले परिक्षारूप विचार निर्माण के लिए भी उपयोगी हैं। इनके विषय में वह बताता है कि इन माध्यमों का उपयोग दोनों माध्यमों के प्राकृतिक कविता में मिलता है। इनमें वह दर्शाता है कि इनके उपयोग पर भावुक रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

युक्त इन्हें प्रयोग में गुरुराती के प्राकृतिक कविता हिंदी द्वारा प्राप्त हुए है।

गुरुराती-कवियों में एक प्रमाण उपरोक्त जोशी, सुनार, नवांदि व इत्यादि ने परिपक्वता इन्हें का विशेष प्रयोग किया है। इनके विषय में विशेषणों, मन्दाक्ष, कुशल रूप से, प्राकृतिक विश्वासियों पर भावनात्मक इत्यादि का प्रयोग मिलता है तो शीर्षक कवि और स्नेहारित में नित्य कीच इन्हें के प्रति प्रभावित बिलास देती है।

शीर्षक कवि ने तो इन्हें दोष के रूप में एक पदका के इन्हें प्रस्तुत करकें कवितार्थी परिवर्तन की मुहिम को भी प्रस्तुत किया है। देखिये:-

"हे वत्स जयं" (इतिहास: पृष्ठ ५७)

एक बार उसे संबोधित करते हुए कवि ने अपने दृष्टि के समस्त माध्यमों को व्यक्त कर दिया।

शीर्षक कवियों: पृष्ठ ५७
शेष रसिम ने भी जापानी काव्य-प्रकार के बादशर पर एक नवीन इस्ता हायबू का गुरसूती काव्य साहित्य में प्रयोग किया है। गुरसूती काव्य-साहित्य में ये सर्पम्स एवं हायबू लेख हैं। दोनों के स्वर्ग स्पेश दुल्ख नामक हनका हायबू संग्रह भी प्रकाशित हो कुछ है। वह अन्यथा प्रयोग के प्रति शत्व विमलमूलक ही कहलाए गई। इस प्रकार के प्रयोग भिन्न ही काव्य में कष्ट नहीं हो रहे हैं।

मान्यता-

मान्यता की भविष्यवाणी का एक साथ है। मान्यता बोर की बत्ता नहीं हो सकती। ये एक दूसरे के ज्ञानप्राप्त हैं। महाकवि चौखी की निम्न चंकियाँ हरी मान को दुर्स्त करती हैं:

गरा-बर्थ ठठ-भीम सम,
कठियत मिन्न न मिन्न।- रामप्रेम मान्यता

महाकवि कालिकाता ने भी हरी मान को 'बागयाचिव सम्प्रकट, बागयाचिव प्रतिमये' कह कर अक्षत किया है।

कवि के विचारों में जब जब परिलक्षित होता तब तब उसकी मान्यता-नियत में भी परिलक्षित स्वाभाविक है। मान्यता का उपरी ढाँचा, मान्यता का छोटीस खजप साहित्यिक विकास के गतिकार के बुद्धार्थ परिलक्षित होता रहता है। लगभग स्वातिक ने इस तुष्य को स्पष्ट करते हुए सिखा है: - "मान्यता बारहवें व्यवस्थागत नीति का उपरी ढाँचा नहीं है, वरन् मान्यता दृष्टांना का एक पूरी उपस्थित उपस्थि है, जिनके दौरान उसका बाहर प्रकार बनता है, वह सम्पन्न बनती है, विकसित होती है बौद्ध उसका परिक्रम होता है। इसने वह परिक्रम विचारों के परिक्रमकरण के ही निर्मित है। मान्यता-स्थिति का दूसरे के ज्ञान सम्बन्ध बनता है। यह मी चुछा जाता है कि "स्थिति ही-विश्वासित है।"
वचन्यन की दृष्टि से प्रातिवसाय काव्य की लेखी को हम चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं।

1. मात्रात्मक उच्चारण मूलक लेखी
2. वर्णनात्मक बद्धता क्यात्मक लेखी
3. विशेषणात्मक लेखी
4. अनात्मक लेखी

बब हनका बला उन वचन्यन करी।

(1) मात्रात्मक उच्चारण मूलक लेखी:

प्रातिवसाय कवियों में सामाजिक व्यवस्था के प्रति धृष्टमात्र है। द्वीवालीक व्यवस्था के प्रति धृष्ट धृष्टियों वाली निम्नवर्ग के प्रति दृष्टि दिखाते हैं, घड़ी घड़े इत्यादि के प्रति दृष्टि दिखाते हैं। अन्ततः हमें बाढ़ों, धर्मांधर निवासका का होना स्वामात्मिक की है। इनके मार्ग की लीला उच्चारण मूलक में व्यवस्था इनके कविताओं में हुई है। हिंदी कवि सुपन की लेखी न बागना नहीं बागना है, बागना आते हैं, खेत बागना आते हैं, गर्दना आते हैं, बागना बागना आते हैं। इनके कवि सुपन की लेखी है। उच्चारण मूलक लेखी की तीन व्यवस्था का एक चिन्ता सुपन की है। पक्षियों में देखिये:

देखिये कि दुनिया में ऐसी कहाँ निशानी? जो तुम्हारे न दूर माने को भी भुली मर पानी न हो। उसे हम बदल देने की बात खारी बहुत सुनारा दूरे बनानी, बाज़ खारी बारी। बाज़ सुन के लिए बुन गोली का उठार गोली हसी बाहे पिटे, न बाहे बेली बेख बाहे।

2. हानि साध काला ने भी यही चार प्रकार माना है: देखिये:-

प्रातिवसाय हिंदी कविता: पृष्ठ ३३६
रेस्ने की गुजराली के प्रविशिष्टी कवि उमाशंकर बोधी की "टहलिया",

"बेक बुभा गोटा ने टहलिया, कराल वाणि, सन्दह राशि की विवेध नो नागि,

ज्वाला, वाणि, सुन्दर बी " मानगी " हैली बाणि, मनसानिति तथा

फवेवरन्द मेवाणी की अनेक कविताओं में इस प्रकार की रूपकी की दर्शन होते हैं।

फवेवरन्द मेवाणी की हन पंकियों में इस शेखी के रूप विशेष नेता है।

ज्वाला सुखी न तृण पर बीवा

ते बावरी व्यारी सकर लो नीवरां।

माना करे मुखिय नदिय मुज्जा:

बागे कदम, बागे कदम, बागे कदम।।

( " शुष्क नदिय " कस्तें २३)

२ वर्णनात्मक या कथात्मक शेखीः

---------------------------

प्रविशिष्टी कवियों ने साधरण देश-नीवन को हद भे में लोक अपनी

कविताओं की रचना की है। अपनी कविताओं को रोचक एवं हृदस्वरूपी बनाने के लिए

उन्होंने बोटे बोटे कथा सूत्रों तथा कथात्मक शत्रु-कथाओं के माध्यम से बागने कथा की

व्याख्या की है। सूत्र की "पूर्णिमा का योजना", निवाण की "मारूं केंद्र के

घर", बोटार की "बनूं", "बेहूं", "राणिया" तथा पन्त की "टेके बाहुँ"," वह बुखारे"।

निराकार की "रानी बारी कानी", मास्को डायेलागस हत्वादि रचनायें हस शेखी

की प्रमाण है।

रेस्ने की गुजराली कवियों में उमाशंकर बोधी की "बाएं" बाएं हुई

"हुज्जुल बने भिलाराम" मोहीं सुन्दर की बोटारी बाली दुखता बहुँ,

"काफिलास ने", "सब संकर दशाभिः पाटक ने मुख्य", "इतने फोटो ग्राफ़्ड़"

"नाबुधर तथा स्नेहरिश की घोड़ी दुं गीत", "मारीवाड़ी दुं गीत", "वणकोरी दुं गीत" सुखी

"कि उपासयते ने ए वर्णाणि में वर्णनात्मक या कथात्मक शेखी के ही दर्शन होते हैं।

इस शेखी के द्वारा मान उसके कथाओं का वर्णन किया गया क प्रौढ़ होता है। यह प्रमाण-

शाली, व्यक्ता-समर शेखी नहीं होती है।

---------------------------

१ विश्वास बोधा की गवा : बाज देश की मिट्टी बोध रही है : पु. ५३
3 विशेषणात्मक देखी:

प्राकृतिक का सूच संग्रामित सुना रहा है। संग्रामित-सुना में विचारों में भी संग्रामित का होना स्वाभाविक है। विचारों के सम्बन्ध में ही मनुष्य को विशेषणा की ओर प्रवृत्त किया। वैज्ञानिक के प्रभाव ने इसे ओर भी गति प्रदान किया। यही कारण है कि प्राकृतिकीय कविता में बौद्धिक विशेषणा की प्रभुति विशेष बागई है।

प्राकृतिकीय काय्य में बौद्धिक विशेषणा की प्रभुति के बागमन का यह भी कारण हो सकता है कि काय्य-कोन में सामाजिक विचारशास्त्र की अविश्वसन सुझाव: मध्यम्वर्ग कार्य है, जिस वर्ण ने प्रत्यक्ष रूप में आन्दोलनों में मान नहीं दिया है, बल्कि मान- बौद्धिक सहायता की प्रदान की है। ऐसी अविश्वसन में बनापत्र की सच्चाई बोर गहराई तथा साइंस का कब्जा दिखाई देता है। वाच्यात्मकीय विनायक मोहन शरण ने का घायावाद युग के बाद की हिन्दी साहित्य शीर्षक बने निबंध में प्राकृतिकीय कविता के हीरे कमाव को व्यक्त करते हुए दिखा है:-

".....इन रचनाओं में बनापत्र की गहराई का ही प्रायः अभाव की रहता है। ऐसे कितने प्राकृतिकीय कवियों जिनकी पुष्पक बोर जमूरों सा जीवन व्यविध दिया है या उनके साथ एक होकर हुल-सुल को बपने दुसरे में उतारा है? हम से समाज-प्राकृतिकीय कवियों वाली कविताएं उद्भवित, निपुण बाहर सिद्धान्त-प्राकृतिकीय लाची हैं।

प्राकृतिकीय कवियों में जो बौद्धिक विशेषणा की प्रभुति पाई जाती है उसका कारण मान वैज्ञानिकीय या मानवात्मक वैज्ञानिक विचारशास्त्र का प्रभाव नहीं है। बल्कि उसका सुख कारण है कि ये कवि विशेषण: सामाजिक जीवन में पुढ़-पीढ़ नहीं रखते। बोर गहरी सहायता यथार्थत: होने चाहिए थी, वह संक्षि सी हो सकती। जब की फलधिकता यह दिखाया बौद्धिकीय कवियों का रागात्मक-मानस, जन-राजत शेषस्त्र कुंजय के द्वारा आन्दोलित हो गया। हिन्दी बोर गहराई कोनों मानावियों के प्राकृतिकीय कवियों के साथ समान रूप से यही हो गया है।

-------------------------------------

1 दुश्चिकोण: वाच्यात्मक विनायक शरण: २३-२४
प्राकृतिक कवियों ने श्लोक के दृष्टि में जो महत्वपूर्ण देनी— वह है उसकी व्याख्यात्मक शैली। यह शैली का इस दृष्टि की कविता में सूचना निहार बना। बागर यह बताओ कि प्राकृतिक कवि का प्राकृतिक पूर्णि वाले लोकों के विरोध में सूचना को कोई व्यवस्था नहीं देंगी। सामाजिक वातां बौद्धिक के विरोध प्राकृतिक कवियों में तीन दृष्टि का बोर क्षेत्र के मात्र पर गया है। क्षेत्र दौर पूर्णा की आधिम्यज्ञना वाणी के द्वारा दो रूपों में सम्बन्ध हो सकती है।

ब्रह्मों मूर्क व्याप्ता का नृथा। ब्रह्मों मूर्क व्याप्ता का नृथा। यहाँ पर मात्र व्याप्त-विद्युत की दीपिता को ही देखा है।

हिंदी के प्राकृतिक कवियों में व्याप्त-विद्युत का नीरोज, न्यक्त, केदारनाथ अनुभव, नागाजून, सिंहमंगल सिंह अथवा वर लाल रामविठलके स्वर्ण की रचनाओं में बना है। नागाजून के हरेम स्वरूपसे, भोजन, 'प्रेम का क्या', 'मास्टर', 'सोनियर प्रतियोगिता', 'अन्य निरालिक', 'पंक के 'ग्राम बहार', 'पनिराला के ग्रंथ पकड़ी', 'क्षेत्रों में फिरोज़ुद्दीन उठकर बोले तथा 'कृषुकर्मै' में तथा कृषुकर्मै कुवाल की 'सोने के लेखाओं', 'देवमूर्ति', 'बैनावाद वाद कुंजवनी में 'राजनीतिक, सामाजिक थे उद्वेद बौद्धिक के कोई रूप के प्रति व्याप्त मात्र की आधिम्यज्ञना बना है। केदार की देवमूर्ति के शीर्षक कविता की वृह आंकिताओं हृदय में है:

करो तो कह सूचि
बारे में रहा थी।
बेशक नूक में,
बूझ के बचे से
दांडा के पत्थर पर
नीचे गिरो टूट गई।
ताज्जुब हे सुमन को तो !....
कहना के सागर के
कन्नर की एक बुंदः
पूर्ण पर न कलीं। १

स्थित पुकार सुगराती के प्राणितादी कवि उपासकर बोली, स्नेहसिन, श्रीघराणी बादी कवियों का अनेकाकाल कविताओं में "स्नेह-प्रहार" के उदाहरण मिलते हैं।

श्रीघराणी का कर्म पर विषय गया व्यंग्य देखिये:-

बोरे पुरारी ! लोड़ दीवाली
पाथण लेन गये ?
न प्रेम तु बिनो का !
पूरारी पाठो जा !...। (कोविका: पृ ५४)

इसे ही एक बोर चित्र देखिये:-

पुष्पी मां ज्यम किंगु दुःखां
प्राप्ती बुद्धिव वाच
सात नमो न हुम्मत तारणोः
पापे न ताज्जुब नाचः
तारे तारे शुष्पुं मोर्दोः
स्नेहायाने उर वाचोऽः। (कोविका: पृ ५४)

स्नेह रसिम द्वारा भी देव मन्दिरोऽ पर विषय गया व्यंग्य-प्रहार दस्तीय हैः

जारा तोड़ो, ताला तोड़ो, तो डो देव नां देरां
देरां शा नां ने देव शाना खे। पाप नां बाल घेरां।
पायो पाप नां बाल घेरां। (बर्ह: पृ ७४)

---

१ छ या की गायः केदारानाथ कविताः पृ ३४
प्रागतिवादी कवियों का दृष्टि उच्चदायित्व साधारण जन-जीवन के प्रति है। यही कारण है कि इनकी कविताओं में ऐसी उपयुक्त रैली के दस्ते होते हैं जहां पर ढोक-प्राण पार ढोक गीतां की रैली के भी दस्ते होते हैं। जन जीवन के नित्य नक्सल व्यवहार में बाले बाले मुखवारों वादा का फ्रॉग कर इन कवियों में अपनी विविधतात्मक रैली का भी परिचय दिया है। जन-सुख वाणिज्य के वाक्यार्थ ने इन कवियों की कला के दूल्यों को नष्ट कर दिया है। यत्र-तत्त्व तत्सम मास्ता के रूप भी उपलब्ध होते हैं।

इस प्रकार इस विवेचन से यक्ष्मांत होता है कि गुरुरातीकृत हिन्दी के प्रागतिवादी कवियों ने काव्य में मात्स्य रैली के स्वल्प रूप को अत्यधिक कर दिया है। परम्परागत रैली की ढील पर ही नहीं चढ़ी है। रैली की दृष्टि से भी इन दोनों मास्ताओं के प्रागतिवादी कवियों में बहुत अधिक समता दिखा है।
पिछे व्यंग्यों में हमने कहाः प्रागतिवाद के वर्थ उसके तार्किक विवेचन का उल्लेख करते हुए प्रागतिवादी बांदोलन के उद्देश्य तथा विकास का उद्देश्य विवेचन किया है। हिंदी और सुप्तिरी की प्रागतिवादी काव्यधारा के बादगुप्त प्रकृतियों के बावजूद, एक साथ थाने क्रिया की तार्किक विचारों के ध्वनि से जीवन समाज की विचारों को भी प्रस्तुत किया गया है। दोनों माननीयों के प्रकृति प्रागतिवादी कवियों और उनकी काव्य-कृतियों की प्रकृतियों का विवाह बना हुआ अनंत विकास में सिखा गया है। तथा एक सा स्वतंत्र व्यंग्य में दोनों की माननीयों के काव्य का उद्देश्यक विवाह अस्तित्व के परिणाम में सिखा गया है तथापि प्रागतिवादी काव्य का स्वभाव अपनी समस्तता में प्रस्तुत हो सके।

इस विवाह का प्रस्ताव वह हम ऐसी स्थिति में बाँधते हैं कि प्रागतिवादी काव्य की संसार के बावजूद दुनिया को दूर करने लगे हुए उसकी अवधार की उपलब्धियाँ, शीर्षाओं तथा संभावनाओं पर कृपा का टांटा सके।

प्रागतिवादी काव्य का दूर वजनपुर्ण। तत्परता 1638 के प्रारम्भ होकर सन 1643-48 तक ही उसके विवेचन साहित्यिक संयंत्र पर जिन लोगों का दूर करने के लिए विवेचन स्थापित कर सके। परन्तु यह निष्कर्ष है कि इन दोनों (हिंदी और सुप्तिरी) की विवेचन में प्रागतिवादी विचार के अनुसार सब विभिन्न समाज, ग्राह्य प्रकृतियों का सार्थक प्रकाश प्राप्त हो सकता है। इसलिए इस के साहित्य में संसार नहीं हो सकता। यह इस संसार की विभिन्न विभिन्न संसार रहता। हम विभिन्न विभिन्न संसार का ध्वनि से हमारे विवाह को युग और युग के विवाह तक तय हो जाता है। हम ने एक सर युग द्वारा से विवाह का ध्वनि से हमारे विवाह को बहुत पुरातन है। हम देन इस से हमारे विवाह की समाज रहता है। प्रकृति की युग समानार्थ है। हमारे उपलब्धियों, शीर्षाओं और संभावनाओं का उद्देश्य, विवाह का विवाह है।

उपलब्धियाः

साहित्य तथा विवाह के सीच विविध सम्बन्धों की स्थापना:

हिंदी और सुप्तिरी के माननीयों के प्रागतिवादी काव्य के वाच्यों विशेष विप्लव के पूरे के काव्य-प्रकृतियों का दृष्टिकोण करते तथा युगों परिस्थितियाँ के सन्दर्भ में
उक्ता परिक्षण करें तो यह शायद होगा कि सुग जीवन का बोलचा कविता में प्रस्तुत होना चाहिए था तथा कविता बार जीवन की बोलचाल प्रकट होनी चाहिए थी वह पूरा के यूगों में संक्षेप नहीं हो सकी। हिंदी के छायावादी कवियों ने साहित्यिक परिसर में सुग जीवन को पूरा किया। परन्तु उनकी पूर्ण धुरी हम से बादशाहतक एवं शीत भाव-प्रताप की रही। यथार्थ जीवन की देनबन्ध समस्याएं बहुत रह गईं। छायावादी कवयित्र के द्वारा मात्र माहवात्सक तथा साहित्यिक शैली की शीर्षता पहुँची है। साहित्य कवियों के हिस्से का प्रख्यात हन कवियों के पास न द्वारा जो सामान्य जन जीवन को परिसंपत्त कर सके।

वीरसाधा काद,संकल्पकाल तथा रीतिकाल हस्त भाव का साहित्य है कि काव्य या वीर वीरों की प्रशिक्षण, या बालवा-प्रसादस्था के नेतृत्व की स्थापना या राजनीतिकों की चित्रहस्तवार्थों में बालवा काव्य दाखलों की प्रशिक्षण या नायक्य-नायिका के नव-शिक्षा वर्णन या गंभीरता तक की सीमित रह गया था। कवियों ने जीवन की परिक्षण मा प्राची राजा-रानी या राजा-रानी, राणा-राणा या राज-रानी की कहानी तक की कहीं। पूरा साहित्य इन्होंने के हर्ष-निर्देश रह गया। हमें यह सोचना ची ही नहीं कि इसके विस्तार एक बार भी जीवन है जिसमें सुख ची शीर्ष है जो समाज के नवनिर्माणक कार्य करते हैं परन्तु काव्य जगत से उपेक्षित है। उपेक्षित-जीवन से साहित्य का सम्बन्ध हन प्रायोजकीय कवियों ने स्थापित किया।

पूर्णी पर वास्तव में जीने का विकास उन्हें नहीं है जो चिन्तों-स्वरूपी हें या दूसरे के शोभण पर ठंडोबार की चिन्ता जीता है। जीने का विकास उन्हें है जो विशेष मध्य मध्यों का संभाग करते हैं, जन-समाज के लिए राज्य का संभाग करते हैं जो बोल बोल का कार्यालयों में वास्तविक काम करके मात्र सदृश न्याय के लिए आवश्यक वस्तुओं का संभाग करते हैं। जो हो सूक्ष्म रक्षा गर्मी -शीतकाल तथा वर्षाकाल में सेतू में बाधा परिश्रम कर बना वेदा करते हैं। परन्तु हस्ता उपमान स्वर्ण नहीं करते। वह वर्ग जो हनके परिश्रम पर शान्ति बार सूक्ष्मी विवादाता है वही जो साहित्य का विभाग बना रहा। परन्तु प्रायोजकीय कवियों।
ने अनुमा किया कि जीवन महत्व में नदी, शहरों में नदी क्ली गांवों की
फूलपिल्लों में भी है। लेन-शिस्तनों में है बोर जड़-कल्याण में है। इनके लिए
हन कवियों ने सामन्तवाही को बढ़ाकर किशोरों-मुद्रारूपों को अपने का-
व्य का विविध बनाया। कवियों को सामन्तों, पुष्करिपल्लों और राजा के पक्षों
से श्वारक हतारों-किशोरों को शोभित के बीजन से समस्तक पदार्थ दिया। वह ग्रामित-
वादी के कवियों के विस्तार उपेक्षित नहीं, नीरठा जन-बीजन से साहित्य को जोड़ा।

हिंदी कवियो-अनुमान तथाकथित उच्च भाव से कवियो को हटाकर, जहां
मांग नाक की मानवीय पर पथारी करने का, जो ग्रामितवाद की है। हन्दीने
परमार्थ से ची बाती चुन मनुष्य के कल्पना को खीरार नहीं किया। हनका
मनुष्य और जीवन हृतरों को मायक्षाह का मारा पढ़ा का सोचना पर बीजने वाला
नहीं है। हन्दीने विस्त जीवन से साहित्य के बरिश्चिन सम्मानों को स्थापित करना
बाहर है वह भवीषय आ और झंकता के जीवन है जिसमें जीवन की उदास ताज्जा
है।

ग्रामितवाद कवियों की दृष्टि गांवों की जिन्नीके साथ जीवन का सामान्य
स्थापित करने में विशेष रूप के है। पुर्व के संघनों में वह ईंस बढ़े चुन महत्व और प्रासादों
का वर्णन होता था वहां पर इन कवियों ने जीन-हुई कूटना का निर्धार करता
उसे किया।

• जीन-हुई का उत्स
बांध की धर-पथ में काप्ता
बनाए बोधारू में बैठा
ताप रहा है कांडा (कूल की गंगा: केरारसाथ कुलबाल:) ।
पूर्ण मक
कर शहरों के बीर नबर हालेन तो वहां भी उनके वही नंगे-पूली बनता ही
पिसार ही है।
कश उपमकर
उठती है गो-मूलू की
काल रात्रि का 'नाग' नाचता है फन फाँझे
यही बमीना बाद है। (सूर की गाना: केदारनाथ ब्रजावाणि: ३३)

प्राणिक वादी कवियों ने जिस जीवन से साहित्य के सम्बन्ध में स्पष्ट किया वह वातावरण मशौर में ऐसे वातावरण और विकासपूर्ण जीवन नहीं है बल्कि वह जीवन है जो मेलनकास है, जो परिस्थित करता है फिर भी बस्ती की पढ़न का ही स्वच्छ देखता है।

कुली मजूर है
बोलती है, 'सीतान' हैं घर
शुभ दुख-मास ये पढ़ता है सबका
भक्त माने जाये जया है जाये हैं खेज
लगने भी धुनते हैं बस्ती की पढ़नी (प्राणी पथराधे बारे: नागालूनी:)

४४ २२
हन्ता जीवन वह जीवन है वहाँ पर उदर-पथ पी की रफ्ता ने देख और दर्शना का भल फिर है। माता-पिता बाली पर पत्थर लकड़ करने को, छूटी अनाध बच्चे की विनियम के दूर स्लेक्ट काम करने की बात है ये से उनका मानचित्र-प्रेत ही सुल हुआ है। १ हन प्राणिक वादी कवियों की झड़ी तो उम्मीद है कि वहाँ पर मशौर की रफ्तार दुनिया में कीने वाली वैकल्पिक विचार से परिस्थिति नाटी-जीवन की कल्याण होती बारती वहाँ पर हन्तों में महत्त्व के जीवन को प्रस्तुत किया है।

हन प्राणिक वादी कवियों ने साहित्य की उनके जीवन से सम्बन्धित किया वह हर बाली पर मेलन मजूरी करते हैं। मेलन करते-करते उनके सरीर की पत्तों में रक्तरेत पर पडी छूट जल की बुद्धि की मांति सब गया है बो जीविकाओं के

देखिये: जीवन के गाना: शिवमालासिंह सुपुत्र: ३५ ६६
बेगार बने हुए हैं तथा जिनका बेतन मात्र "बीजाँ" है। व्याधि फखरों के कूट जाने पर जो अन्न के दाने जमीन पर गिरे रहते हैं उसे ही चुनकर वे अपना भरणा-पोषण करते हैं।

जिन्होंने बीजन को स्वाभिमान विश्वास का नन्दिता बना किया है, जिन्होंने कोटी कोटी ठुलूहों का कोर तक जीने किया है, बारे ठाम-सूतः खिलक हिंसक हिंसक हिंसक बमने के मृत्यु को बहा है, बगाल के बकाल में भी जिन्हें बगाला-प्राप्त करणा नहीं बसी उन पर कवि कविता नहीं दिखाता। २ बलिक उनको अपने कायम में अपनाता है ग्रो शूरों पर चलकर भी मुस्काते हुए फूल की मांति दिखाई देते हैं

सूत तमी तक सूत है जब तक दु:ख का बलिक तिता है।

शूरों का अर्थत्स का है, फूल बैठीं तो मुस्काते हैं,
बहां बेंबेरे की सवेरा है, लुगु: बहां बचक पाता है,
बीजन पूर्ण नहीं है पाकर केवल शूर जू हां सूत के ही मुह्य-रागा
शूर भी तो सूत कहाना तब, बीजन में फूल दु:ख जाता है नीरेश-बाणवारीः

मु: ७२

जुराती के प्राणियाओं की कवियों ने भी शाहिद्व को उजरात के हाटकर
ख्वाहारों बन की मात-पूर्ण पर प्रस्तावित किया। पंक्ति: सूत पत के कवि श्रमाय,
प्रकृति बारे प्राणु पक्षी तक ही अपने कायम को साधारण कर दियें। शाहिद्व-समाज का राणा है की कहानी तो प्रवृत्ति भी परम्परा समाज तथा वो राज्यराजेंद्रों या उजरात के ही संचार की साधन वा क्योंकि कहां भी गांवी शूर के फूल
भिंजों, मज़दूरों, कवियों और बाबा का उल्लेख नहीं मिलता। यह उपाधक करोड़ों,
"सन्तिरि""नेघानी" तथा "सुन्दर" जैसे कवियों को ही आगे है जिन्हें जुराती
कवियों में उन्नतिपत्त प्राप्त नहीं है फिर भी मेहनतक कवियों बीजो मज़दूरों

1 देखिये- रूपार्गोः हरामविलास कार्यः : मु: ६०
2 देखिये- विश्वास बढ़ता ही गयाः " सूतः मु: ६
को स्थान दिया। "साहित्य समाज का दर्शन है की कहावत सज्जे बिंदु में प्रागैतिहास में ही वरिष्ठतापूर्व है।"

काव्य के पाठ्यम से सामना श्रीमतों बोर मूलनिर्वाणों की कहावत को सुंदर सौंदर्य में प्रस्तुत कर देना ही साहित्य का सत्य-बोर सुन्दरि हैं कहा जा सकता। कारण समाज का सत्य यह उच्चवर्ग पात्र नहीं बलिक वह वह भी जहा केवलकेवल स्वाधीन इंद्रियाँ, हँसने की विनिमय महसूल ही रहती है।

"स्वार्थ वन्य ध्वार शुद्ध बनी ने
पीला शुद्ध बेक बीजा ने
संहीतियों फण परस्पर वालों
मीठी बेमिह करी। न कराहँ गौ" (विष्णु काव्यः: राजाविवाह पाठकः पु.५७०)

वास्तव में साहित्य का सत्य बोर सौंदर्य तो हम उपसूक्त पाकियों में है जो मुन्याध के द्वृत्त को निर्मल कर फिरत की बोर प्रेरित करता है। सुन्दरि तो उस जीवन को ये अवृत्त काव्य-प्रवीण करने लगते हैं जो सृष्टि से चुनित होकर गलियों में घुमता छान कहता है।

"वरे कोई वातको बापों बाहु,
पने कोई वातको वाय बाहु (कुठरी वाणीः पु. ४५)

उमासर बोलकर का कवि तो एक विशाल साहित्य-फलक को ढूंढ़कर काव्य के रंग-रंग पर काला दिखाई देना है जहाँ मात्र मुन्याध ही नहीं बलिक पढ़ पढ़ती तथा पुष्प बोर वनस्पति ही रहती है।

"विषाले बंग-विस्तारे न भी, एक वाणी
पढ़ के, पढ़ी के, पुष्पो बनोती है वनस्पति।" (विष्णुशास्त्रः पु. २२)

काव्य-काल में इस प्रकार की विषाल विक्रम का प्राधुर्य संविधान-काव्य-काल में
इस-प्रकार-की-विक्रम-विक्रम-का-प्रागैतिहास के विनिमय की वनयु पृथ्वी में नहीं
छुआ है। एकता ही नहीं बागे वह उस जीवन की कल्पना करता है विकरो विषाला
है, साहित्य प्रऺणा के तथा सत्य का प्रकाश है।"
विषय की मैंजाओं ने काशकों कत्यू केवल की,
शान्ति नि क्याने मार्ग गे के बेघरों न थीं.

(विन शान्ति: फूरि)

मानव का यह विषय चम की ही काल्पनिक है। परन्तु विविधता तो यह है कि हन चम को ग्यारा जाना रहा है और जीवन पर केवल कम से कम काम करने वाले की मदद माना जाता रहा है। जीवन की जीवन का नाम एक बार जाना हुआ। यद्यपि संस्कृति का विकास मद्दत की ही देन है। कभी कभी यह प्रक्षेप उठाया जाता है कि बालक-वाणीक मानवीय विषयका का कार्यक्रम से वंदे ही हैं। परन्तु यह संस्कृति की परंपराओं से ही की जायें। कृपया वास्तव में विषयका का कार्यक्रम के मद्दत है। यही कार्यक्रम है कि यद्यपि संस्कृति के प्रक्षेप में पहले कस्ते गाड़ों के प्रति है अपने कवियों का ध्यान विशेष रूप से देना है। परन्तु जब इस विषयका की दास्ताहे से मुख्य पाने के लिए कविक बार वा गये हैं। विषय वाणीक जितना है:

"बन्दूले वक्ता प्रक्षेप, न रक्ता माने:
बनायो बनायो गुडाम। जावीपहोंचा युक्तमान (सुवर्ण: ७१)"

इतना ही नहीं कवि मेरापी तो युक्त कले से यह स्वीकार करते हैं: "पृथ्वी पर
राज कों गा? साता धम जीवियों नाँ।" (सुवर्ण: ७१)

"रेउ प्राप्त जीवन का ग्राहित को बोझ जो सुनाए से विश्लेषन
था।" कमरे देखाय विषयका विशेष ? के प्रक्षेप का प्रत्युस्त हिन प्रासादारी कवियों के
ही पास था। इसीलिए कवियों के विशेष प्राप्त: खाना: सुनाये बाधा
अपने जित्ता। इसकी प्रतिक्रिया में "साहित्य समाज के जित्ता है का नारा उत्ती
वक्ता प्रासादार ने दिया। परन्तु तब प्रासादारी कवियों ने साहित्य को मजारों बारे
विषायों के जित्ता माता तो बाईं और कवियों ने इसका विरोध करते हैं साहित्य का
संपूर्ण मान्य अर्थ के जित्ता स्वीकार किया। परन्तु तब बारे विषायों-मजारों ने शोषणा
से बहुत शोकर भिक्र न उठाया होता तो बुध्वी जीवियों में उनके प्रति वसामूलित
पेदा न होती परन्तु यह कुछ जीवियों की सहायता स्वयं मानतावाद बोया था।
बिसका पुस्तिकामात्र बढ़ी जल्दी हो गया। ¹  

"साहित्य संग्रह के लिए के उद्देश्य में बोले जाते इतिहास कवियों ने ही उन्हीं संकीर्णता का परिशोध किया। हरिवर्धक रूप से इतिहास के लेखकों ने भी साहित्य का "बहुत हितार्थ बोला" बहुत हुलामे के माना। ²  

हस्के फलस्वरूप कविता में पहलीबार संपन्न विद्वानों विशेषतः मुज्जुरा के नगर लोगों के परवरि सूक्ष्म रूप से पढ़ी। संथ्या के सुपन्न में पंच के को चिह्नित के "टी-बी-टी-एस-स्पर्श" के साथ बा खवा का एक नाम निकलते हुए हुए अन्य को रमालाह मिल गए। बोर फिर टीके पर उन्हें के नोने तम बड़वे नवाब वाले जर्ज भी अबाहा। कविता में पहली बार इसी व्यापक सहस्रशानति का प्रतीत हुआ। परिश्वेतिय बाहुस्व-पूर्वक "बौद्धिक" भी बोर यह भावना भी केले सहस्रशानतिरहक, फिर भी पूर्ण  

की हस विचारता ने साहित्य में नव जीवन का संचार कर दिया- बोर साहित्य का घोट स्वायत्त बना पढ़ा, बोर उसमें उज्ज्वल की नेतिक्ता प्रतिफ़तित कर दी। ³  

"साहित्य जीवन के लिए है, ऊपरित तथा फिरहित जन-समुदाय के लिए है,  

साहित्य जनता के हाथों में समाज को बदलने वाला एक बस्त्र है, उसके बन्भीति जन- 

जीवन की बातों तथा नवांताओं को बिच्छिन रहता ही साहित्यकार का एक मान  

लय के हस पुकार की स्पष्ट बक्चियाँ प्रगतिवाद शुभ में ही प्रथम सर हुनने को  

निहीं। ⁴  

हस्त स्पष्ट होता है कि जीवन को साहित्य-वर्धन में देखना ही साध्य प्रगतिवाद में है। पुस्तिकारी कविता की पहली बोर प्रथम उपकार यही है  

कि उसके साहित्य तथा जीवन के पारस्परिक सम्बन्ध की रचना, अर्थात् बनन्ता का अर्थ प्रतिपादन किया। साहित्य बोर जीवन का चौड़ी दायन का सम्बन्ध है की  

प्रसन्नशायन इस युग के कवियों ने सही आदर में किया। ⁵  

¹ वासुकि वासिका की पुस्तिकात: नाम्सर सिंह: ७५-७६  
² प्रगतिवादी काव्य: उपेन्द्रन शिरस: फू २८०
हिन्दी के शिलोचन, मागाइन, शेदार्थ व बघाड़, सुपने हत्यारे तथा 
 युद्धाती के उमाखाल जोशी, सेनहरणे ने विवाह कर भुन्दरादि प्रतिवि
वादी कवियों का काव्य सामान्य जन जीवन से उस ग्राह्य कर सामान्य बन की 
बांध-वालाणाणे तथा बांधकापरों एवं बांधकापरों का ही प्रतिविद रहे। दोनों के साहित्य  
में साहित्य और जीवन की अभिनवता से प्रतिपादन सर्वसम्मत प्रगति/वादी कविता  
के दरा ही हुई। विशेष साहित्य जीवन के बीच विविध वांछन सम्बन्धों की  
स्थापना प्रगति/वादी काव्यार्थ ने ही खिया।
प्रगतिशाली कथिता की पूरी प्रशान उपराति है:- बलिखित कल्याण-प्रियता के स्थान पर यथार्थ की प्रतिस्थापन। हिंदी बोर गुजराती वोरों की माणकों के सार्थक स्वरूप उन्हों के वाचनों में यह अत्यंत होता है कि हिंदी में प्रगतिशाली के पूर्व ज्ञात हायवाद था, तथा गुजराती में गांधीयुग के पूर्व पंडित युग था। हायवाद बोर पंडित युग की कथिता में बलिखित काल्याणका की प्रशानता थी। हायवादी कथिता तो स्वयं के प्रति सूचन की विद्रोह ही थी। कल्याण प्रियता के कारण यह युग के कथितों ने यथार्थ माणकों की सदा जवाब दी है। सदैव व्यक्ति-क्षेत्र स्वयं कल्याण ही के इनका में तो रहने के कारण यहाँ व्यक्ति स्वयं प्रथम कल्याण का बागमन हो गया बोर फिर कथिता बहुत मोहन न बनकर युग उन मोहन बन नहीं। स्मार्क घोर प्रतिशाप प्रगतिशाली कथितों ने किया।

प्रगतिशाली कथितों की कथिता की समस्त मूलिक यथार्थ की मास्मूनि थी। उससे कल्याण का स्थान करने था। कार की कथिता का यह गाय है तो यह बलिखित-प्रतिशाप तक सत्य पहुंचता है। जीवन बोर ब्रह्म की ठीक चर्ची के ही गीत से किरण सदैव नायक रहे हैं। मात्र कल्याण अनु सत्यों में परे ज्ञान की कथिता कल्याण का रंजन न लाल चकी। यही भाषा है कि हिंदी के पट्ट बोर निराला जैसे हायवादी कथितों ने वास्तविक चर्ची के गीत गाना हुआ कर दिया। स्मार्क के संयोजन में हायवाद के कल्याणी की कथित पट्ट ने किया है-- यह युग में जीवन की वास्तविकता ने जैसा उस वाक्यर चर्चा कर दिया है उसके प्रारूप में विलायतेत्त हा वाक्य बोर कल्याण के पूर्व हिद गया है। कार कह यह कथिता सत्यों में फर्क चक नहीं। उसकी जहाँ को जानी पोषण सत्यी गृहण करने के लिए क्षेत्र चर्ची का वाक्य हेतु पढ़ रहा है... "

> प्रगतिशाला में कि यथार्थ का किरण हुआ है यह युग की मान की फल्वति है। यह वह सामाजिक यथार्थ है जिसका स्वयं वैश्वानिक है तथा जितने खूब बोर सुनिन

१ स्मार्क: संतारकीय, बंके-१ कुटारी १५३८
विचारार्थ का विचार अथवा युगीन समत्वता का उपयोग है तो दूरी तर्क यथा की प्रश्नमत्ता तथा गहिराईता को अनन्य रूप से रखते हुए विचारार्थों के बीच हेतु परवर्ती नई समस्तता भाषायों का सी प्रवद्धार्थकरण है। हन दोनों पदार्थ पर अनन्य रूप से बहुत अत्यधिक ा शिक्षा का अटीलिक है जो मानवों समाज अवस्था का प्रतीक है। ये यथार्थता की धार्मिक और ज्ञान के द्वारा नूतन समस्तता का वास्तव है।

हन ग्रन्थाकारी कवियों ने किस यथार्थ का विचार फिरा यह यथार्थी बीतन का यथार्थता। उसमें कई भी बताता का पूर्व नहीं है। बीतन की अनंतियों अथवा विद्वानों को परिचालक हन कवियों ने समाज में बनाए बाजार ग्रन्थाकारी या ग्रन्थाकारी हंदियों के संगठन को कहर है में प्रस्तुत किया है। हजारों दृष्टि विरुद्ध वा बंदारायण बीतन के विकास तथा स्तरीकरण की शिक्षा सम्प्रदाय पहीं हुई विद्वान बन-बन्दिक खा भी अंक की है। हतना ही नहीं, बीतन को विरुद्ध अथवा बंदारायण बनाए बाजार यातायातर में कहर स्तर पर प्रस्तुत किया है। बीतन के परिस्थित में प्रस्तुत यह संपूर्ण वह शिक्षा अभिव्यक्तिस्वरूप, ग्रन्थार्थ ची नहीं रहा है। तथ्य भाषा-सूक्ष्म के परिपाश में किस यथार्थता को हन कवियों ने प्रस्तुत किया है अथवा युगीन बंदिक ग्रन्थार्थों ने भी धृत बंद कर लेबल लिखा है। नाटीय, नन दुरार मानेतारी की निम्न- धार्मिक पंक्तियों प्रमाणी है:-' परनतं हन यथार्थों को विचारान्त करें शाता अथवा विचार स्थान और विषयव्यक्तिगत मानेतारी भी है, जिसमें हम शास्त्रवाद मानेतारी कहते हैं। यह भाषार राज्यवाद विस्तार का अपना शास्त्र बनाया है, जिसे दरवर हम करते राज्य में भाषारे पुरुषार और बासिलिक भी बताते है। २ प्रतीक साहित्यिक वाक्य की कानी शिक्षा होती है बार उसी प्रकार यथार्थता का मो कानी निम्नलिखित शपथ हैं। यथार्थ लोकों साहित्य की बाने हर भाषा है। भाषा यह हमारी साहित्य की बाने हर भाषा है। जब उन्होंने धृत बांधक यथार्थ शब्दों का प्रति हमारी सृष्टि का भाषण बार जोखिम की मानवता को बाहर किया।
इस युग के कवियों में, यथार्थ विक्रम में दर्शक की ही दर्शनता नहीं है वरन् मोक्ता की ही नामांकुलता समूह बाणा-उल्लास है:-

येन बाणा है समाधिः पर-
वास हुनाम पन स्वस्थ बने।
- - - -
दीप गह भरे प्रणामः पर
अस सदा की कह जाते। (अनंतः ठाणे बुधः पू.६६)

इस सन्दर्भ में गुरुपारी के ब्राह्म समाधियों बाही की है कालान्तर प्रकृति विशेष ग्रंथ
के प्रख्यातीकरण है।

लिखित, कविता और व्यक्तित्व विकास की कृपा के फलस्वरूप सामाजिक अबू नैतिक मायादेव का रूप बना बुझारिता क्रमब- नायरस्क कर्मयात्रा की और उन्मत्त होता है तब वापरनु प्रायोगिकी सामाजिक बाल्य-नेतृत्व ने लिखित के हन कार्यवाह विचारों में मोह कर जैसे सामाजिक माय-मूर्ति पर प्रतिष्ठित करते है का ज्योतिषीय माया किया। प्राण एवं दुःखार पर प्रलोकलिता-सबे या-परस्परी-रात्रि-नित श्रेणी के विकार में जो कह दर्शक मायादेव भाषाकर रही ही उसका परिवर्तन कर इन प्रायोगिकी कवियों ने प्राण वोर दुःखार के स्वभाव रूप को प्रस्तुत किया। हना ग्रंथ प्रायोगिकी नहीं है। श्रेणीक दृष्टि हुई ही स्वभाव वोर वापर ग्रंथ है जिसमें द्वारा स्वभावी नीतिक या प्रायोगिकी श्रेणी का भाषण का ग्रंथ है पानु जुम्ला नाम का जनन देता है सामाजिक नीतिक या प्रायोगिकी को प्रतिष्ठित करते है संस्कृत माया की नहीं। फिर भी हना ग्रंथ नीतिक या प्रायोगिकी के वापर में वर्णित किया है।

तला हना ग्रंथ नीतिक की पूर्णता का कह बंद है जिसके लाभ की प्रतिष्ठा स्वभाव
सामाजिक मूल्यात्मक पर की गई है। हना ग्रंथ के व्यक्तित्व प्राण वस्त्रूदार, पीठौड़ा, पुंछ, वर तामस्क लोकतन्त्र भर वत्सित है।

प्रायोगिक ने कहने वांछित दिनों में प्रकृति के दौर में कक विकास कर्मयात्रा को जन्म दिया जिसमें बुझारिता दुःखार रहस्यवाद की मायादेव की प्रकृति थी। शाखा-प्रायोगिकी नायरस्क के ताने बाहर है गुण-गुणी बारी की बाहर उसके बुझारिता मायादेव शैली बाहर हिस की अनुभुति की होती जा रही थी। फलस्वरूप प्रकृति
विषय धनो विि दिल की दुनिया के कल्पनागत और सुन्दर बनती जाती थी।

कल्पना नक्षित्रका के चालक है क्षिप्त बाण होती जाती थी। बुधि और युगल
ग्राम बिघाना है परामर्श्का क्षिप्त बाणारोह धी के धीरे दी जिस्रू दीवन और
वज्र की दुनिा था। प्रागृहीका क्षिप्त ने की परिलक्षिति में पी बने उद्दार्थतंत्र
को सन्यास। कल्पना हस युग की क्षिप्त सामाजिक मानस की यात्रा दीवन-भूमि पर
प्रस्तावित हुई। पुस्तक क्षिप्ता और उसके अन्तर्द्वेश्तका के बावरा है बाण क्षिप्ता
को बनायुग क्षिप्त ततारा और युगल ग्राम-बिघाना की पाक्ष्युति में हो बताया।
ततारा का गुरु देव प्रागृहीका क्षिप्त ने क्षिप्ता को यादारोह की धनु बना
दिया। जो पहेरी तरीक्षा न बनी हो परन्तु बहुध नाम बाण बन गये।

प्रागृहीका क्षिप्ता का यादार बैक्यक्षि की बाण धामारिक वातका है।
स्मारकका यादार को सम्पूर्ण करते हुए गायक के ल्या है: ' स्मारकका
यादार यह शोभित धरता है कि बाण का यह चिन्ताही घटता है, जिसका जैसे
रूढ़ की खोल में बैक्यक्षि राय्कारंज बार यद्यारोह का प्रस्तुत की
हृदयारों पर विषय के ध्यान उनके स्तांत्र्य बार उनकी पीठारंज के ध्यान और यह
धक्षिण पर बीचित रहने के ल्या वातन के लघु, निराक किसान है। यह धरती,
जिसे यह करी वस्त्र पहनते हुए उपलक्षणों के बुनुम रक दी परिशिर में श्रंखुमा मालक
वात का मध्य स्तानाना नक्षित्र का भरता है। 1

इसके अनुसार है हुए शोभित देशका की शरीरी नक्षित्र में सामाजिक कटे हुए
कार्य ने जो बाद में भावरुक्त के स्थानिक स्तांत्र्य का प्रमुख शारीरित बना, लेखा:-
' स्मारकका यादार शोभित बैक्यक्षि और विदमा की यह वाराराण्य पूलित है
जो देशका के संसार और देशविद्यार मूलद्वी के साथ वातस्तिका की महाक्रांतिका
दीवार की नींदिया में बिखरा करती की माण करती है। दीवार खाना की वर्षा-
देशका और देशविद्यार मूलद्वी के साथ ही साथ यह पूलित स्मारकका की दीवार में
निर्देशों के वैदिक सहारा बार उनकी शिक्षा की रूपयार की ध्यान में श्रंखुमा
दी रहती है। 2

1 शास्त्र एवं विद्या: ५० वीं सालस्थल का हेड, द बाजूलिनके ला राष्ट्र, भाषा हिंदी की
पुस्तक, टिट्रीर खुद रिवोल्यूशन नन सोवियत रूसिया, १९७७
स्पष्ट है कि समाजवादी यथास्थित यथार्थ को खाट कर उसके लिए वर्तमान सम को ही नहीं देखता। यथार्थ को वह आत्मा निरन्तर गतिशील प्रशासन के रूप में देखता है, जिसका आत्मा किनारा मूलभूत तक पहुंचा हुआ होता है और दूरा मध्यम तक। यह यथार्थ को उसकी गतिशील बीमार न उपस्थित मुखिया में बिताकर भारत है।

यह वर्तमान यथार्थ के भिंत्र के साथ मध्यम के उस स्थान की तरी न जबल करता है, जो वर्तमान का खतरा की आ बहुत बड़ी प्रेषण है।

समाजवादी यथास्थित यह नाम है कि साध्वादी रह ही आध्यात्मिक के बादों में सामाजिक घटनाओं की सही व्यास्ता कर बनता है और घटित उसके अनुसार देख की स्वेट किनारा नाम की बॉम्बारी और साध्वादी नह के प्रति उसकी निरंतर वल्पुरा का स्वाक्षरित के बुने के दूर बिन्दर है।

धार्मिक यथास्थित धार्मिक में न तो न्यायि वास्ता का ही बना बाहर है और न स्थान में लगी विद्वान के व्यक्ति का ही। वह व्यक्ति को उसकी स्वस्था में देखा बाहर है। को चारित्र की रचना करता है, जो यह विक्षेप का प्रतिलिपित लाते हुए की कारी बिशेषता कार्यरत रहते हैं।

धार्मिक वार धार्मिक परिवर्तन धार्मिक परिवर्तन के बाहर नया कर इन तथ्यों ने काने वादों की स्थापना नहीं की वांछनीय न से ग्राम कर परिभाषित से परिपूर्वक होंगे की। इनके द्वारा आत्मा नहीं, धार्मिक जन-समुदाय या जिनके सुझेड़ के प्रति है व्यक्ति के निर्देश विशेषकर वह होते। धार्मिक वादों की कोटा की हमने मानक जन-समुदाय की विशेषता फल किया। को खंग परिपूर्वक युग का गांधी थी। यह युग का गांधी की ही फलन्त्रुति की कि निराला और पत्नी और धार्मिक तथ्यों ने स्कृतीकरण धार्मिक जनता के हटकर पूरे धरों की बाहर करना हुआ कर दी। निराला जी ने संख्या के निर्देश पत्नी की हुसान और पोथे की पीठ पर राह ठोसे हुए अनुसार को देखा जो पत्नी
बी ने इस स्थानिक पुष्प प्रसू वनच्योति को देखते ही बात करते हुए स्वयं ही यह प्रश्न करने के- 'वाणी मेरी चाषियों तुम्हें क्या कराओ?' हतना ही नहीं, देख रहा हुं वाणी विश्व को मेरा प्राप्ति न करने का कराओ' कह कर क्रिया ने यथासाध्यत्ति नीति को छोड़ दिया। जब पर वाने के प्रगटिवादी क्रियाकरों ने यथासाध्यत्ति कार्य-रूप का निम्नांकित किया।

• प्रगटिवादी दृष्टिकोण के अनुसार साहित्य जीवन और जगत की वास्तविकता का एक विशिष्ट प्रक्रियान стан है, वास्तविक सवार्थ अ प्रतिविन्यास और उसकी बाघीनता है, उसका दप्तर और इसकी फ़सल है, उसकी साहित्य घोष करने वाणी और अय करने वाणी अर फक्तरी साहित्य है। साहित्यिक प्रमाण और परिणतन का एक हवितर है।

गुरुजी के प्रगटिवादी क्रियाकरों ने भी पंक्ति सुन की प्रमाण-प्रक्षिप्त और प्रमुख पद की रहस्यमयता झूठ साहित्यक ने बोलकर साहित्यक की ठोस वाणी पर की कार्य-रूप कर नाम लिया। बहुत हुई विज्ञान के युग में का रूपान्तरण की बात जब प्राप्त प्रतीत कर नियत का बाद वाणी नहीं होती। वाणी की अपूर्तिका की कल्पना के सीना ज्ञान-पूरे चित्रका का प्रवेश्त होने का। यही कारण है कि हम क्रियाकरों ने साहित्य में वरिष्ठता की नई धारा यथार्थपर्याय के कल्पना की। उपाध्यक्ष जोड़ी जहाँ पर 'मुख्तारों' का दरारियाष वाणे की बात करने को वहाँ पर क्रिया बुद्धापुरुषादि का मानने की फूल बनने मौजूद वायक करने लिये।

'हूँ मानी माना यथार्थ तो परदुः'। (भायता मंदिर: पृ ६०)

उपाध्यक्ष जोड़ी यथार्थ कार्य के गीत गाते हुए क्रिया ने दामोदर प्रसू की कार्य गुण का दामोदर प्रसू के गाने गाने साहित्यक के उद्धि ने उद्धि प्रसू के मानने ने भाग करने के लिए है।' यथार्थ प्रसू के कार्य-रूप अंवारणक ने निम्न विकल्प प्रक्रियाओं में होता है:

1 हिन्दी की प्रगटिवादी क्रियाकरों डांगणीवाद: पृ १०५
2 गंगोत्री: पृ २६
वास्तविक सवाल तथा उल्लेख के बोधकी स्वर:

प्ररूपितवाद में ही बादर सप्तम्ब कविता का सम्बन्ध जन जीवन के साथ बुझा।

हाँ, जीवन की बादरण है कि मात्राएं हस स्नान में ही जन्म हो। उससे भी मुख्य
रूप से स्नात करना मुश्किल है। हां, जीवन का सम्बन्ध जीवन का सम्बन्ध जन
हस स्नात करना मुश्किल है। हां, जीवन का सम्बन्ध जन
हस स्नात करना मुश्किल है। हां, जीवन का सम्बन्ध जन
प्रागतिकारी कविताओं ने समाज के भिन्न जीवन को बच्चे निकट से देखा।

होरा की कहाँ में फिरते यह गरीब महाद्वीप की जगह मंदिरों को देखा, बाया ही गुरुण-प्रायाम समय में कल्याण के वेदियों पर जीवन को हराम करते हुए फिरते भी उपविष्ट बारी जीवन को देखा। बाया के प्रति हन कवियों में गहरी लेहना तो जगी ही साथ ही साथ हनके प्रति दृढ़ वास्ता भी उत्पन्न हुई। दंगलपतियों, रक्षक मातकों

तथा जनवरों के प्रति युगांगम तथा बागी अंतर्द्रव्य किया तो हन भवुलों, ब्रह्मांतों

बाया उपविष्ट जनता में पाप व्यक्ति-स्रीभक्ष-बन-भक्षुओं की ज्यादा भी मारे का काम किया। 

सुयाई जन सामाजिक विकास की सिकटर बनी हुई नारी की मुखिया की भाषण। प्रागतिकार उपविष्ट निम्न में ही पंद्रे द्वारात्तक दोनों से हो गई। नारी, प्रकृति या प्रागतिकारी मात्र नहीं रही बल्कि जीवन को सम-सिकट करने वाली वह पुरुष की स्वभाविती भी बनी। समाज के मोटे विशेष में बच्चे धूम नारी

को सामाजिक जीवन उसकी ग्रामतिक भूमिका से परिपक्व कराया गया।

सुयाई जन बाइंड हुई भावना का प्रतिकार हुई प्रागतिकारी कविता ने किया।

वह काव्य के सलक-यात्रा-नायिका के रूप में राय-षुष्णा या राय गामी या देव-सेली ही नहीं बल्कि सूक्ष्म के सामान्य व्यक्ति वपनारे बनते लगे। सामाजिक बातों के वालों में यह संघरश नवीन ग्रामतिक भूमिका की जिसमें प्रागतिकारी काव्य ने ही समाज के समय प्रस्तुत किया। घरेलूबंद बहुतों, बन साधारण जब नारी की

तुलिया दृष्टि से तथा बन-शिक्षा को उन्नतिपूर्ण करने की उपचार हे वह एक ग्रामतिक-

कार्य था जो प्रागतिकारी कविता की एक महत्वपूर्ण उपविष्ट माना बात खला है।
तात्पर्य यह है कि प्रागति कहाँ ना कोई को कहाँ ना मनोरंजन नहीं 
रखा बतिक उसे दूःख का फाड़कर छान कर रोग के मूल कारण को ही समाप्त कर 
देना चाहिए। यह तौर पर सक्ता था जब बनने के साउण्ट शक्ति को बनाए रखा जाय। यही कारण है कि इन कवियों ने बाष्ठा-प्रवास बोद्ध दुःख के रोज़गरी 
स्तर को बन्द कर दिशा व्यवस्था किया है। इन शब्द की प्रज्ञा में निर्माण 
की मांड़क्षा की निश्चित है। लोक की वाण-विषाणुता, उद्वेग-नीरब व विदेशों को 
मिटाकर शब्द को एक दिन चार दिन पर प्रस्तावित करने का स्तुत क्षमा प्राप्त 
या गंगिवन्ध कविता में लिखा। ये मांगवाद का उपदेश नहीं देते रहे बल्क युग रंगे 
से कहते रहे:—

* * *

हरीता हो रूह कोई बार दुःख तप से काम के, मह पाप है,
पुण्य हे विशिष्ट रहित देना उसे, बढ़ुर रहा यह तरफ लो नाद है।
(अईयोग: दिनकर: दुःख शुद्ध)

बाष्ठा कवियों की मांग बाष्ठा-शृद्ध के कवियों में निराशा या प्रश्न वाद 
की प्रज्ञा नहीं बनाए पायी है। जीवन की विभाजित में संस्तर होकर ये प्रवास की 
मांग निर्धारित में बैठ चार लहरी के कोरोना को समने वाला प्रलोकी नहीं है बल्क 
तुल्य की गंगा को प्रभावित कर युग युग से मूली प्राप्त वसी को शरी-शामला बनाने 
के लिए करता है:

* * *

पुण्य प्राप्ती
हरीत, निर्मल वसी को हरिप्रयोगी की
युग की गंगा
कारोबारों को मेंटोर की। (युग की गंगा: केदारनाथ बाष्ठा)

हन पंक्तियों में चार क्षमाक चार बाष्ठा-शृद्ध विरास्त दिलाहार देता है।
बागे की बाजी बूढ़े को बुढ़े संक्षम दिलाहार देता है जब वह यह कहता है:

* पर निकस्य है, बुढ़े निकस्य है हलाना—
दिनकर बाष्ठा खाटूसे छिपटा।
पवित्रो मूल कोषा कोहरा दाणा में
प्यारी धरती को स्वाभीकर कोषा।" (छुं की गाना: ३१-३२)

वास्तव में यह धरती विज्ञानों, शिक्षाओं, माधूरों बीर महानकश ठोरों के है।
उन ठोरों की है बो श्याम ग़ली बौर बास्तव में वह निकाल काम करते रहते हैं। बाबा
तक तिय में उन्हीं उपयोगित रहे हैं, साहित्य पत्रिकाओं ने इनके प्रदीप वपनी पदयात्रा-
द्वारा नहीं ठाटी थी। परन्तु कहिं कहीं इनके प्रति किया उन्दु है। नागाश्मुक का
कवि तो कोटि कोटि पृथ्वी पृष्ठों के विराट सिंहासन की कल्पना करता दिखाई देता
है।
"गढ़ा जा रहा कोटि-कोटि पृथ्वी पृष्ठों के लिए
विराट सिंहासन--" (छुंगारा: ३० ६६)

कवि शैलियोक्त सामाजिक विश्वास को देश वाति हुंकी का है परन्तु निस्कर
निराकर नहीं है। इनका विश्वास है कि संसार का यव-निरान्तर कवि होगा वह
कविता करा रुकीं सबसे कविता की जगह हो जानेंगी पर उसके पुत्र-पुत्रका का कस्त का
दासका होना। कवि युग बढ़े विषय के पते कविता में बख्ता बने बढ़ने का खेत
देता है यहाँ पर आन्तिक के द्वारा नतिजामक की भी कल्पना करता है:

कर तून निरान्त र, दिखा कुछ
दु अपने पोशरा का करता
पराशीता विविध बोझकर दिखा
नयी गति का उपभोक वन" (धरती: शैलियोक्त: ३२ ६७)

किंग मंड़ दिंग "दु काट युग धरा धरा विश्वास के कवि हैं। इनकी कविताओं
में निर्देश कविता की जगह है। परिलक्षण के जीवन के मुक्ति पाने के लिए कवि सुदैव
देता है:
"हस परिलक्षण के जीवन से-
विट्ठल करो, विट्ठल करो" (जीवन के बान: ३० ६२)

माधूरों, माधूरों बीर शोभिताओं की जिंकन में कवि को निराकर विश्वास है। शोभिता
वर्ग में जिंकिया कुछ जिंकन में कवि मूल्यत: परिलक्षित है हसील उन्नीं उद्देशित करते, हुह
कहता है:"
वायू उठी चली चली

धरारणा में कुरारण मुनाफ़े...।(जीवन के गानः२० ३०)

वस्त्रपूर्वक की चौंक गरित हुवा क्रिया पूर्णिः। वास्तविक यह है कि ख्यातिने का काम ही शिक्षण की बातों में पिसता हुवा दिवमस्तिसः खुल होगा, आपातिक यारी की कृष्णा व्याप्त हो जायेगी और सुख-शान्ति का काम ही वास्तव व्याप्त होगा।

सुन हमारी पी चाली पर
पूर्ण वस्त्रा के पूर्ण दिखें।।(विश्वास वहता की गता:

पंजाब के हस्ताक्षरण पर अर्थशास्त्र के प्रश्न कार्यों की आवश्यकता फारिदिक तरीके द्वारा समाप्त होगा। रामनवीं माद्र ने मती वायु और विश्वास के राज नहीं बल्कि -

(गंगा त्रिगंगा)

अधिकारियों के प्रावधानिक क्रिया में पी अस्थि और विश्वास के दुइतृप्ति स्त्री विविध देखे हैं। उसी तरह गोड़ी ने "मुखा जन्ना की कथा किया"।

की कार्य क्रियाओं के ख्याति को लोटे होने की ग्राम की है तो की वरिष्ठ ने कृष्णा

की कारण राज तो कैसा है।

"कृष्णा, वो कृष्णा।"

या गाणा...।।(कृष्णा: पूजा २६५६)

कृष्णा के साथ-साथ की पुस्तक में भी कमियों दुःख के सार में ही पुस्तित है।

जीवन के प्रमुख अंदेश वर्णों में ज्ञाति ही कार्यकाल में योग्य का उत्साह खुद सदुच्छानाम है। स्वातिश्चले स्वास्तम में खुक पहुँचने की निश्चितता है।
उरेय मरती चूहे, बदम बख्स दूसी रहे ।
दिशा विश्व क्रमां क्रम गाना उम्मेरे । (कौशिक : फू २४)

शुद्धार्थी प्रस्तावादी कवियों में नेहरुसमि स्थः इसे कवियः है जिन्होंने स्वपृष्ठ
बनता में भाग्यति उत्पन्न करने का काम किया। बनता की शक्ति पर हमें विश्वास
है तथा हमकी वाणी में भाग्यति स्वातंत्र्य प्राप्ति की फसना तथा खुद्सा मात
का सच्चा उद्दार है। बन-भाग्यति के लिए ये एक वेतानिक के रूप में उद्घोषण करते
हुए दिखाई देते हैं ।

* बाग रे ; बाग सुनारा--
    जो ; पूरे स्वारणा ज्वाला । (बर्म: फू ३५)

माता माता की परततना कवि के लिए दूसर का कारण ब्रह्म है परन्तु यह गुलामी
कवि की आवश्यक दृष्टि भी फर्पण नहीं कर पाती है। बल्कि उसे बाहर भी उंचाईत करती
हैं ।

* कवि केरी महायणता माँ स्वागिता नां प्रागऩ ज्वाला ।
    ज्वाला ज्वाला करारागार, स्वागिता ना या नाकार ।
    (बर्म: फू १२१ ८)

कवि मेधावी बो राजनीति शायर के रूप में सहायत हैं, उनकी देश की सामाज्य
बनता के प्रति बहुत बड़ी वास्तवता है। कवि बड़े मुक्कल से नए स्वर में नये भीं को
प्रस्तुत करते हुए भ्रम को कानने की भार करता है।

अबे नूतन शर्मिके मात

नूतन भ्रमा दु गान
गाना बुल्ली क्राकान
काना भूर ताज्यां । (युग बन्दनां: फू ७४)
इतना की नहीं कवि बार बार बड़ी बीरतापूर्वक बागे क्रम रखने की भार करता
है। महान विविधतियों में भी बागे क्रम बढाये बाने की उद्घोषणार करता हैः--

* बागे क्रम, बागे क्रम, बागे क्रम
    यारो फना ना फ़त पर बागे क्रम
    (युग-बन्दनां: फू २३)
कवि मेघाणी मारात्मक रूप को ध्यान में रखे नजर देते हुए, अन्य काव्य का तबू घातक बन जाता है। ज्ञान का उपर बीजवा
ते बादरी प्यारी सफर, को मोड़बाँ। (सुरुवात: फू 28)

गांधी जी के गोपनेवत प्रस्थान के बौद्धिक स्तर पर लिखी गई यह कवि मेघाणी की कविता में जहां देश की बर्बर यातनाओं का स्पष्टीकरण है तथा पर कविता में गांधी जी के प्रति बौद्धिक विश्वास है। वह बात है कि गांधी जी का एक ऐसा महत्वपूर्ण है जो व्यक्ति बारे यातनाओं के बारे गलत को पीकर भी भारतीय जनता को वर्तमान समय करता रहेता है। कवि तो कवि कहता है:-

केले करोरो फाओ नो बाहः पीकरो बाहौः
सागर पीनाराहः अन्तक नव ढोल जो बाहौः।
(सुरुवात: फू 24)

इस प्रकार दोनों की मानणाथी (हिन्दी-गुजराती के फार्मियवादी काव्य के विषय में) इस स्पष्ट होता है कि इन कवियों में जन-शक्ति में बहुत भीड़ भीड़ बौद्धिक विश्वास रहता है। यही कारण है कि बड़ी से बड़ी वास्तविकताओं में सिखे निराम नहीं हैं। लेकिन सुधार जनता को जागरूक बनाने के साधन-रस्ते स्थायी बौद्धिक की बारे उन्मुख करने का गृहस्त्त राख कहां इन फार्मियवादी कविताओं के विषय में लिखा है।

फार्मियवाद का व्यक्तिवाद मान्यतावादी कविता की प्रतिक्रिया स्वतंत्र हुआ। ह्याया-
वादी कविता व्रूप: व्यक्तित्व शोधता बा रही थी। विशेष जन शरूआत की प्रतीति के द्वारा कह सुधा के कवियों की धीरें दीप्ति व्यक्तित्व को प्राकृत देंदी छूट कविता की वायुवादी को संबंधित करती बा रही थी। व्यक्तिमत्त छूट स्वतंत्र दर्शन की विमान-प्रमाण के परिणाम स्वतंत्र, वायुवादी छूटकियां जो लाभमत्त में फंसती बारी थीं उसका
घोर प्रतिकार प्ररतिवादी कविता ने किया। इन प्ररतिवादी कवियोंने कविताओ 
को व्यक्ति के धरातल पर नहीं बल्कि समाज के धरातल पर प्रतिकार किया। कहा कि 
हमके जीवन दर्शन के सामाजिक था। हमके यह पी तात्पर्य नहीं है कि हमके 
व्यक्ति की उपेक्षा की। बल्कि ब्रक्त ब्रक्त के विषय के परिणामोंके 
घोर मलिना की। हमके मानना था कि ब्रक्तवादी जीवन दुस्किल मी अगर 
समाज सामाजिक है, समाज की गतिशीलता में बाजरके हैं तो उसे भी अंखीकार किया 
जाना चाहिये। साहित्य का चौथ व्यक्ति विषय तक सीमित नहीं है। बल्कि पूरा विराट जन-जीवन समूह विशाल मानव समुदाय है।

क्षणवाद के उपरकाल में सुभीत कवियों की दुस्किल की बदली जा रही थी।

इसिंदनन्दन पंत समूह निराला जैसे कवियों ने अपनी परिसंचरण द्वारा जीवन दुस्किल का 
परिचय दिया है। पंत ने संवैधानिक व्यक्ति को देखकर देख के गरीब ग्रामीणों 
समूह श्रमिकों के जीवन के कारण चिंताओं को प्रस्तुत किया। मार्क्स के द्रष्टव्यक्ति 
ब्रक्तवाद के नवीन धरण की तकनीक को प्रस्तुत करते हुए पंत ने सामाजिक जन-
जीवन को वस्तु के वर विवाह के मुद्दे करने का प्रयत्न किया। विभाषकर्मी के आत्मा 
शात्रणा को सामाजिक परिवेश में देखने हुए पत्ते ने सामाजिक-जन-समुदाय के प्रति 
अपनी वास्तविक व्यक्ति है।

वे नूकें हैं, वे जग के अम बाजो से प्रोफिट,
हीरे की बीज, बूंद जा बे, यु जिन से सीमित,
नहीं निभावे करी अम से बीजिका उपार्जित,
नेतिन्त्रा से भी रहें जो भत: बोपरिवृत।
हसें कवि ने समाज के एक ऐसे वर्ग को प्रस्तुत किया है जिसकी आयु आस्था पर ही 
जीवन वाले के धीरे-धीरे ताके की नायकता उनकी का लोकण कर रहे हैं। निराला 
का अवकाश विषय की दुस्किल से बाकी व्यापक है। 
कवि ने कहा त्या उद्वेषन करते हुए शरीर के अंत: 
समाज के भाग्यिक जन-समुदाय को सुना हो उपेक्षित थारे के प्रति 
गहरी सदना के कारण कवि का रागात्मक बोध विवक्त दुहरा है।

---

1 सुशासन: सुभिंदनन्दन पत्त्न: 7031
यस्में है केळस्छ, कृत्य मानक ।
ढीता जो वह, कौन सा शाप,।
पोपता कठिन, कौन सा पाप,
यह प्रश्न सदा ही के पत्र पर,
पर सदा मानन इस का उच्छ।।

यस्में व्यक्तिवाद का लक्षण करते हुए साहित्य के स्वरूप और संबंधित विकास की समानता-नायों व्यक्तिवादी कविता के उद्देश्य के ही जन्म है ऐसी ही जिन्होंने वास्तविक और संबंधित विकास व्यक्तिवाद में सवारी बनाई। व्यक्तिवादी कवियों ने कविता की स्वरूप सामाजिक परिस्थिति का ही व्याख्या दर्शाया और उसे प्रश्न क्षेत्र में यथार्थता मिलाने से उठा का सामाजिक मानव पूर्व में प्रस्थापित किया लिखितांतर में प्रश्न क्षेत्र में उसे प्रबुद्ध और जोशी, संदर्भों तथा रंगों में कविताओं के कार्य राष्ट्रिय पात्र, उत्तराधिकारी जोशी, संदर्भों तथा मेलोडियों जैसे कविताओं के किया।

व्यक्तिवाद वस्तुकार: कवितात्मक की है, जिसका साहित्य की वास्तविक रूप सदा विरोध किया गया है। कविता के लिए का नाम वस्तु: व्यक्तिवाद की है देना है। इस उद्देश्य को सामने लगाया कविता या तो यह शब्दजाल की थुस्पी करता है या कोई शिक्षा कार्य का प्रमाण करता है। कार्य के वस्तुकार बोले कि कविताओं का प्राप्त होता है या तो विवेक तथा सत्यता है या उसकी सत्यता ही समाप्त हो जाती है। काव्यों के शिक्षा कविता के लिए व्यक्ति की वास्तविकता पर नाय भाव और वस्तु के काम में उसकी नियोजनता ही समेत ही अक्षर है। संभवतः हसींद्र व्यक्तिवादी कवियों ने यह प्रश्‌न उठाया है कि व्यक्ति कोई कविता और शिक्षा को प्रकाश देने वाली सामाजिक समाजों के विस्तारित है व्यक्तिवादी साहित्य-वृत्ति की वर्तमान विषय सूचना के सन्दर्भ में सार्थकता का है?

प्रणालीवादी कविताओं ने दौड़ी बीच में विषय पत्रों को बड़ी बातिलता के साथ पूरा किया है। उसमें कोई वैद्यकानिक महत्व नहीं है बल्कि ग्रामीण और सरहदी
बीवन के बोलते हैं यह चित्र प्रमाणित स्पष्ट है। इन कवियों में कवियों की माता कल्पना नहीं बल्कि कहाँत्रू की वापसीकार हुआ है। जैसे ज्ञाता है इन कवियों की शहरी बीवन की ग्रामीण बीवन की अलग बीवन का साथ मिट गया है। जैसे चित्रों में कहाँत्रू की प्रधानता है, माता की नहीं।

प्रागियाराज काव्य काल्माद्विन गान्धी जी की बीवन द्रूपद से प्रभावित है। इन दोनो द्रूपद-पुराणों मे सहारा वर्ष के उदार पर विशेष बल दिया। समाज के नव-निमित्त के लिए व्यक्ति का मांग देना भी उचित है की मातृत्व की स्थापना मांझे मे की थी। गान्धी जी भी बहुत की सुख सुविधा या मनोहरता से प्रेरित हो सरसोदारा या बालसोदा के घर को दुहंसित किया। हिन्दी बीवर गुजराती कवियों का प्रागियाराज काव्य इन दोनो साहित्यियों के बीवन नीति से प्रभावित है। वत: व्यक्ति की जगह समाज की उद्योगना हस दुर्ग की अपनी विशेषता है। समाज की मांग के बदल ही इन दोनो मानवादियों के कवियों ने लक्ष कर विशाल बीवन-द्रूपद से समानता बीवन दर्शन को अपना लिया। साहित्य व्यक्ति का नहीं बल्कि समाज का दर्पण है। साहित्य दर्पण में इन कवियों ने समाज की वास्तविकता को अपनी प्रविधाक दृष्टि से देखा, प्रशा है। यह प्रागियाराज काव्य का एक विशेषता है।

प्रागियाराज का प्रथमार्ग एक विशाल बीवन-द्रूपद के प्राय हुआ था। विशाल जनवादी बीवर सामाजिक का समूह की व्यवस्था करने इस दुर्ग के कवियों ने साहित्य के एक दृष्टि परम्परा की ही बढ़ दिया। साहित्य व्यक्ति द्रूपद-पुराण न रखकर लवजन मोह को जाने खा था। कार इस दुर्ग का साहित्य लवजन मोह को नहीं बना तो बहुत मोह को अवसर बना। बहुत की वास्ता बालकांप, बड़े-बड़े, उत्थान-पतल का कहानी को प्रश्न कर इस दुर्ग के कवियों ने मध्यव्य के कवियों का मार्ग प्रकट किया। परन्तु देश के प्रकारण यह जनवादी मानव प्रश्न के दृष्टि के कवियों को प्राप्त नहीं हो सकी।
भारतीय जनता जो जन्म धूँधीपतियों की चक्की में फिस रही थी, उनके बर्बर वत्साचार से कल्याण बुद्धन कर रही थी उसका खट्टर विरोध है। प्राकृतिक कवियों ने किया। क्योंकि ये सभी कवि में जनवादी कवि थे जो जनता के हुह-दर्द को बनना ही दुखद दर्द समझते रहे। गुँग्राणी के कविवास्कर जोधी तो बाध्ये व्यक्ति स्वयं का निम्न मानक बनने की कल्पना करते दिखाई देते हैं:

"व्यक्ति मदी ने बुदं विच मानकी,
माथे कहु झुल बुद्धन्वरा नी। (गंगोत्री:३३)
"जगण्य यही माव केदार की हन पंक्षयों में भी दिखाई देता है:-"

"तथा काणु कि हम बुध
dक्षरण है, एक देख है, एक गैंट है, एक गुन हूँ...।

- केदार, नागाजुन के बांदा बाने पर: फूँछ नहीं-
रंग बोमें है।

काव्यावस्था में मरन हो सब में एकात्मकता का भ्रम बनाना तथापि जीवन की बुधद बढ़ी विशेषता है। जो यहाँ दशकीय है।

पूंजीवादी समाजव्यवस्था में रहने हुए भी मानवतावाद या समाजवाद या
जनवादी परम्परा के प्रति बास्तवात्मक एकता दूर करने का कार्य। व्यक्ति यह जनवादी
या मानवतावादी मानवा किया है पूंजीवादी पालान्कि परिस्थितियों से हुकु.
दी जाती है। वत: यत्र तत्र हस प्रकार की संकट भी क्रियाओं में दिखाई देती है।

"किया किया तर हँ साय जाता है
हन पीठ पैटों की वस्त्रिय में रहते रहते ही
पैत्र न में सुह ही हो बालां
किया न छ है पूंजी का कबार सुमस्मर के पी
पैटों के हार्दों में की बिक बालां।" १

１ पीठ पैटों की वस्त्रियें: दत्तराध ला दर्द: रणगीत
कवियों का यह संकाल पुरुष की है जो उन्हें पूरीवादी समाजव्यक्ति के जनतादी समाज व्यक्ति की ओर उनसे बोलने के लिए प्रेरित करता है तथा साहित्य का व्यक्तित्व की माहूँ-मूर्भू के उदाहर व्यक्तित्व धरातल पर स्थापित करता है।

व्यक्तित्व चिन्तन रचना साहित्य के व्यक्तित्वीय बना देती है जब व्यक्तित्व चिन्तन रचना साहित्य का रससूखा बना कर जन जीवन के बाहर प्रेरित करती है। यह रससूखा प्राणिक कवियों की रहस्य है। हमने अपने बाल्यकाल से जनता के चरण देखा तथा अपने दर्द में अपने गीत के लिए दिया बना देने की भी कल्पना की है।

हरे बच्चे कहते हैं, यहे तर राणी के चरण देखा है।

हरे गीत दिया बन जायें।

पौर- छोटे न जब बनकर, के तब जलकर पैरी चिता उखाऊ।

- पैरा गीत दिया बन बाये। तीखा।

हरे की नहीं, यह सून के कवियों ने शोषकंघ के साथ-साथ खर्च न्यायी मानना को सी यह लक्ष कर देना चाहता है कि यदि धरण पर जनता की बाह्यता की दृष्टि नहीं सुलझा तो स्वर्ग से भी भाला सकता। ध्यान सजके दर्द के लिए ध्यान धरती में दिया बन बाया। दर्द का तीखा बाक्य रहती है:

- छोटे बच्चे के मन दे स्वर्ग छुटने हम जाते हैं।

- दूसरे देह में वस्त्र दुःखारा दूसरे हम जाते हैं।

यह कहता व्यक्तिकल्पना न होगा कि भ्राति ध्यान के लिए कला रुप को अपनाता उसमें व्यक्तिकल्पना के स्थान पर जनताके रुप की भावना है। उनकी उद्देश्य का बताना वस्त्र समाजविषयक रहता है। अपनी कविताओं द्वारा जनता में बाहू लेने तथा जीवन का बारोबार बनाना का बारोबार करता तथा जीवन को संस्कृति मचाने की प्रेरणा देने की हक पाता रहता है। तथा व्यक्तिकल्पना नहीं कला भी जन-समस्ताय की माहूँ कल्पना बना है।

---

1 इनकर : दिनकर 23
यायात्मा जीवन-दृष्टि, जीवन की क्या व्याख्या किती?

प्रगति का जीवन-दृष्टि, यायात्मा की मायमूर्ति पर निर्भर बना है।
हिंदी और गुजराती के 'प्रगति' के अर्थ कथित गोयंग के पूर्व के चरणों की क्षमता में बृहिंग गीता यायात्मा की मायमूर्ति दुरुपयोगिताय नहीं देती। यायात्मा कम बहुतीर्थ
उल्लवों और वायुविनय के साथ यायात्मा का जीवन स्वातंत्र्य स्थापित नहीं कर सकी। गुजराती के पंडित युग की थी यही प्रमुख रही। पंडितयुग की क्षमता में यायात्मा-विक्रम का बोध्य स्वरूप कर नहीं था। यायात्माम् ते हूर हटाये यो वस्त्रान्धेम और प्रमुख-वज्र में ही विचरण करते रहे। यायात्मा स्वयं फिशा तो वीण्योत्थान बायता के बायता पर मीठा प्राचीन स्वतंत्र होर देता की बायता करने हेतु जिम द्वारा रास्यमुक्ता का गारी। लं के युग के श्रवण यह पूर्ण की गयी ये कि वायुविनय के वितरित्क मूर्तिक नीति है जिसके शुभ-कृतकृत बायता उपेक्षित विनायक वनपुराण का नीति का माध्यम है। दिनुक्षम यह श्रवण प्रशान्त की यायात्मा की मायमूर्ति पर प्रस्तापित करने का हेतु हिंदी में गुजराती की क्षमता को है तो गुजराती में गलियुगीय श्रवण का।

हिंदी और गुजराती क्षमता की नहीं बल्कि इसी माण्डितों के युगभव श्रवण पर सामान्य बायता के अध्ययन भरोसेम तक मद्दत का। माण्डित ने रामेश जीवन में वन वे सामान्य प्रश्नों के प्रश्न की। क्षमता के ध्यान जीवन बिश्व के दूरी और उपेक्षित बन जाता है, लंबा संघ गारी ने किया। फ्रायाक ने यान-माण्डित पर विक्रम बन नियुक्त। वायता में विश्वास होकर देता जाता तो हम बोलती है - बायता यान समस्त - का जीवन में विक्रम नहीं है। बायता की बहुते हुए विश्वास युग के युगका ने मुख्य की बायता की क्रिया का नियुक्त। इस प्रकार उल्लवों की बलिकारिता का बोध्य प्रतिष्ठाकर स्वयं है बायता बोलियां युग की दुरुपयोग में श्रवण का बोध्य स्वयं का की विक्रम करता है।

जीवन में लंब श्रुत गुजरात नहीं है। विक्रम का वर्तमान भवान के सांन्यों का विक्रम करना ही नहीं बल्कि उनके लंबे बायता विद्वान स्वयं का नीति बाल्यकर्म करता है।
यही कोहिताल कार्य प्रगतिवादी क्रिया के फ़िया। जीवन की सजबायों का धेहां-जोशा देखते भरने का शायर न ग्यातिवादी क्रिया के फिया। हकी जैसा जीवन को गति देना था, गयापौरोध उत्तर नहीं करना था। ग्राम जीवन के उत्तर आण्वें ही अफ़िच्छन्दे में ही अपनी आवश्यकता हैं। हमारी खाटी बाटों पर केल के ही शहीद सर देहांजान निविष्क उच्च बिल्लन हो; सङ्गीत स्पन्दन का माल हो, सङ्गीत अंदाज़ का अचान हो, जो शीत की बात बना हो, जीवन की चबाहर का वह अचान हो, जो हमारे गति, संबंध और बेदनी पैदा करे, तुलारे नहीं, काफ़ी वारे ज्यादा बोना मुक्त का बदामा है।

"हम युग में जीवन की वास्तविकता ने जैसा युग बाहा। चारण के फिया है, बसे प्रश्न निशांस में दिलित हसने भाव बौद्ध वस्त्र के मूक हिस्त नहीं है। हम युग की जीवन का वास्तविकता सत्यता में कहीं पत्त लगती, उनकी जरूर की अपने पोंने पानी शानदार खुशा करने के लिए धीरे धीरे पर भाव का बाद तो फिया है। हमारे जैसा हम युग के चुनाया ढाना का अथाय नहीं है जिसका निषिंग भइ पर नाव रहा है।"

प्रगतिवादी क्रिया के जीवन और अन्त की कुछ नाकदीक दे देखा है। मुक्त जीवन के जरूर ख्यातनामा यह युग की जीवन की विशेषता रही है। समाज के बदले हुए युग परिवार को इस क्रिया ने बड़े तदेंप्राचे में देखा बौद्ध बनाया फिया। यही कारण है कि हमारी जीवन वास्तविकता के ज्यादा निम्न नहीं है।

यथापरम त्यांग नानान हैं कि बाहुलिक पदार्थों का अन्त स्बावाच विश्लेष होता है। प्रागृहिकणा के द्वारा ही मानक-महत्त्वहीन पदार्थों का सात प्राप्त करता है। यह जो के सावधान दर्शन की प्रमुख और केवल प्रमुख दर्शन है। व्याख्या की अभिव्यक्ति प्रगतिवाद की विशेषता है। साहित्याचार्य दर्शन की संरचना मानविक साहित्य दर्शन के बहुत निम्न है। इसका कारण यह है कि मानविक दर्शन कथास्त्र(फिलोसोफी) की जेता हे मुक्त होकर विश्वास का बहुतों हो गया है। विश्वास के परिप्रेक नेमः

1 सूक्ष्म प्रमुख(साहित्य काल-देखे ) पृ १४
2 सुमित्रालन्दन पंत : संपादकीय: स्पांय,मुंबई १७६३
प्राग-प्रतापी खिला ने जीवन के मूल्यों की सत्ता व्याख्या की है। मानुष-जीवन के मूल्यों में स्वतं-सिन्ह-सुन्तला का विशेष ध्यान है। प्राग-प्रतापी नित्यन ने इन मूल्यों की पदार्थ और मानुष प्रतिक वे समस्त धरोहर पर निर्भर किया है। यहाँ भाषा है कि मान्य-प्रतिक के समय तथ्य की सत्ता है। कहीं इस समय में (साहित्य) धरा प्रतिक प्राप्तविशेषता से सत्य होती है और समस्त संपूर्णता के रूप में दीक्षा की वांछनीय है। तत्कालिक प्रतिक के द्वारा सत्य की रूप में होती है, मानुष धरा का निम्नांकण कर प्रकट होता है। धरा प्रकटविशेषता का ब्रह्माद में परिणाम होता है। वास्तविकता जब प्रतिक के परिणाम होता है तो वहीं धरा बन जाती है। तत्कालिक प्रतिक के रूप में ही हस्तक भूमिका निभाता है। शरीर की रूप में वार भारी वाली वस्तु अवश्य लब्ध होती है। शारीरिक शक्ति और शारीरिक संरचना धर्म में तत्कालिक प्रतिक का रूप हो जाता है। यह तत्कालिक प्रतिक को मानना देश का अपरिहार्य प्रतिनिधित्व के बुद्धार्थ बनलाती रहती है। जो वस्तु धरा में है क्षण वहीं धरा और वांछनीय हो बन जाती है। परन्तु जिस स्थिति में भी वस्तु धरा है वह जैसा नहीं में वेदौ में वस्तु भी लगाई गई। इस विवेचन उपयुक्त का तत्कालिक मान-बित वेदौ वांछनीय की परिणामतित ही है।

बुनुरता के समन्वय में मी हस्तक भूमिका निभाता है। इसके द्वारा हस्तक युग के कथित ने जीवन के मूल्यों की सत्ता व्याख्या की है। प्रागतायो खिला ने प्राकृतिकता का अंतरण के बच्चन के मूल्य के हर निर्धार का उसकी प्राकृतिकता का रूप हो किया है। यह युग के युग के कथित ने प्राकृतिक का अंतरण के हर निर्धार का परिणाम करने में विवेचन नहीं किया। बल्कि पदार्थों के प्राकृतिक के ही तत्कालिक प्राकृतिक का दर्शन किया।

इस प्रकार स्वतं-सिन्ह-सुन्तला के मूल्यों की सत्ता व्याख्या हर्ष में कथित्वे ने मान्य-मूल्यों की स्थापना हेतु उभरी धरम नहीं रही। इस मूल्यों की परिभाषा हर्ष ने कथित्वे का मान्य-मूल्य पर नहीं बल्कि वांछनीय का मान-मूल्य पर हो। तत्कालिक धरा से हर्ष सुन्तला चकलाता मूल्य नहीं है वह कथित्वे का मूल्य है जो विवेचन दिशारों पर नहीं, विवेचन दिशारों पर
सिस्त होते हैं।

इस अराँच्या युग की क्रिता की क्षण जीवन दृष्टि यह भी रही कि इसके इंद्र के स्थान पर मुनि की महता को स्वीकार किया। अवधार बार प्राचीन शिविरों के प्रति इसके जीवन पत्ते में जवाबदेह अंतर्गत था। जब मूर्तियों की पूजा शरारत जीवन को बदलने तथा बनाने के सहारे होड़ दिया जाता था। वैशालिक पापक्रम बनाकर, मंदिर का घाटा बनाकर या गंगा स्थान करके उसे ली ली ती परिवर्तन और प्रगतिशील शिविरों की ग्राह्यता को काम करने की चेतावनी बनाते हैं। समाज के विषय जीवन को दूर कर क्रिता की मनान की समय परमस्थापन होने का।

“दीन दिलियों के कुर्नन बीज वाच की हूँ गये मनान?”

उपासक जोही को तो मंदिर में घड़िया सुनवे बदू मान ली तो “स्तवहरिते” ने तो जांच-जांच बोलते की बाबा श्री की बुद्धिमत्ता ही बुद्धिमत्ता ही। इतना ही नहीं गर्भवती माताओं ने तो जीन्य बालका की बारह कह मूर्तियों की हो जन्म देने की विभाषणा व्यक्ति बनाने शुरू कर दी।

“वैम की विशाल राधामय में स्वर्ग-विशाल पर,
राष्ट्रीय देख मंदिर में पत्तर की मूर्तियों
पुष्प हो गर्मीती
इंद्र के मंगली है गंगा
केश पार्शवण हाँ
कोश में मेरी की सन्तान。”

इसमें क्षिति ने इंद्र के प्रति अयस्क किया है। पत्तर की मूर्ति का कितना वाज-शृंगार किया जाता है दूसरे में बहावा जाता है जब कि उसंह श्री का वाज्य बिहार।

1 रामनी दिक्कर पृ ६०
2 युग की जन्म: केदार नाथ कुलाढ़ पृ.२२
विज्ञान युग की पुलिलापिता वे भी ये क्रम प्रभावित नहीं है फिर भी हमने इसकी बुद्धि करी की स्थितिया नहीं होते बायी है। हृदय की बुद्धि के स्थान पर बायर हुद्य की हृदय के स्थान पर रख कर इस युग के क्रियाओं ने कारण क्रांति-सघन का निर्माण किया है। वापरित, भाग्यवत, सार्वजनिक मार्ग मानने गनी प्राचीन के यथार्थ विषयों
को प्रस्तुत कर हन श्रवियाँ ने कानी कुसाग्र वृद्धि का परिवर्तन किया है। पिता, पिटी दानवादी को अन्तर कर भी यह युग के श्रवियाँ ने लोक मंदिर तंत्र का मानना को ही प्रस्तुत किया है। व्यक्ति में धर्म का समावेश और समाज में व्यक्ति का अंतर्गत योजनावाद प्रगतिवादी श्रवियाँ की कानी विशेषता है। कीमत की वापसी स्थानीय भूमि का वाल्स्क, उसके रोम रोम का बुद्ध बद किन्तु सम्प्रभु हेम हन श्रवियाँ की रचना-प्रक्रिया है।

क्षत और हिल के प्रति कानी वृद्धि:

हिन्दी के प्रगतिवादी श्रवियाँ की माण्डल कहीं बोधी रही है। भारतेन्दु ने यही ग्रंथ के राष्ट्र साथ पथ ने ही तीखार किया है। हस्तिर निरक्ष, दुःखा अनु कल्पना के भावज भावधान्यम के स्म से कहार जाने में केवल विस्मय लेकर हुए परन्तु प्राक्तिकताएँ प्रेमिक और मारा न्दु ये के सकल प्रयास के परिष्कार स्मार हा प्रधानां के स्थान पर स्वीकार कर दिखा नया। भारतवर्ष में वायुवादी श्रवियाँ ने मुख्य श्रीकृष्ण-कान्त प्रवासी का सुसंस्कार किया। परन्तु प्रगतिवादी श्रवियाँ ने उस कान्त प्रवासी की कृपा की नहीं किया। यही कारण है कि यानी की उन प्रवासी ने ही कानी प्रगतिवादी रचनाओं के निर्माण में वायुवाद की कान्त प्रवासी को न कान्त कर दर्द-पीड़ी रूढ़ी को कान्त कराया है। हस्तिर की उनका वेदांत अध्ययन को कल्यण न करके वह उनकी वास्तविकता में ही वामान्य स्त्रे हे वामान्य जनता तक करने विशेषों ने पहुँचाना था।

गुरुराची के गंगोपुर से प्रवासी ने ही परिवर्तन युग की भारतीय, कब्जा, क्षत्रिय निश्चित अनुकूलणा के पापुव के इब पर कान्त यह माण्डल कहीं को न स्वीकार करके उस कीन-सर्द-सीधी कृपा का सुसंस्कार किया। ये श्री भक्ति ने गाने में पालित युग के श्रवियाँ के हिस्से के प्रांगण में संग्रह नहीं थे। फिर भी उन चमत्कारिक कृपा के स्तर कानान ज्ञान की ज्ञान जनता को बायुत कराना अभ्य समाज का ना निर्माण करना ही था।

यही कारण है कि प्रगतिवादी श्रवियाँ पर प्रमाण: यह बारोस ज्ञान जाता है कि प्रमाण: ये श्री वृक्षा-वृक्ष हेम के प्रति वेदें उपासना ही है। जिन्दा, वृक्षा
शिल्प के प्रति हज़ारों बप्पति उपदेश की पुकार की है। बप्पति कविता-काव्यी मी को कथा के विभिन्न उपकरणों (मानन, विषम, वर्णार्थ आदि) से वर्तमान करने का यल नहीं सिखा है। परन्तु यह बारोव इसे उचित नहीं प्रतीत होता। नामीतक प्रागतिवादी काव्य-स्नातक बोर पुस्तकों की काव्य-सृजन में बहुत बड़ा भला है। वह यह है कि पूर्ण सृजन की कविता का मूल्यांकन जहाँ काव्यलखक कुंजी में ही जाती है वहां पर प्रागतिवादी काव्य का मूल्यांकन पथिक चित्रण समूह सामाजिक परिशिष्ट में सिखा जाना चाहिए। तत्पर स्थित ज्ञान दिया जा सकता है।

प्रागतिवादी कविता का संबंध-मनन स्वयं उसकी अभिमानकृति सब समाजिकता की भाव-दृष्टि पर ही अधारित है। इसके काव्य का उद्देश्य भीम, मद्दरों, सेल-सेलीदारों में काम करने वाले नर-नवार्ती के जीवन की सत्यता को विचित्र करना तथा बप्पति साहब को उन तक पहुँचाना। यही रिहायत में जैसे व्यावहारिक त्वरण है कि वह शराब सीधे, बोकाम्य मानणा-शैक्षा को अपनायें। शूषा भी ऐसा ही। हमें भी इसकी शराब सीधे विशिष्टताएँ रही हैं।

प्रागतिवादी काव्य में मानणा का रूप बोर की व्यापक शूषा। क्योंकि व्यावहारिक की व्यापकता के साथ मानणा की व्यापकता समाजात्मक ही है। प्रागति - प्रागति या प्रमाणीत या ज्ञात रहस्यमयी सदा से शोध के प्रति तत्त्व की अभिमानकृति की काव्य के विषय के लिए रहे हैं। पारदर्शी के जीवन के तरह जब का अर्थ सीमित नहीं रहा। कवियों की दृष्टि गोवां के तक देने उन्होंने गोवां के विषयों को देखा, लेख-विषयों में काम करने मद्दरों को देखा, सज्ज़ पर पतझर जूती जूती नारी को देखा, जिसकी कहानी स्थिति को देखा बोर साहा ही साहा शहरों में निंदा में काम करने हूँ शिक्षाओं को देखा। काव्य-प्राप्ति का एक व्यापक घरालू मिश्र बोर उसी के साथ शब्दों के चयन की व्यापक मूल्यिक भी लिखी।

हज़ारों घर-घरीया-शैक्षा लघु बोकाम्य फिर भी अभिमानजना का पूर्ण शैक्षा को अपनाया जिसमें जीवन बोर जीवन के प्रत्येक पोटों से शब्दों का चुनाव सिखा। शहरी जीवन की मानणा-शैक्षा के साथ-साथ ज्ञान अभिमाजन का जोकी जीवन की मूल्यिकाओं में पहुँच कर जन-वैचारिकों को भी अपनाया। पत्रिताम हर पर यहां हर हर बोर शहरी बाध्य-कवियों लघु जीवन के जीवन के रहस्य-शैक्षा के
परिचिता सुन के कवियों द्वारा व्युत्पन्न एवं वर्तमानीय समकालीन उपेक्षित कर दिये गए थे। उन्होंने इन दोनों माध्यमों के कवियों के बाद बालों के पुस्तक अपना खोजा।

हालांकि मुख्य उद्देश्य माध्यम को जन जीवन के लिए उपयोगिता करना था, जिसमें उन्होंने सफलता भी मिली। प्रागैतिहासिक कविता के प्रसार बोर प्रकाश कर यह भी एक कारण बना। काव्य जो शिक्षित वर्ग तक प्रविष्ट था वह अपनी साधनों के कारण विस्मित बन गया। यह भी इस सूची की अपनी महत्वपूर्ण विशेषता है।

मारात्मक रूप से केवल के स्तर में काव्य-शैली के बोर कार्यरता की है उसमें वर्णनात्मकता की विशेषता प्रदान तथा रही है। प्रागैतिहासिक काव्य के कथात्मक प्रसंगों बोर श्रद्धालुओं में यह वर्णनात्मक शैली की विशेषता प्रदूषित है। देश-माता, राष्ट्रीयता, और काव्य समस्ती कविताएं विकसित उद्देश्यकार्य कार्यों में ही अंकित हैं। यह शैली वितरण क्षेत्र के लिए तथा सामाजिक अवधारणा के निर्माण के लिए इस में देखने की भाषा भी है। शैली की गृहीत या राष्ट्रवाद का प्रचार की गया है।

कथात्मक उद्देश्यात्मक शैली भी हस्तक की उपरी विशेषता है।

प्रागैतिहासिक काव्य-शैली की दूसरी महत्वपूर्ण देखें हैं - उसकी व्याख्यात्मकता।
पूर्व के सूत्रों में इस शैली का कोई रूप से नहीं दिखता। प्रागैतिहासिक काव्य ने सामाजिक दृष्टिकोणों, राष्ट्रीय, गतिविधियों, सम्मान, साहित्य, संसूचकता रूपाकार निम्नभाव और संस्कृति के विषयों ने अपनी व्याख्यात्मक शैली में आधारित किया है। कविताओं के कवियों के स्वतंत्र व्याख्यान में इसके अनेकानेक उद्देश्य प्रसारित किये गए हैं।

इसके वितरित बिबंधायुध रूप केंद्रीय निर्माण में भी अमन्त्रित हनल्ल मर्मर का महत्व का अनुच्छेद होने की अनुमति नहीं किया है। बाल्क रूपायुध स्वयंहँ दुर्लभ है जब ने उसमें उपयोग के लिए आपको विशेष योजना की है। उसके बाद यह ग्रंथी के अनेकानेक व्याख्यात्मक जगत तथा संस्कृति को भी नहीं जमा में व्यक्त किया। इस प्रकार माध्यम समस्ती क्षेत्र परिषद का समान माध्यम परिवर्त क्रागैतिहासिक काव्य में ही बदल।
कुछ मिठाकर हम देखा क्या है कि ये प्रवातिष्टी कवि कलाकृति के प्रति उदाचीन नहीं रहे तो विख्या बागच्छ भी नहीं रहे। उनके लिए यह कविता का गीतपत्र क्या हो सकता है परन्तु उपेक्षित नहीं। क्योंकि कवि महर्षि शेषी भावनुमुख, सफळ, प्रशान्त तथा प्रशान्तात्मी बन पड़े हैं। सायास अनिवार्य सत्य मिलनाथ विशेषता नहीं है। मुख्य रूप से वर्णितात्मक, व्याकरणात्मक, बोधिक विश्वास विचारात्मक शेषी के वर्ण होते हैं।

कल्पना विषय में भी हम कवियों की अपनी निर्जल दृष्टि रही है। वास्तव में देखा जाय तो यह दृष्टा सुना ही वैसा बौद्ध काव्य को प्रत्येक दुःख से गुज़रते हैं का सुना रहा है। राजनीतिक परस्त्रीता के सुख देवता का आन्दोलन सामाजिक क्रियाएँ राज्यीय जनगणना से सुख देवता का आन्दोलन, तथा व्याकरण से प्रशान्त हो रहा है। सारे देश की काव्य को भी कल्प की परम्परा-गत रौनकों से गुज़रते हैं का भी आन्दोलन चलता। परिणाम स्वरूप कल्प विशेष काव्य का निर्माण होने लगा। कल्प के मिल्या बनना को हन्तोने स्वीकार नहीं किया। तुष्ण कल्पों की सदिशी वाली परम्परा का सबकर बुधनात्मी कल्प प्रयोग को बनाया गया। किसी प्रकार के यथार्थ युग का बनना कविता के लिए यह दृष्टा में गीतार्थ नहीं किया गया। सभी प्रकार की काव्य समस्ती बनकर ही देखा हिन्दी के कवियों में विशेष है। परन्तु युगातित के प्रवातिष्टी कवियों ने कल्प विशेषता का बनाया हुए मिला प्रशान्त, विश्वास तथा प्रशान्त इसे प्रशुल्क कल्पों को सुख्ता: बनाया है।

कविता में जगत संस्कृति के विषय में कवि पूर्वाग्रह किया है। गणना की गणना ही नहीं रही। यात्रा-क्रम-मंग को स्वीकार ही नहीं किया गया। मात्र जग बौद्ध प्रशान्त कविता के लिए उपेक्षित है। कविता के दृष्टि में कवियों की यह एक प्रातिकारी प्रतिकृत है। यह भी हस दृष्टा की विशेष प्रकटित है।

लोक प्रशान्त मण्डल के बदरिया, गुजरात, नवरात, बांधन, नागरिक, बांधन, बांधन शब्द का प्रयोग वाचात्मक दृष्टा के कवियों को विशेष उपलब्धियों है। यादा:---
वदरिया तम ध्न जन कर फर री।-मालवतारा चन्द्रोत्तीर्म: समाधान १७२

जो जन जन, जन जन
जन जन, जन जन
नाम गुजरिया हरि भाई। - पंज: ग्राम्या: ३३१

जी तो, जी तो तो नराता है। - केदार, जुन की गंगा: ३२०

इसी ही उद्दैं के बहान, बिन्दाबाद, हनुमान, तमनन, सामोह, बसान, मेहनत, तलाक़ वाली कब्रों का प्रयोग-संबंधियों ने प्रिया है। इन कब्रों के प्रयोग

से काव्य में अन्वेषण का तो बाही भी साथ ही साथ अन्वेषण का भी आगमन हुआ। इस प्रकार इसका काव्य शिल्प की दृष्टि से प्रमाणित होते हुए भी

प्रामाण्यता में सर्वोपरि समर्थ समर्थ है।

प्रामाणिय इन उपाधियों के बारे में यह उद्दैं एवं गंगा एवं गंगा के बारे में ही व्यक्ति से उत्सुक कह उसकी बाहारी आदर किया होगा। यह प्रामाणिय है एवं गंगा के बारे में ही गंगा-धरार इन इन बारे में समाप्त हो गयी। इन हम प्रामाणिय के उस उद्दैं ये पद्म पर विचार करते है।

प्रामाणिय की शीमाएँ: (शुम्भिदः)

प्रयोक्त हुआ की रचना में उद्दैं माता दूरियाँ के साथ इन किस पवित्र-पवित्र की बनने बाद उपर बाही है। प्रामाणिय काव्यांशेन्खर यथा निश्चल दूरियाँ

को लेकर चला चलाया तमनन मान्त की जो विराट कामना उसमें की तथा सारे सामाजिक वर्ण-विवेकों का प्रति स्वस्त समाजी काव्य की जो बादल मानना थी वह उसके उच्च-काल में नहीं रही। वर्तमान जहाँ पर उसने समाज बारे कन्हाया को भूमि देन की वहाँ

पर उसकी इन इन यह मुझे रहर मुझे रहर जो उसकी यही को ही व्यक्त करती हैं किसका हम कप्री पक्षें में विचार करते है।

प्रामाणिय काव्य का दानमंत्र साहित्य मोजिकवाणी बीजन दुर्गति रही है। यह

काव्यांशेन्खर तक के कामना दस्त करने हुए है। उसके वर्ण की मोजिकवाणी की

बारात्रिखाना मानना। वर्तमान एवं बीजन का न्याय है। इसके बमाव में बीजन की

बानी हजार्क़ंद बतौरी रहकर है तथा बीजन का बहुढ़ी विकास नहीं हो पाता है।
परन्तु मार्क्स की यह आन्यता जीवन के खार्मिक विकास की दृष्टि से कुछ उचित प्रतीत नहीं होती है। जीवन में कार्य का विशेष क्षेत्र कायम है परन्तु यह जीवन का स्वरूप नहीं हो सकता। मार्क्सी मौलिक-ज्ञान के परमात्मा की मूल्य कानन को पूर्णतः समृद्ध करना ही नहीं पाता है। इस के बारे मौलिक संस्कार के माध्यम से सम्पूर्ण प्रगतिशील अवस्था में जीवन के विधि युग्म प्रज्ञा: अनुभवता की रहे। दीर्घायार के अंतर्गत वे अन्यथा अपने आप के साक्ष्य के अनुसार वाक्यांशों की पथ्तुष्ट और परिशद्ध की साधन भी हुई होंगी, जीवन के स्पर्श कूल के द्वारा वातावरण को बाधा देने वाले धारी की वहाँ पर इस युग की अवस्था इस उम्मीद अवस्था का स्पर्श नहीं कर सकी।

प्रगतिशील जान के उन्मादों में शाहिद और जीवन के विश्वसंयोजन विश्वसन संवर्धन की प्रस्तुत करता हुआ जो नहीं निर्भर की गतिशीलता को लेकर चलाया। शाहिद जन मन की दखल वाक्यांशों का प्रतीत है। यह क्षेत्र समृद्ध रहने के बारे मौलिक कश्मियाँ ने अक्षम्यों का स्वरूप की नियाशा की किया। परन्तु इस जीवन की ज्ञान जमीन पीले हैं जरूर यह सत्यता वातावरण का स्वरूप नहीं है। कार्य की जीवन की तदस्मिन वर्ण होने वाले युग्म हुए हैं।

क्षान प्रकाश वर्ण जन जीवन के उन्माद के लेख हैं, तौर पर तौर पर रहे हैं।--
हस्त वह जनों की देश वाक्यांशों के बादह की कांपी वातावरण के पुरूष अंश के द्वारा शाहिद स्वाभिक अनुभव करने की धुन में हस्त प्रकाश की रचनायर प्रस्तुत की होती। जीवन का स्वरूप प्रकाश से वायोलिन का अवधारण भूत प्रतीत है।

द्वितीय विश्वसंदीद के परिप्रेक्ष्य से, प्रथम सत्य प्रारंभी जन-जीवन और की अवधारण हो गया। विदेशीय राष्ट्र की आवासीय वास्तुता संस्कृति वर्तनी की वातावरण की बारे में बात माननीय विदेशी ने हर तरह के देश की बारे में वन्मुख किया। वर्तनी यह तयी पर थी। निम्नलिखित वर्ण यह के बारे में निम्नलिखित था। रोशनी की होटी मोटी जनता नन को चाहता पुनःसंपन्न होनी थी। जो मन पहले चुक और जने वालों और सपनों के चंद पर ढूंढ जाता पथ, पर होटी होटी मौलिक बातों का सूचक
बड़ा रखा था। घर बाज़ार में लिखने को जो पड़ा था, तुलना रघुवर भी को पढ़ने लगी थी। नैतिक दुर्भिक्ष है यह पतन का युग था।

वह पतन का बीच सामान्य जीवन की बालिका बोली नाही पड़ा। परन्तु दुःख तो यह है कि सामाजिक जीवन की मंडल क्षमता का नारा लगाने वाले प्रगतिशीली सामाजिक काल की दुर्भिक्ष हास लघु लघु की विजय बारे बनाने एक नार्ता नोरवा वाले के विशाल की बारे थी। हस हसल हर विरोध के लिये हस हसल के देखे राखीन भाव और सलम बहुदयता को ही ही बोली। नारी के नर के प्रभावित थे बाहिताद्वार के माननीयाँ में सन्तान वर्ती प्राणण है। वही बल की फटी हो गई बल फटी के काफ़ी और तुल १६५२ की राष्ट्रीय शान्ति का जलता हुआ वातावरण हसी की सहजता को सार्रे करने में कफ़र करा हुआ। हसी सैद्धांतिक वजह शान्ति का पदार्पण हसी सारण में दृष्टा हुआ।

#बार दुर्भिक्ष का पुनः बार शान्ति के मुदरे ये प्रगतिशीली पश्चिम बंगाल के काफ़ी जैसे वार पर ज़रूर पर मुनुष्य कुदे और बिरस्तों की मात क़रीबा था। यह को हरियाल जीवन का उदय हो रहा था कहा। हसी सर्कार बनी थी यह वर्ती विकास लगती हुई। यह प्रगतिशील के पतन का था जारा भारत का बना। यहीं पर लोगों को विश्वास हो गया कि प्रगतिशील की मेतना बाहिता नहीं है बल वह तो वाद विशेष (गोरखनाथ) की प्रशिक्षत मात्र है।

प्रगतिशील काल में बल बिमल की क्षण को सीकर नहीं कथित की गया। शहर के तल निरंजन के छत्र हृदय के बिंदु देखने की विश्वास कहीं भिड़ी देखने की विश्वास भिड़ी देखने की हिंसक समझ। परन्तु ये मूल ही गये कि बल के पूर्ण विकास के बिना शहर का कहीं वही विकास अस्त नहीं। यह हसी संकुचित बारे खानी दुर्भिक्ष थी।

उस विकास के पूर्ण विकास के बिना हम की प्रशांत के विद्याध्यायी, देखी नारी शान्ति के हेड़ दे जीवन को उभार कहीं जीवन कहीं उठा कहीं। प्रगतिशील काल में

1 हिन्दी काल की प्रबुद्धक: धाता नामक धरि: पूरा ५६४
2 शायाए और हिंदी कविता: धाता रायकान्त अभ्यूष: पूरा २५६-२५७
भ्रष्टि है। यह वर चीन की प्रशंसा द्वारा मात्र तथा जीवन के बचत गर बांग जाने का प्रयत्न किया गया, वह बदल नहीं हुआ।

प्रगतिवादी शास्त्र-विद्या के विषय का सब था दक्षिण भारत का इस प्रकार राजनीति-प्रणयों। यह एक से सभी जीवन परिवर्तन का व्यक्ति राजनीति में भाग न लेने का निवेदन की मामले के साथ धारण हुआ। यह वाक्य का यह दृष्टिकोण होता है जहां पर कवि कविता के जोम जीवन-स्तर अविस्मरणीय बना। जानकारी जीवन की बाले अविस्मरणीय, प्रतिष्ठा बार पर भरा ग्रांमार्ग खा दिखा कहें रहा, उसके बाद व्यक्तित्व के प्रतिष्ठा की मामला पूरा यह। परन्तु प्रगतिवादी शास्त्रिय में केवल के राजनीतिक व्यक्तित्व रखने वाले कवि बार की शास्त्र के विषय और उसके संबंध की मुहरा कर शिष्यों के द्वारा शैक्षणिक का प्रारंभ करने का काम कविता शास्त्र के हटकर प्रारंभ का चारण बनी। फल स्वयं गन्तव्यवह उत्पन्न हुआ काफी राजनीति सदा सबसे बड़ी प्रशिक्षण विनाश करने का विशेष दर्शन है।

राजनीतिक दृष्टि के वारिनी प्रारंभ राजनीतिक शास्त्र के नाम पर शास्त्र के माध्यम से बना-बना की साखर बार की बार प्रेरित करने के लिए प्रमुख हुआ। हवी प्रमूख ने प्रगतिवादी काव्यवाद की राजनीति के आँधे में रह दिया और साहित्य का प्रारंभ प्रगतिवादी शास्त्र का प्रस्तुत अवस्था बन गया।

...... हलां थे वह वास पर दिया कि शास्त्र और जीवन कविता केवल प्रगतिशील कविता की हो सकती है और प्रगतिशील का कहा काम- पाकिस्तान।
उन्होंने राजनीतिक ज्ञान पर सबसे न हो रहने वाले कवि शास्त्र के दौरा में उनके बार पर रह सके।

प्रगतिवादी कविता की बाली के जीवन-दृष्टि से कार्यकर रूप से कुछ बनाया गया। कविता जससे नसकना मन की शृंखला का सम्मान करते हैं- किसी ज्ञाता।

1 काव्यावादवाद हिंदी कविता: हृदय रामाज्ञान इंद्राय: पृ २८३
2 वाक्यमोहन राम: कलना, जून १६५६ पृ ४
बहु दुरंत तथा दूसरे हा जीवन वस्त्र ने प्रमाणित किया। पहली हर्ष हस्तें दूसरे बिना शिरों के एकही तरह पड़ा।

श्लोक और माता-मामा को मूर्ति में रहने वाले स्वतंत्र कवियों और साहित्यकारों को वर्णन की सूची में बांधने का प्रावधान करना युक्तिमानी की बात नहीं है। इसीलिए यह विवाद के हिन्दास्तियों को प्रसंग पर पूरे फूलों के साथ सकारात्मक करना पड़ता है।

राजनीतिक विचारों और प्रभावित प्रवाह ने प्रगतिशील काव्य के राग-बोध को बिलकुल नष्ट कर दिया। प्रभावित प्रवाह ने कवि के स्वतंत्र व्यक्ति को बानारसी गलत के नाम पर सुंदर कर दिया। सट्टास्त्रक प्रतिमा कहां होने लगी। कारण कवि की सट्टास्त्रक प्रतिमा का विकास उन्नत अवस्था में ही हो बनती है। कहौं-शीरा साहित्य साहित्य दृष्टि के लिए हार्दिकस्वत की होती है। कहौं शीरा ही प्रगतिशील कवियों के दाय क्षेत्र है। यह माता-मामा की प्रगतिशील काव्य के निर्माण का बहुल कारण बनी।

प्रगतिशील कवियों की विख्यात यपायस्वादी दृष्टि ने पीएस भी काव्य को उल्लक्षण नहीं प्रदान किया। कल्याण का कविता विवरण भी गंवात नहीं। कल्याण कविता को कहौं करने के मार्ग साहित्य-भूमि की प्रेरणा भी बनती है। पर न्यू व्लय के कवियों ने हर ही स्वीकार नहीं किया।

मुख्य रूप से गरीबों, बीत-दूल्सियों और भक्तियों के दिखाये के प्रति काव्य अक्षर करना और वनीकर के प्रति बाज़ारों व्यक्ति करना इन कवियों का जीवन रहा। इनके वनीकर, या उच्च वर्ग में साहित्य दोष-धरति किया। यह उनकी आयती दृष्टि ही बनी जायकी। कारण समाज में अचूक, आज़-नील, सती-बीर बनी होती है। वह के प्रति कहने उच्चतावाद ने फिराका कवि का परंपरा होता है। इसमें से ये पीछे रहे।

2 नाम साहित्य: नी प्रश्न : वाक्यान्त वाक्यरोप : पृष्ठ
इसके विवरणत्त्व हन कवियाँ की दुर्लभता इसके का पदा में भी दिखाई देती है। हन कवियाँ ने कहा विनिमय मन ख़्सु कहानी को जनता लाक पहुँचाने के लिए सबल-तीन वो तथा नाना शैखी को अनुभव। परन्तु यह उनकी का का प्रति उदासीनता की छोटी बाह्यी। कविता के काव्य-शेखर की बीजना ख़सु खंडाना।

से ले तय विवेकी की वास्तवता का काम संजीव का बाह्यी पर जैसे धृतराष्ट्र, विश्वसनीय ख़सु बाह्यी बनाये रखने के लिए का बाहर दिल को भी ग्रहण करा वाह्यी। कारण बाह्य-हिल की बायक सीता के काव्य में प्राणवाण के प्राणवाण विरोध ख़सु निर्देश हर निर्देशी हो बाहरी हो। प्रगतितारी काव्य में सबके प्रति कहीं विवेका वास्तव को नहीं दिखाई देता। हन कथा में तो बोल है कि बाहर बाहर बाहर की हर्ष्या, वाक्य की ख़स्ता हर झुकता हो वह राय बाहर दी जानी है। पूर्व कथा ख़सु हुड़प्पा हो नीति हर विद्या ख़सु बाहर होता है।

पूर्व युग के काव्य में प्रवचन-तुलित्मां भाष्यक ख्याति दिखाई देता है जो युगीन काव्य-संग्रह का ही प्रमाण है। विन्दु के रामेश रामेश को होंडर इन दोनों मायावानों के शिखर में कोई भी प्रगतितारी कवि नहीं है जो जिन्होंने प्रवचन-तुलित्मां का सबन किया हो। सुगर काव्य-संग्रह की बाहर प्रवचन-तुलित्मां कविता का विश्व माल्यपूर्ण उल्लेखित के सम्बन्धित कर बढ़ती थी। काव्यवाद के काव्यमयनी विवेकी खुद भी कृति-संग्रह का प्रगतितारी काव्य में बृहा होता तो अयोध्या स्वस्ता बाहर देश बाहर होता है। प्रवचन तुलित्मां पूर्व युग का प्रती-नित्यत को झटकी ही है, साथ ही युग के प्रवचन-तुलित्मां की स्पष्टता का समाप्त का नहीं दिखाई भी देती है, जिसका काव्य प्रगतितार में बृहा होता है।

प्रगतितारी काव्य के हेतु प्रती-नित्यत उसकी खुद निम्न-मवत्तित कृतियां संग्रह में हव काव्य-संग्रह का बनाकर हो।

प्रगतितारी काव्य अनावंत है। क पृथक के युग में युग में दोहा अंकित बाहर हर विषयों की हरिदा-नरका गया है। पूर्वीपति बाहर ण-प्राण का का प्रति नाच बाजार अंकित किया गया है।
हस्ता दासाधार बादशाह शीतल-शुची चूजालाद है जिसमें वर्त-शिक्षा तथा परंपरा आदि में आवश्यक नहीं है।

यवाक्षाधि की वस्तुधार प्रियतम के बारेमें जुतित भिन्न भिन्न विशेष उपर झ पतावे हैं, जीवन का मय्य पदा अस्पष्ट रह गया है।

बलिका प्रगतिवादी कवि उपन्यास के हैं जिनमें उन्होंने मनूष्य की स्वस्था काम है। बलिकास्थिति वैमानिक तरीका है रह गया है।

इस युग के श्रीराम ने स्पष्ट भाषा-पूर्वात्मक या वाहितिक पूर्वात्मक की विशेष विन्दा न कर सामाजिक पर विशेष बढ़ दिया है।

प्रगतिवादी कवियों की दृष्टि वैज्ञानिक है जिसमें बुद्धि का प्रायायुक्त है। बुद्धि की प्रागायुक्त के बारेमें राहूंके बताए नाता का कायम बनाया है।

इसका तालम्ख यह नहीं है कि प्रगतिवादी कवि ने समाज या वाहितिक के लिए सुख का नहीं। बलिका हम तो यहाँ तक स्फोटर कहते हैं कि दुर्भाग्य और सबक पदा उसी के लिए है जिन्हें किसी दूसरी की प्रागायुक्त बताकर है।

प्रगतिवादी कविता में उसका दुख दुख पदा काम उपर ज्ञात उसके सन्दर्भ की प्रागायुक्त के बारेमें जिनकी ढूंढियाँ नहीं हैं। नन्द लुहार वाजेश्वर की बात का फल विशेष भी है यहाँ गल्लिन्य है:-

बाहित्य के सामाजिक लक्ष्य और उद्देश्य का विमानन करने वाली वह पदवि बाहित्य का बहुत बहुत उपयोगी का कर लगी है। उसने हमारे युवकों को उस दृढ़ भक्तिस्पर्धा की प्रावधान नहीं कर उस का वास्तव परिभाषा है ऐसे है। उसने वह वस्तुतः पुलिलंक है दी है। प्रथम यह कि बाहित्य बाहित्य का समन्व या वायकिक वास्तविकता है और वहीं बाहित्य पूर्वात्मक है जो उसका समा-वृत्तिकोष है, विशेष यह कि जो बाहित्य सामाजिक वास्तविकता है जिन्हें भी होगा, वस्तुता का ताराकार बाहित्य की बात साध्या। इस प्रारंभ बाहित्य सामाजिक रूप से ग्राम-रीति और उस का पुरस्कृतता पहले न हमें दिया है किसी उपचार प्रमोन हम करेंगे।
छही कारों में प्रगतिशील चाहिए सुन्दर का गति है खंडित है। यदि उसका प्रतिकृति बना सकेंगे, तो उसका विवाह मात्र में बाहर पर ही किया जाय। उसकी सीमाएं कमजोर रही हैं और जब उसकी उपलब्धता उसे धृतिदाता हो गई है।

फिर तो हम समझ सकते हैं कि प्रगति हमारे विवाह की, वीर्यादि पर विचार किया है कि उसकी संबंधनार्थ पर विचार कर तैयार होना उपयुक्त है।

संबंधित है:

साहित्य के बानक के बुद्धार्थ हिंदी में प्रगतिशील के पुनःस्वभाव और सुमारों में गाँवक दूसरे पुनःस्वभाव का भुग है। इन युगों का प्राचीन सुन्दर का काव्य अद्वितीय है। जब पुरूष का प्रतीति विकास आया जूता प्राप्त हो गया है। दूसरे हमारा तार्किक विकास ने प्राचीन सुन्दर का प्रतीति विकास का समय की, परिवर्तनों और हरियाली परिवर्तन के विकास का नया समय का जनवरी-परिवर्तन का साहित्य विकास में देखने पर देखिए।

विषय का वाक्य सुन्दर का वाक्य का वाक्य देखने पर प्राप्त होता है। प्रगतिशील के संबंधित वाक्य उन सामाजिक दृष्टिगति को हो चुका है। वह युग का समय के भीतर स्वीकार किया गया है।

प्रगतिशीली दुधर्य ने जिस सामाजिक दृष्टि का सुन्दर किया था, वाच की भाषा के स्वभाव में कार्यान्वयन होता जा रहा है। सामाजिक विषय में उत्पूर्ण ध्यान उसे यह वाच का स्वभाव की विभिन्न वस्तु वाले जा रहे हैं। वह वाच की नई परिवर्तन में साहित्य वीर्य के विपक्ष का समय हो चुका है। परिवर्तन स्वभाव के प्रगतिशील वाक्यों हारा वियोग करने वाले हैं। वह वाक्य शास्त्रीय, गति के बाहर दृष्टि की दृष्टि के वाक्य अनुभूति है। यह है कि प्रगतिशील का स्वभाव का भूमिका करता है। वाक्य की संक्रमणों के निर्राज बार वाक्य के
यहे परिषेद में प्रहस्त वाचारिक रूपांतर हेतु बनाया गया है। कथित रूप से यह भी प्रहस्त है।

/थाहिल्य की शरीर की प्रबुद्धि न तो विरंम स्थानिक को प्राप्त क्षत्रिय है बौद्ध व शुदा सच्चार के लिए मट की जाती है। जो थाहिल्य प्रबुद्धि का वार विशेष पक्ष है वह किसी न किसी रूप में कला जीवन रहती है। प्रयोगालय की प्रबुद्धि ने प्रगतिकार की काश्य वस्तु किया, परन्तु प्रयोगालय की कथिता ने कभी वे चथारिक ता हुआ न हो विभाजक के नहीं कथिता बनी बौद्ध वाज तो कथिता तक पहुँच गई है। काश्य के धार्मिक है स्थान की विभाजित है प्रथाण विषय बन गई है। परन्तु यह तो यथार्थीक की न कह स्थिति है जो प्रगतिकार काश्य की बार्था किया है। वाज में ही किसी वार नाम के थाहिल्य वस्तु न प्रबुद्धि पुषारी कथिता को परन्तु यथार्थीक की विभाजित हन कथिताओं में कला है।

क्षरों के जीवन के प्रति प्रगतिकारी कथिताओं में जो बालाहृ-विभूति वा वह वाज की भी कथिता में दिखाई देता है। वाज का कथित-भी क्षरों को केवल साने के समय में देखा है।

२

उन्हीं से उन्हीं सहार सूद बढ़ी है
बन्ध बसा लगा दीवार बढ़ी है,
देव का ताप की तन है बढ़ा
विभिन्न सूद है दीवार पड़ी है
हर तफ गई बौद्ध बनापता
छठे दिनाप दीवार बढ़ी है,
कोन ठाने, जलाई बस्ती में
हर तफ लीप की कीर्ता बढ़ी है
होग धनापर से चारण्य या
उठ की केवल बहरहाँ बढ़ी है।

१ कविता: रविवार: ७ जनवरी १९५३ पृ ५२ वे उद्धुल
उपशार

हिन्दी और गुजराती की प्रागूतात्त्व कविता के छल्लात्मक व्यवस्थापन के सन्दर्भ में प्रागूतात्त्व कविता का विस्तृत विवेचन किया गया है। हस्सविवेचन के परस्पर प्रागूतात्त्व के सन्दर्भ में क्षेत्रीय विश्वासों पर पहुँच आ रहा है।

प्रागूतात्त्व कविता के समणचं में सब से बड़ा प्रस्त लगा हुआ था कि यह भारतीय की स्थापना के विदेशी कर्मचारी को हटाने की एक बड़ी साझेदारी से पूर्वांग नहीं है। हां, फाइनल्ड के बारे में यह जाना गया है कि माजी के दर्शन की साझेदारी विदेशी प्रागूतात्त्व कविता है।

प्रागूतात्त्व कविता के समणचं में सब से बड़ा प्रस्त लगा हुआ था कि यह भारतीय की स्थापना के विदेशी कर्मचारी को हटाने की एक बड़ी साझेदारी से पूर्वांग नहीं है। हां, फाइनल्ड के बारे में यह जाना गया है कि माजी के दर्शन की साझेदारी विदेशी प्रागूतात्त्व कविता है।

प्रागूतात्त्व कविता के समणचं में सब से बड़ा प्रस्त लगा हुआ था कि यह भारतीय की स्थापना के विदेशी कर्मचारी को हटाने की एक बड़ी साझेदारी से पूर्वांग नहीं है। हां, फाइनल्ड के बारे में यह जाना गया है कि माजी के दर्शन की साझेदारी विदेशी प्रागूतात्त्व कविता है।
हाँ नामकर रणजीत सिंह ने सबसे महत्त्वपूर्ण पर बस देते हुए लिखा है कि प्राचीन भारत को मानने मार्ग नहीं संबंधित करने का जन्म नहीं होता था, क्योंकि उस समय यूरोप में वास्तविकता था, तब तक यूरोप के सम्प्रदाय में कहीं तरह वापस थी।

लेकिन वास्तविकता यह है कि हिंदी में प्राचीन भारत, १६०० के बाद, हस्त रंग में कहा जा रहा है। ये समय पर जब हिंदी भारतीय शास्त्रीय शास्त्रीय शास्त्रीय ज्ञान उसके बुनने लेने के हो गए थे।

हाँ नामकर रणजीत सिंह का यह नया उपाधि है। परंतु समय निर्धारण नहीं लगता होता, क्योंकि सन १६४६ में भारतीय भारतीय भारतीय भारतीय भारतीय भारतीय का नया वाद्यशास्त्र शास्त्रीय शास्त्रीय शास्त्रीय शास्त्रीय शास्त्रीय के उद्देश्य की धोषणा कर दिया गया।

प्राचीन भारत की मूल दृष्टि साधारण भाषा-१६४६ यथार्थ के राग-रोध से सम्बन्ध रही है। उनसे वास्तविकता या कल्पना की सफलता नहीं देना पाए।

साहित्यिक विशेषक यह संस्कृत शास्त्रीय शास्त्रीय शास्त्रीय शास्त्रीय वह से सम्बन्ध रही है। इस कथा का नाम और समय के स्थान पर काव्य नाम वर्ण में एक स्थान अनुभूति करना है। इस कथा के नाम और समय के स्थान पर काव्य की नाना समयों में तत्व बुनकर परिवर्तन। ग्रन्थांक का ग्रन्थ के अन्तर्गत, 'हरिरी किरदार यथार्थ चित्रण में केवल विद्वानों को कहा जाता है, उन्हें जन्म देते वाद के विषयों को भी भाव और स्थान पर प्रतीत होता है। इससे स्थान पर हन कवियों ने ऐसे काव्य को जन्म दिया जो नया जीवन की यथार्थ मूलिका पर प्रतिनिधित्व करते हैं जो हायवन के उद्देश्यकारी काव्य में काव्य के रंग रंग पर उपस्थित बुला। तब तक की गतिमान प्राचीन भारत में यह नया जीवन का जन्म के विविध रूपों में सम्भव रही है।

---

1. हाँ नामकर रणजीत: वाणिज्य बालिका की प्रयत्निकाः २०५-३७3
2. नया हिंदी काव्य: हाँ नामकर रणजीत: ३८४-३८५
हसन के कवियों ने जो कह देते हैं, कहना किया या मोगा उसी को उसी रूप में व्यक्त किया। इस प्रकार हमके चित्रणों में कहीं कहीं ब्रति यथार्थता की प्रस्तुति ने कुछ-चित्रों को उसी रूप में प्रस्तुत किया है किसान राजन पर नगरता का भी राजगुप्त लाखा बांटा है। परन्तु हमकी संरचना-वैच की तुषित शी बना थी। उस नगरता में ही हमने उसकी वास्तविक यथार्थतावादी संरचना का ही दर्शन किया है।

"सामाजिक जीवन का यथार्थ-बोध बौद्र उसके प्रति सर्वजनस्तत्त्व बाल्वियाता किसी भी कृति के लिए ब्रति वास्तविक है। बिना इस बाल्वियातवाद के काव्य जीवन के व्यापक परिवर्त को बाल्वियात नहीं कर सकता बौद्र उसकी रचना एकांग होगी।" हां वास्तव में हम कवियों ने इस वास्तविक बौद्र सामाजिक सत्य को स्वीकार किया है। नार्तों, गानों एवं प्रौढ़ ब्रति आदि के चित्रणों में हसी सत्य की अभिव्यक्ति छाँ है। जहां पर इस सत्य बोध को स्वीकार किया है वहीं पर हमके काव्य में नगीन संरचना की स्थापना हो पायी है। परन्तु अब हे कृति कपिलनिक के प्रति में पढ़ गए हैं वहां पर हमकी कविता मूल्य शीन हो गई है।

इस कविता की दूसरी विश्लेषणा यह है कि हम कवियों ने ही परस्तवा की बेविकायों को तोड़ फँकने का प्रबुद्ध स्वर सुनारित किया। इनके पूछ भी परस्तवा से मुक्ति की बाल्वाता वास्तव उठाई गई थी परन्तु उसमें वह जोश बौद्र परस्तवा की न्याय नहीं थी को प्रागितिक काव्य में थी। प्रागितिक कवियों में प्रथम राष्ट्रीय-भावना के दलित होते हैं। हमके लिए का का में राष्ट्रीय प्रेम भरा हुआ था जो कविता के प्रारम्भ से उद्धृत हुआ है। परन्तु हमकीविकायों तो यह है कि हमकी टूटोता राष्ट्रीयता की शक्तिपूर्व सीमा तक ही सीमित नहीं रह गई, बल्कि उसका विस्तार व्यक्तिराष्ट्रीय स्तर तक हुआ है। राष्ट्रीयता के साथ साथ हमने व्यक्ति-राष्ट्रीयता का भी माल मरा हुआ था। व्यक्तिराष्ट्रीय चेतना की व्यापक माल बुधि से ये बलमाणित रहे है।

\[\text{शायावादोपर हिंदी कविता: डॉ} \text{रामकान्त सर्वार, पृ. 845-858}\]
प्रश्निकारी काय्य अपने जन्मकाल से ही व्यापक मानवता की माता से बदन-प्राणित रहा है। ये सच्चे व्ययों मुनुख बोर मानवता के पुजारी रहे हैं। इनका मानवतावादी राग-ब्रोच कहीं भी दुखित नहीं दिखाई देता। इस मानवतावाद की प्रकृति ने ही शोषित जनता के पाति शक्ति बोर सहायुति तथा शोषणों के प्रति दुष्का बोर बाहों के मार व्यक्ति किये हैं। सामाजिक बोर पूर्वीधर्मों की हंगश्चे बोर पत्रिका की है। इनका मानना है कि ये ही समाज के है दुष्का है जिन्हें कारण सामाजिक मानवता की माता संभित को डूबी है। सामाजिक वर्ग-विषयवाद, गर्विक, आदि के ये ही लक्ष्य है। होताने स्वर्गश्व मूर्तिवाद का स्वाभाव दर्शन बाहर है।

सामाजिक जनता जो शोषणों के चक्की में पिस रही है उसका कारण बटकार की हद से ही थी। बहु शोषणों को पिटाकर सबरहरा वर्ग के धार्मिक जनता के राज्य की कल्पना हन कवियों ने की है। मार्क्सवाद से प्रभावित हन कवियों ने वर्ग विरोधी समाज की स्थापना पर बल दिया है।

हन कवियों की सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि हंगश्चे कहीं भी क्षेत्रिय को अपने काय्य में नहीं बलात्कार है। हंगश्चे सामाजिक जीवन के महत्व को स्पष्टकर शिष्या। इनकी दृष्टि में बच्च विद्या उपरोक्तवाद या व्यावसायिक का नहीं, बल्कि उस अर्थक विद्युत बोर विपणन का हे बोर रण परिपक्व कर पूरे समाज के लिए वस्तुओं का निर्माण करता है। वही केल्स है, वही मधुर है जो सबूत है बोर वह है अभिष्क वर्ग।

परन्तु उसका वह-वह शोषण होता रहा है किसी भी प्रश्निकारी कवियों में सोचने के विचार मर्यादा बोर बाहों है वर्गों शोषणों के प्रति वहां चलते बोर बाहों है वर्गों के प्रति वहां बाहों का निर्माण है।

यह स्वतंत्र व्यक्ति ही तीव्र है। इन अभिव्यक्ति की शक्ति को हंगश्चे पहलाना है बोर उसके निर्माण की काय्य में प्रतिस्थापित किया है। व्यापक ज्ञान की विद्युत, स्वयं उसके परिपक्व को हंगश्चे विविधता महत्व प्रदान किया है। मुनुख की शक्ति की स्वतंत्रता जो जीवन बोर समाज के निर्माण में एक नये विविध को जन्म दिया है।

हन कवियों ने "सहूल के साधारण मुनुख को बर्मा केन्द्र मानकर उसी की बाहर-बाहर बाहरताओं को निर्माण किया है। जब साधारण के महत्व बोर प्रतिस्थापन की दृष्टि से बुध-बीजो द के दली की गतिविधियों के बाहर इसे वर्तमान मुनुक के काहें की
बन्याविक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ कहा बा सकता है।

यह यूक के दोनों की माणाबों के कवियों की एक दृष्टी के विशेषता वह रही है कि हन्वौज बि.वा. बोर स्वाल की त्वांडें बीह को स्वीकार नहीं किया है। वह महामाहों में जो जीवन बा गृहारों स्वतंत्र करे। हन्वौज बि.वा. बोर स्वाल को शोषणकों के हस्तहेतु के रूप में स्वीकार किया है। बि.वा. बोर स्वाल बा मान्यवाद का पाठवन्सर पृथिविओं ने सवेर सामान्य जनता का शोषण किया है। हालांकि हन्वौज बि.वा. बोर स्वाल किया है। मंदिर में पाखर का जब पत्थर की दूरी पर दूसर ढळने बारे हैं, धरी की सुरध्यवन वन्दा में विन्दु से सफ़र की उसी वर्णका बारे बारे हैं, परन्तु उसी मंदिर के बारे पर बिलसे हूँ जीवन मान्य को उपेक्षा के बारे हुँकर किया जाता है। यह हान कवियों के लिए विषय हो उठा है। हालांकि हन्वौज बि.वा. बोर स्वाल किया है। वेपुं बहुआ का विश्वास का पाठवन्सर में बैठा जबुआ पुरांत नहीं बालक बालक है जिन्हें अपने परिश्रम से बढ़ते समयों की स्वतंत्र की है। यह सम के कवियों में ऐसे ही श्रमकर्मों, सज्जूरों, खिसानों एवं उपेक्षाओं के जरूरत गढ़ी सहामुद्रता करी है।

नारी, ग्रह बोर प्रेम के प्रसंग की हर बार कवियों की दृष्टि स्वतंत्र रही है। हालका ग्रह न तो रितिकालीन कीर्ता दैकिक ग्रह बा बोर न इमालाय रख्य गिमायत। हालका ग्रह जीवन-सृजन की भव्य हतासा रहेगी राणा, निष्क्रिय ग्रह के रूपमें नक्से का माय है जो उसकी उपर्युक्ति ही रख्य मानित नहीं है। हालका प्रेम की सामाजिक परिस्थि त से संबंधित यस्तासी बालक बालक प्रेम के जो नष्ट जीवन की प्रेमस्रोत है। हालका नारी का भी एक स्वतंत्र रूप है। ग्रह, पुराता बोर नारी के प्रसंग प्रमाणित कवियों की विचार-भावा का वामाद देते हूँ इस स्वामात्र समय ने लिखा है। प्रमाणित कवि दैकिक-सम्बन्ध-कोण में संबंधित-नक्से के कार्य ने प्रेम के गुरुत्वात स्वरुप को पार्वतीय कवि जीवन-संपर्क की सहाकी है। यह पुराता या मोहना नहीं है। पार्वतीय सामाजिक

2 नम शहीदः साहित्य : हाउ शिक्षकार सिद्ध फ़ुर अद्भुत
बीवन की उम्मा को र्की प्राणियाँ ने चिट्ठि दिया तथा इस प्रकार फ्रेम का परम्परागत कालांक लोक जिसकी मूत्ती बेदना, निराशा, अस्थि कुंज से काव्य बस्तर बना हुआ था, उससे हिंदी काव्य पुकार हुआ। प्रकृति के दोष में विंधे हुए धीरें बीवन उत्साह को प्राणियाँ किया ने देखा। जाने-पहचाने प्रकृति चित्रों में एक नहीं ताज्जिन बायी।

नारी, जो पुरुष का सामाजिक स्तर पारिवारिक व्यवस्था की विशेषता में रही, वो युग परिवर्तन के साथ आपने चारित्रिक मूल्यों को विश्वसन कर दुकी है। पुरुष की विशेषता नुक हट कर जिसका स्वर्ण कर रही थी वोर साहित्यकार भी नारी-बीवन द्वारा उसकी गतिमा से परमाणु हो यो सदे थे। नारी जो हदो में सिंचेन्ट का काम करती है उसे सामाजिक,पारिवारिक स्तर पर कोई स्थान सुन्न न था। समूही स्तर जानि ज्ञानियों, मजबुरों वोर रियातों की मांहि शोषित थी। विभिन्न विशेष नारी की दुर्लभता का बाजारम ठाम उठाकर उपयोक्ता वर्ग उसे मार्ग मंग-विलास की बस्तु समान कढ़ा था। जिसके विरोध में इनप्राणियाँ कियों ने बननी तीड़ बेदना को पूक दिया है, साथ ही नारी को समाजव्यवस्था एवं पारिवारिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते का प्रयत्न किया है। जननी वोर प्रायः इन तीनों की नारी स्वस्व को इन कियों ने खुर कर के उसकी पुकार का उद्धोषण किया है।

मुक्त करो नारी को मानत, चिर वंदनी नारी को,
युग युग की बदर कारा से, जननी स्त्री को प्यारी को।(पत्न वै)

नारी का रेतक रूप उपासना जोशी की पंक्षों में देखीये:

प्रकृति नी फुली फ्रेम, माता ने मानवता नी,
केवल नी दुर्लभता ने वन्धुर नी,
हरिय समुप्रातिनि कपड़ों बेक ने बनना,
प्रेमा पोखर तनी मिला गारियों (कालिया: ३०)

१ बायाबादवर इन्द्रि हरिता: डाय-रमाकान्त शर्मा: पु. ४२७
नारी प्रकृति की भूमि है, मानवता की माटा है, लेकिन की छायाँ बौर
वस्था की दुखिता है। वह पूर्व्वुर्व की प्रढण, शहरी बौर पंजाबारित्ति है। भरे
वह क्या क्या नहीं है? सम्मत: नारी का इसके सुन्दर निरंतर बौर बादशह रूप
कोई दुखना नहीं हो सकता।

क्षत्र के प्रति मी इन कवियों की कपनी स्वस्थ दुनिसर रही है। क्षत्र, क्षत्र के
लिए की बुद्धिमत्ता को प्रतिपादित कर इन कवियों ने ही संवेदक यह उद्देश्यणात
की कि क्षत्र, जीवन के लिए है। हानि होने क्षत्र का पूर्व्वकाल जीवन के परिसरें में हो।
यथार्थ जीवन बौर भाग से पारस्पर साहित्य के महत्त्व को इन कवियों ने नाण्य समक्ष।
क्षत्र का सार्वजनिक भी होने की विभिन्निक चिंता में ही समस्या। यही कारण है कि
इनकी क्षत्र समस्ती वारणा शेष उपयोगिता वाती रही है।

इन कवियों ने मुझे जीवन के यथार्थ रूप को बनने काव्यों में स्वीकृति प्रदान
की है जिसके फलस्वरूप हासन के काव्यों में स्वीकृति भाग है। राष्ट्रीयता बौर सामान-
जित्ता का दाता मार्गार विज्ञान के रूप में नहीं, जीवन-परिसर की विभिन्नता के
रूप में स्वीकार ही गया है।

शिल्प के दृष्टि से पी हानका विश्वास महत्व रहा है। हानि होने रूप-विधान की
बाधना विश्वास-सत्ता पर अधिक बढ़ दिया है। जिसके कारण यह-तत प्रवारात्मकता
का धर प्रकाश होता विशाल देखा है। ऐसे रचना पर काव्य का विभिन्न रूप ही स्पष्ट
हो उठा है। अतः इन कवियों की विश्वास के कवितार्थ कलास्मकता की दुनिया से ही
बनना विश्वास महत्व सत्ता है कि में फारमा में मानने प्रवारात्मकता बाह्य हो इलाको
बाद में इन कवियों ने भी बनने काव्य को संबंधित में काफी तपस्वता दिखाई है। बौर
हाय विश्वास प्रतिचिप्त विश्वास है। हानि होने यथार्थ जीवन से ही ग्राही किया है।

हानिवर जीवन के प्रति भी हानि महत्वपूर्ण तरीका है। इस्लामाद बौर पंजाबी की
संस्कृति तरीका दर्शनी को ब्रह्मक हानि सत्ता, स्वीकृति मान्य का दृष्टि किया है।
इसका कारण यह है कि हानि का नाना बाह्य तक पहुँचना चाहिए थे। बौर महत्व
बौर महत्व प्राप्त दिनों दृष्टों का देखने हानि का शोक है।

••••
हनीं कविता उपलक्षियों को देख कर बाचार खबर फ़साद भिड़ीयों ने प्रगति-वादी कविता के महान उद्देश्य को स्वीकार करते हुए दिखा है। वे प्रगतिशील वादनों को बहुत महान उद्देश्य से चाहिए हैं। इसमें सांस्कृतिक भाव का प्रथम नहीं हुआ था लेकिन इसकी संभावनाएँ बेहद हैं। मान्यता वादनों के समय जिस प्रकार एक व्यक्ति दूःशास्त्र-निष्ठा दिखाई पड़ी हो, जो समाज को नये जीवन दर्शन से चाहिए करने का संकल्प वहन करते हुए कारण व्यक्तिरुप शक्ति के रूप में प्रकट हुई थी, उसी प्रकार वह वादनोंदेह को सक्त हो सकता है।

ढांग केशरी नारायण शुभ्र ने भी प्रगति-वाद के महत्व को स्वीकार करते हुए दिखा है --- उसका उद्देश्य जीवन के बालीक पदा का व्यभिचार है। जीवन के व्यभिचार, सामाजिक पदा पर विशेष रूप से विशेष दिखाई यह समस्त मानक के व्यभिचारिक पदा का उत्सर्जन विकास करना चाहिए है। प्रगति-वाद का हस्तिंथा महत्व है कि उसमें वास्तव में विकास के प्रवाह तत्त्व दिखे हैं।

हिंदी ब्राह्मण दोनों के माननात्मक कविताओं के काम पूर्व विन्दु, मन में विख्यात वादिक कवि की दृष्टि से बहुत विभिन्न समता है। दोनों श्रेणी के माननात्मक कविता में यह साहित्य-कला बनी मरी नहीं है।

भारत की प्रगतिशील माननात्मक दोनों को हिंदी से सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है। १७ की दिशा के कवि हिंदी ब्राह्मण दोनों भी हैं जो मृत्यु हिंदुत्व की संपत्ति रहे हैं। वे ही हिंदी के हैं।

हिंदी ब्राह्मण दोनों की प्रगति-वादी कविता का एक निकट सम्बन्ध तो नहीं दिखाई देता लेकिन एक दृश्य वहाँ दृश्य की बादान-प्रवाह की प्रश्न को नकारा भी नहीं जा सकता।

1 हिंदी साहित्य: बाचार खबर फ़साद भिड़ीयों: पृ ४००-४१०
2 बाबु के कादम का सांस्कृतिक ग्रूतिया: पृ १४२-१४५
3 पुराणिक अवतार एक कविता नहीं बादान (६० उद्यानसंगीत) सितारा १६६६
हिंदी ब्राह्मण दोनों की प्रगति-वादी कविता का वादा प्रवाह नामक लेख: पृ ४
दोनों की मान्यताओं की यह साहित्यिक काव्यवाद बाबू गंगावाद से प्रभुत मार्ग में प्रभावित है। जब दोनों में विद्वान विद्वान
वस्तुविद्यामध्ये भाषा मूलि में समानता होती स्वाभाविक है।

हिंदी की मार्गी गुरुराती में "प्रागतिशाह" नाम को नहीं भिड़ता है परन्तु प्रागतिशाह शब्द का प्रयोग कर गुरुराती के गंधर्वकुमार के कवि ने हरी माता को प्रस्तुत किया है। दोनों की मान्यता के कवि ने इस्लाम की सुंदरता को स्वीकार करते हुए खो-माणा वाद-जन-विचार की व्याख्या को बनाया है।

इन दोनों मान्यताओं की समता-विचारता के विवेचन के पश्चात हलता व्यक्ति बहा बा सकता है कि उस्मा माणासे एक दूसरे के सान्निक कास्थ है। इनकी धार्मिकता के विषय में यह कहना उचित है कि:

भारत की भगवती मान्यताओं में हिंदी और गुरुराती का परस्परिक सम्बन्ध बहुत उचित है और इन दोनों कारणी बही हिंदी-संस्कृत विद्वान की विकासित होती है इससे एक दूसरे की संपत्ति पर बढ़ते बदलार का दाबा कर सकती है।

बहुत हिंदी की प्रागतिशाही बाबू गंगावाद की प्रागतिशाह (गंगावादी) रक्षकों में पारस्परिक विचारता न होतो है वेदांतक संस्कृति की निकटता है।

विद्वानों, प्रागतिशाही गहराई उपशुद्धियों तथा मानवतावादी माणासे बाबू गंगावादी बंदर के संस्कृति से एक अत्यधिक एकता का दर्शन होता है।

**पुस्तिका**

1. पुरुषोत्तम इटार (सितम्बर १९६४)
2. हिंदी बाबू गुरुराती साहित्य का बादान ग्राम (७)